RNI-MPHIN/2005/14721
Po-Malwa Div/244/2020-22
Desp. 02 October, 2022

अंक – 4 (मासिक) वर्ष – 18 अक्टूबर, 2022 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते

अनुभव के वटवृक्ष

मनमोहन राठी · माणकचन्द्र होलानी · डॉ. एच.एल. माहेश्वरी

रमाकान्त बाल्दी · अशोक सोमानी · विट्ठल भूतड़ा · विजयकुमार माहेश्वरी · वैद्यराज रमेश कुमार माहेश्वरी

वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2022
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us @
srimaheshwaritimes.com

बात हम सबकी
सुने हर शनिवार

Contemporary Range of Home Essentials, Crafted by Experts

FANS | LIGHTING
APPLIANCES | SWITCHES

Toll Free : 18001032676 | Email : customercare@rrglobal.com | Website: www.rrglobal.com | Follow us

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

▸▸ अंक-04 ▸▸ अक्टूबर 2022 ▸▸ वर्ष-18

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
रामावतार आगीवाल, उज्जैन

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
रामगोपाल मूंदड़ा (सूरत)
प्रो. कल्पना गगडानी (मुम्बई)
गोविन्द मालू (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 900/- for Three years
Rs. 3500/- for Life Time (12 Years)

हजारों हजार दीये जलाएँ
अपनी व अपने परिवार की
समृद्धि के लिए
एक दीया जरूर जलाएँ
इस महान देश एवं समाज की एकता,
अखण्डता और संस्कृति के लिए .

दीपपर्व पर
हार्दिक मंगलकामनाएं

श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

विचार क्रान्ति

लक्ष्मी न अकेले आती है, न जाती है

पौराणिक कथाएँ प्रमाण हैं कि देवता और दानव एक ही पिता महर्षि कश्यप की सन्तानें हैं। कश्यप की पत्नी अदिति से आदित्य अर्थात् देवताओं का जन्म हुआ और दूसरी पत्नी दिति से दानवों का। शेष अन्य पत्नियों से मनुष्यों सहित नाना सृष्टि हुई। इस प्रकार सृष्टि के विस्तार की कथा है।

महाभारत के शांतिपर्व की एक कथा बताती है कि धन व सम्पन्नता की देवी लक्ष्मी सृष्टिकाल के प्रारम्भ से अनेक युगों तक दानवों के पास निवास करती थी लेकिन समय के साथ दानवों के गुणों में आई विपरीतता से खिन्न होकर उन्होंने उनका साथ छोड़ दिया और देवताओं के पास आ गई।

गङ्गातट पर जब देवी का दिव्य विमान उतरा, उस समय देवराज इंद्र देवर्षि नारद के साथ शास्त्र चर्चारत थे। अचानक देवी लक्ष्मी को देख इन्द्र आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता से भर गए। इंद्र ने अपने पास कृपापूर्वक पधारी लक्ष्मी का अभिनन्दन तो किया किन्तु जिज्ञासावश दानवों के त्याग का कारण भी पूछ लिया। तब देवी ने जो कारण बताए, उनमें ही लक्ष्मी के होने का मर्म निहित है।

देवी ने कहा- पहले दानवों में धर्म था। वे सत्यवादी और तपस्वी थे। वे हिंसा नही करते थे और सब कार्यों में परस्पर अनुकूल रहते हुए गुरुजनों व बड़े-बूढों की सेवा करते थे। इस कारण उनमें निद्रा, तन्द्रा, अप्रसन्नता, दोषदृष्टि, अविवेक, अप्रीति, विषाद और कामना जैसे दोष नहीं थे। लेकिन धीरे-धीरे वे धर्मांतरण से विरत हुए और काम व क्रोध के वशीभूत हो गए। वे अहंकार में भरकर बड़ों का उपहार व अवज्ञा करने लगे। पुत्रों ने पिताओं पर और स्त्रियों ने पतियों पर अत्याचार प्रारंभ कर दिया। वे लोभ में आसक्त हो धनोपार्जन की होड़ में जुट गए। वे सूर्योदय तक सोने लगे और प्रातःकाल को भी रात समझने लगे। न भोजन में स्वाद रहा और न ही शुचिता। अब उनके घरों में दिन-रात कलह मचा रहता है। अतः मैंने उनका परित्याग कर दिया है।

देवी लक्ष्मी ने कहा, 'आशा श्रद्धा धृतिः शान्तिर्विजितिः संनतिः क्षमा।। अष्टमी वृत्तिरेतासां पुरोगा पाकशासन।' अर्थात् हे देवराज! (मेरे साथ आठ अन्य देवियों ने भी दानवों को छोड़ दिया है। मैं जहाँ रहूंगी, अब ये देवियाँ भी वहीं रहेंगी।) इनके नाम आशा, श्रद्धा, धृति, शान्ति, विजिति, संनति, क्षमा और जया हैं और इस प्रकार आठ देवियों के साथ देवी लक्ष्मी स्थाई रूप से देवताओं के पास बस गई।

साधो! सार यह है कि हम जब तक धर्म का आश्रय लेकर कर्म करते हैं तब तक लक्ष्मी हम पर कृपा रखती है। जिस दिन हम धर्म के प्रतिकूल हो जाते हैं, लक्ष्मी त्याग देती हैं। लक्ष्मी अकेले न तो आती हैं, न ही जाती हैं। वे आती हैं तो आशा, श्रद्धा, शान्ति और सफलता अर्थात् जया को साथ लाती है और जाती है तो अपने साथ शेष सबको ले जाती है।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

अनुभव की रोशनी

कोरोना संक्रमण के दो साल बाद इस बार दीपावली की रौनक कुछ अलग रहने वाली है। हम सबने इस दिवाली को नए अंदाज में मनाना तय किया है। रोशनी के इस पर्व पर हम दो साल की कसर भी निकाल लेना चाहते हैं। बाजारों को उम्मीद है कि इस बार अच्छी ग्राहकी होगी। बच्चे खुल कर पटाखे छोड़ने की तैयारी में हैं। गृहणियाँ घर आँगन को सजाने-सँवारने की जुगत में जुटी हैं। शहर-कस्बों से लेकर गाँवों तक त्योहारी उल्लास झलक रहा है। नवरात्रि से ही इसकी शुरुआत हो गई है। इस उमंग के पीछे दो साल के कोरोना काल की निराशा और हतोत्साह से निजात पाने की ललक कहीं छिपी है। देशभर में छाए उस करुण-कृंदन को भुला देना चाहते हैं, जो हमारे कानों में अब भी पॉजिटिव केस बढ़ने की खबरों के साथ गूंजने लगता है। अस्पतालों की मनहूसियत और अमानवीयता का व्यवहार कई जिंदगियों के लिए न भूलने वाला काला काल रहा है। नए उत्साह के साथ आगे बढ़ने के लिए उन कड़वी यादों से निकल कर जिंदगी को गतिमान करने की जरूरत है। इन दो सालों ने हमें बहुत कुछ सिखाया और समझाया है। सबसे बड़ी बात हमारे बुजूर्गों की देखभाल और सुरक्षा। कोरोना काल में सबसे ज्यादा हमने कुछ खोया है तो इसी विरासत को। किसी ने क्या खूब कहा है- ''घर में एक बुजूर्ग जैसे रोशनदान है...।'' निश्चित ही बुजूर्ग हमारे घर में अनुभव की रोशनी हैं। जब कभी हम अपने आपको दिशाहीन पाते हैं, तब यह बुजूर्ग हमारे लिए रास्ते के ज्योतिस्तंभ बन कर सामने आते हैं। उनकी सरपरस्ती हमें दिलासा और भरोसा देती है। कवि ने कहा है- ''पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं...।''

यह अंक हम अपने बुजूर्गों को समर्पित कर रहे हैं, रोशनी के पर्व के साथ। यह संयोग ही है कि दीपावली के मौके पर यह अंक तैयार हो गया। अंक तैयार करते मन में यही विचार था कि हमारे बुजूर्गों के अनुभव की रोशनी को इस दीपावली पर हम महसूस करें। उनके जीवन के पाठ के सबक हमारे लिए मार्गदर्शक बन सकें। अंक में ऐसे ही बुजूर्गों की कहानियाँ, जीवन वृत्तांत और अनुभव के किस्से आपके लिए समाहित किए गए हैं। इसमें आयुर्वेद को शिखर का सम्मान दिलाने में अग्रसर वैद्यराज रमेशचंद्र माहेश्वरी, आमजन के जननायक बने भीलवाड़ा सांसद सुभाषचंद्र बहेड़िया, प्रेरक लेखक डॉ. एच.एल. माहेश्वरी, सतत गोवर्धन परिक्रमा करते मनमोहन राठी, समाज सेवा में अपना अप्रतीम योगदान देते माणकचंद सोमानी, अशोक सोमानी, विठ्ठल भूतड़ा आदि महानुभावों के प्रेरक योगदानों को समाहित किया गया है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ और व्यस्तता में हम अपनी इन धरोहरों की सुरक्षा के प्रति भी सजग रहें। यह दीपावली हम दोस्तों, रिश्तेदारों के साथ मनाएं, तो उन्हें आगे रखें ताकि वे अकेलापन महसूस नहीं करें। उन्हें भरोसा हो कि उन्होंने जो पौध तैयार की है, वह उनके आदर्शों और सिद्धांतों को आगे बढ़ाएगी। हमारी सरकार भी इन बुजूर्गों के प्रति अब ज्यादा सचेत हैं। उनके लिए कई सारी योजनाएं और सुविधाएं उपलब्ध हैं। उनका फायदा जरूरतमंद बुजूर्गों तक पहुँचाने का काम सामाजिक संगठन के स्तर पर हो सकता है। इस दिशा में अ.भा. माहेश्वरी महासभा, युवा संगठन व महिला संगठन अपनी भूमिका तय कर सकते हैं। हर शहर, कस्बे और गांव के स्तर पर प्रशासन द्वारा भी सर्वे के माध्यम से बुजूर्गों की जानकारी जुटाई जा रही है, ताकि उन तक सरकार की मदद पहुँचाई जा सके।

दीपावली के मौके पर व्यापार का नया बहिखाता शुरू करने के साथ एक सामाजिक सरोकार का खाता भी हम शुरू करें। अपनी सामर्थ्य के अनुसार अपने आस-पास, नगर, कस्बा स्तर पर पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता जैसे कामों में सहयोग का एक दीया जलाएं। आपकी एक पहल समाज को आलोकित कर सकती है। इस अंक में हमेशा की तरह रोचक और ज्ञानवर्द्धक आलेख, मर्मस्पर्शी कहानी-कविताएं और उपयोगी विशेष पठनीय सामग्री का समावेश करने की कोशिश की है। अंक के बारे में अपनी प्रतिक्रिया भेजना न भूलें।

पुष्कर बाहेती

सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

समाज के सक्रिय वरिष्ठ समाजसेवी के रूप में पहचान रखने वाले उज्जैन निवासी श्री रामावतार आगीवाल का जन्म सींगोद (जयपुर) के संभ्रांत परिवार में हुआ था। आपने बॉम्बे युनिवर्सिटी से बी. कॉम. किया। तत्पश्चात एफआईसीडब्ल्यूए की उपाधि प्राप्त कर बांगड़ ग्रुप की मुम्बई स्थित श्री निवास कॉटन मिल से कॅरियर की शुरुआत की। इसके पश्चात् बिड़ला ग्रुप की पुणे में स्थित सेन्चुरी एन्का में फायनेंस विभाग में कॉस्टिंग का काम संभाला। तत्पश्चात् उज्जैन में बांगड़जी की श्री सिंथेटिक्स में प्रोजेक्ट के प्रारम्भ से लेकर वर्ष 1997 तक सेवारत रहकर विभिन्न विभागों में उच्च पदों पर कार्य किया। वर्ष 1997 में आपने अपना टेक्सटाईल एक्सपोर्ट व्यवसाय प्रारम्भ किया। इसके माध्यम से आपने व्यावसायिक संबंधों के लिये कई देशों की यात्रा की। आप कई अच्छी अन्तर्राष्ट्रीय कंपनियों से जुड़ें होकर आज भी कार्यरत हैं। श्री आगीवाल ने अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण किसी सामाजिक पद को स्वीकार न करते हुए भी जो सम्भव हुआ अपने सामाजिक दायित्वों को निभाने का पूर्ण प्रयास किया।

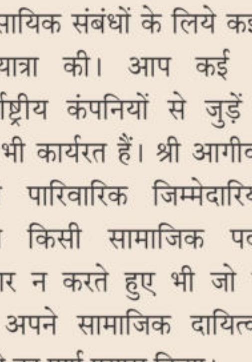

परिपक्वावस्था ही वरिष्ठावस्था

''उम्र तो एक संख्या है, जिन्दादिल रहिये व जिन्दगी के सफर का आनंद लीजिये''

वरिष्ठावस्था वास्तव में मानव जीवन की वह सबसे परिपक्वावस्था होती है, जिसमें उनका सम्पूर्ण जीवन अमूल्य हो जाता है। इस अवस्था में चाहे शारीरिक सामर्थ्य कम हो जाती है, लेकिन अनुभवों का वह संग्रह तैयार हो जाता है, जिसे प्राप्त करने में हमारा अपना पूरा जीवन लगता है। यही कारण है कि यह अवस्था हमेशा सम्माननीय रही है। हमारे धर्मशास्त्रों ने इन्हीं सब कारणों से वृद्धों को सदा अभिवादनीय कहा है और सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति का माध्यम इनके आशीर्वाद को कहा है।

वृद्धावस्था में कार्यशक्ति अवश्य कम हो जाती है, जिस तरह बाल्यावस्था में योग्यता कम होती है। किंतु वृद्धावस्था में मानसिक परिपक्वता अधिक होती है जिससे उनके अनुभव का फायदा आगे की पीढ़िया उठाती है। लोग बुढ़ापे को परिवार से उपेक्षा मिलने के कारण अभिशाप समझते हैं व निराश होने लगते हैं। बढ़ती उम्र के साथ लोगों को उत्साह कायम रखकर आशापूर्ण बनना चाहिए। अपने ज्ञान, अनुभव व योग्यता को परिवार व समाज में बांटे। प्रकृति का नियम है, संसार चक्र का चलना, बाल्यावस्था, यौवन, प्रोढ़ावस्थाा व वृद्धावस्था तो सबके साथ है। जीवन के साथ मृत्यु निश्चित है। अतः जीवन की हर अवस्था को उत्साह व उमंग के साथ जीना चाहिये।

''किसी की मुस्कुराहटों पर हो फिदा, किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार''

सबके वास्ते हो अपने दिल में प्यार, जीना इसी का नाम है।

आज आवश्यकता है, हम नयी पीढ़ी को वरिष्ठों का महत्व समझाऐं और इनके प्रति सम्मान के भाव उत्पन्न करें। यह पहल आज की युवा पीढ़ी को स्वयं करना होगी। इससे न सिर्फ उनके अनुभवों से युवाओं का वर्तमान सुधरेगा अपितु भविष्य भी सुरक्षित व सुखद होगा। जब आपके बच्चे आपके द्वारा आपके वरिष्ठजनों का सम्मान करते देखेंगे, तो उनमें भी आपके प्रति वैसे ही सम्मान के भाव उत्पन्न होंगे।

वरिष्ठजन भी समयानुकूल अपने आप में परिवर्तन करें। एक तो अपने आपको समयानुसार हमेशा अपडेट रखने की कोशिश करें। इसके लिए छोटी-मोटी नयी टेक्नोलॉजी सीखने में कभी परहेज न करें। याद रखें आपके पास नयी पीढ़ी के अनुसार अनुभव होगा तभी तो वह अनुभव उनके काम आऐगा। इसके साथ सदैव यह कोशिश करें कि स्वस्थ रहें जिससे किसी पर बोझ ना बनना पड़े। याद रखें पहला सुख निरोगी काया। इसके लिये दिनचर्या नियमित होना चाहिये। कसरत, प्राणायाम, घूमना, हंसी मजाक व शौक रखिए। अध्ययन, पठन-पाठन, सामाजिक सेवा, पर्यटन, पुराने मित्रों से समय-समय पर वार्ता करें, मिलते रहें, पार्टी करें।

''जइफ़ी जिन्दगी की बेजां रवानी है, यदि जिन्दा दिली है तो बुढ़ापा भी जवानी है।''

जइफ़ी = बुढ़ापा   बेजां = नीरस   रवानी = अवस्था

रामावतार आगीवाल
अतिथि सम्पादक

माँ आमज/आमल माताजी

श्री आमज माताजी माहेश्वरी जाति की काकाणी खाँप की कुल देवी हैं।

■ टीम SMT

राजस्थान चार भुजाजी से केलवाड़ा-उदयपुर मार्ग पर 7 कि.मी. ग्राम 'रीछेड़' एवं 'रीछेड़' से 3 कि.मी. की दूरी पर बायीं ओर एक पहाड़ी पर स्थित है 'आमज माताजी' का मंदिर। मंदिर पर पहुँचने हेतु लगभग 300 सीढ़ियाँ चढ़ना पड़ती है। सबसे पहले 'गणेश जी' का मंदिर आता है, इसके पश्चात् 'आमज माताजी' का छोटा मंदिर एवं यहाँ से लगभग 15-20 फीट ऊपर 'आमज माताजी' का बड़ा मंदिर स्थित। छोटे मंदिर के पास हो एक मनोरम झरना एवं छोटा कुंड है जहाँ 12 महीने स्वच्छ पीने योग्य ठंडा जल उपलब्ध रहता है। दोनों ही मंदिर सुंदर हैं एवं विशेष रूप से बड़ा मंदिर अत्यंत ही सुंदर है। माताजी की मूर्ति अत्यंत मनोरम एवं आकर्षक है।

विशेष आयोजन

ज्येष्ठ माह के शुक्लपक्ष की 9 (नवमी) के दिन दोपहर बाद मंदिर पर ध्वजा चढ़ती है एवं मेला लगता है जिसका समापन ध्वजारोहण के पश्चात् होता है। इसी प्रकार भादव माह के शुक्लपक्ष को 9 (नवमी) के दिन 'माताजी' की मीठी पूजा होती है एवं 'खीर' का भोग लगता है। पूरे रीछेड़ गाँव का इस दिन उत्पादित होने वाला दूध माताजी के मंदिर को जाता है एवं सिर्फ खीर का भण्डारा होता है।

माताजी की उत्पत्ति

ऐसा माना जाता है कि माताजी का यहाँ आगमन ग्राम ऊनवाँ से हुआ एवं वे पहाड़ी पर स्थित बाँस के पौधे से प्रगट हुई थी।

प्रतिदिन दोनों समय सुबह व संध्या को माताजी की आरती पुजारी खेमराज पण्डित द्वारा सम्पन्न की जाती है। नवरात्रि में विशेष रूप से हवन होता है।

'आमज माताजी' की आस पास के क्षेत्र एवं दूरस्थ क्षेत्र में बहुत ख्याति एवं प्रसिद्धि है। मान्यता है कि माताजी के दरबार में सच्चे मन से रखी गयी प्रार्थना स्वीकार होती है। इसी वजह से क्षेत्र के सभी जाति के लोगों में माताजी की प्रसिद्धि है।

कैसे पहुँचें

नाथद्वारा से 60 कि.मी. की दूरी पर चारभुजा मंदिर है। यहाँ से केलवाड़ा-उदयपुर मार्ग पर 7 कि.मी. दूर ग्राम रीछेड़ है जहाँ से 3 कि.मी. की दुरी पर एक पहाड़ी पर मंदिर स्थित है। नाथद्वारा से वहाँ सड़क मार्ग से पहुँचा जा सकता है। अजमेर से उदयपुर वाया चारभुजा आमज होकर जाती है। जोधपुर से कुम्भलगढ़ के रास्ते में गाँव रीछेड़ आता है।

अयोध्या में बनाऐंगे भव्य "शौर्य भवन"

सम्पूर्ण निर्माण लागत की स्वीकृति प्राप्त - शीघ्र आकार लेगा भव्य भवन

अयोध्या। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा द्वारा अयोध्या में 50 करोड़ रुपए की लागत से सर्वसुविधायुक्त "शौर्य भवन" जनोपयोगी सेवा केंद्र का निर्माण होगा। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्यामसुंदर सोनी, महामंत्री संदीप काबरा, संगठन मंत्री अजय काबरा, अर्थ मंत्री रामेश्वर काबरा, नंदकिशोर लखोटिया व वीरेंद्र भराडिया के प्रयासों से शौर्य भवन हेतु भूमि क्रय की जा चुकी है। इस प्रकल्प को मूर्तरूप देने के लिए महासभा के पूर्व अध्यक्ष रामपाल सोनी को शौर्य भवन का चेयरमैन बनाया गया है। उक्त जानकारी देते हुए संगम उद्योग समूह के चेयरमैन रामपाल सोनी ने बताया कि 86 हजार वर्गफीट में 7 मंजिला बनने वाले शौर्य केंद्र में विश्वस्तरीय ऑडिटोरियम, स्वाध्याय एवं शोध हेतु लाइब्रेरी, डिस्पेंसरी वर्षाजल संरक्षण, योग, प्राकृतिक व आयुर्वेदिक चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था व आमजन के ठहरने के लिए सर्व सुविधा युक्त 200 कमरों का निर्माण होगा। भवन हेतु हरिमोहन बांगड़ श्री सीमेंट, सत्यनारायण नुवाल सोलर ग्रुप, रामपाल सोनी संगम ग्रुप, लक्ष्मीनारायण सोमाणी इनलैंड ग्रुप, गोपीकिशन मालाणी जोधपुर, महेश चंद्र बल्दवा हैदराबाद व रामावतार साबू साबू ट्रस्ट 3-3 करोड़ रुपए का सहयोग प्रदान करेंगे। वहीं भवन के ट्रस्टी आर. एल. नोलखा, गोपाल राठी, कृष्णगोपाल तोषनीवाल भीलवाड़ा, बसंतीलाल कालिया गुलाबपुरा, ओम प्रकाश सोनी जोधपुर, ओमप्रकाश तोषनीवाल किशनगढ़, जयदीप बिहानी श्रीगंगानगर, कैलाश खटोड़, शंकर बाहेती अहमदाबाद, रामनिवास मानधनी, कैलाशचंद्र लोहिया जालना, मोहनलाल मानधना अहमदनगर, पूनमचंद मालू नागपुर, श्यामसुंदर काबरा मुंबई, आनंद बांगड़ उज्जैन, नंदकिशोर मालू बेंगलुरु, विष्णुकांत भूतड़ा रायचूर, विजय मानधनिया हैदराबाद, बंशीलाल राठी चेन्नई, अशोक सोमानी रेवाड़ी, राजेश संजय मालपानी संगमनेर, गोविंद सारडा कोलकाता, पुरुषोत्तम लोहिया पूना 1-1 करोड़ रुपए का सहयोग प्रदान करेंगे। श्री सोनी ने बताया कि अब तक करीब करीब सम्पूर्ण अनुमानित लागत की सहयोग राशी पर सहमती प्राप्त हो चुकी हैं।

प्रतिभाओं का किया सम्मान

नाँदेड़। माहेश्वरी समाज में प्रज्ञा है, समाज सेवा का भाव है और समर्पित राष्ट्र सेवा हमारा कर्तव्य है। अतः हमारे समाज के युवाओं को अधिक से अधिक संख्या में सिविल सर्विसेस में आना चाहिए। उक्त विचार आईपीएस अधिकारी अर्चित चांडक ने हरिकिशनजी बजाज मेमोरियल माहेश्वरी शिक्षण विकास संस्था नांदेड के प्रतिभा सम्मान समारोह में प्रेरक के रूप में व्यक्त किये। कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि आदित्य विक्रम बिरला व्यापार सहयोग केंद्र चेन्नई के कोषाध्यक्ष, निजामाबाद निवासी पुरुषोत्तम सोमानी थे। श्री सोमानी विविध दवाइयोंकी होलसेल कीमत और खुदरा मूल्य (एमआरपी) का अंतर कम करते हुए प्रत्येक दवाई पर मार्जिन कैप लगाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चला रहे हैं। श्री सोमानी ने अपने वक्तव्य में सभी समाज बंधुओं से आग्रह किया कि वे जेनेरिक दवाइयां खरीदें। उन्होंने विश्वास दिलाया कि जेनेरिक दवाइयां किसी भी ब्रांडेड दवाइयों के समकक्ष होती हैं। संस्थाध्यक्ष गोपाल लाल लोया की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम में मंच पर नांदेड जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष नारायण दास बजाज, संस्था उपाध्यक्ष ओमप्रकाश इन्नाणी, कोषाध्यक्ष प्रकाश गट्टानी, सचिव किशन प्रसाद दरक, सहसचिव रमेश डागा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का नियोजन कार्यकारिणी सदस्य जगदीश बियानी, रामप्रसाद मूंदड़ा, संजय कुमार सारडा, दुर्गाप्रसाद तोषनीवाल, दीपक बजाज एवं डॉ. शोभा तोषनीवाल ने किया। कार्यक्रम में समाज के अनेक गणमान्यजनों के साथ ही छात्र तथा उनके अभिभावक उपस्थित थे।

आपनो उत्सव का हुआ आयोजन

कोटा। 'परिस्थितियां हमेशा कभी एक जैसी नहीं रहती। ऊंच-नीच जीवन का अंग है। इन परिस्थितियों पर विलाप करने की बजाय मध्य मार्ग निकालते हुए आगे बढ़ना ही जीवन है।' उक्त विचार माहेश्वरी मंडल, वर्धा द्वारा "आपनो उत्सव" के आयोजन में मुख्य अतिथि कोटा के गोविंद माहेश्वरी ने व्यक्त किये। अतिथि स्वागत माहेश्वरी मंडल के अध्यक्ष सुनील तापड़िया, महिला मंडल की अध्यक्षा हर्षा टावरी, नवयुवक मंडल के अध्यक्ष आशीष धीरन, नवयुवती मंडल की अध्यक्षा कुमारी सिद्धि चांडक एवं ट्रस्टी सूर्यकुमार गांधी ने किया। इसके पूर्व आपको कार्यक्रम स्थल पर एक भव्य तिरंगा रैली के माध्यम से आमंत्रित किया गया, जिसका संयोजन पूर्व सचिव अनिल केला ने किया। गत वर्ष का लेखा-जोखा सचिव प्रकाश भूतड़ा ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर बोर्ड परीक्षा के टॉपर व 70 वर्ष पूर्ण करने वाले समाजजनों का स्वागत किया गया। आभार माहेश्वरी महिला मंडल की सचिव अलका राठी ने प्रकट किया। आपनो उत्सव का संचालन राजकुमार जाजू ने किया।

वेद पढ़ना आसान है किंतु जिस दिन आपने किसी की वेदना को पढ़ लिया तो समझिये ईश्वर को पा लिया।

श्री विक्रमादित्य पंचांग का हुआ विमोचन

उज्जैन। प्रतिष्ठित ऋषिमुनि प्रकाशन समूह द्वारा गत 25 वर्षों से सतत प्रकाशित श्री विक्रमादित्य पंचांग (कार्तिकादि) के नवीन 26वें संस्करण विक्रम संवत 2079-80 के पंचांग का गत दिवस विमोचन हुआ। इसमें इस बार एक वर्ष के स्थान पर डेढ़ वर्षीय विवाह मुहूर्त दिये गये हैं। यह पंचांग आम पाठकों के बीच ''घर का पंडित'' के रूप में लोकप्रिय है। श्री विक्रमादित्य पंचांग के इस नवीन अंक का विमोचन गत दिनों उज्जैन के महापौर मुकेश टटवाल, सूरत से आयी बाल कथावाचक, प्रेरक वक्ता एवं लेखिका कु. भाविका राजेश माहेश्वरी के कर कमलों से हुआ। इस अवसर पर अतिथि के रूप में अक्षरविश्व सम्पादक सुनील जैन, रेडियो दस्तक के निदेशक संदीप कुलश्रेष्ठ, वरिष्ठ पत्रकार भूपेंद्र दलाल, पत्रकार विवेक चौऋसिया, वरिष्ठ समाजसेवी राजेश माहेश्वरी, मनीषा माहेश्वरी (सूरत), ख्यात चित्रकार अक्षय आमेरिया, भाजपा के वरिष्ठ नेता शील लश्करी, समाजसेवी कैलाश डागा, शैलेंद्र राठी, नवल माहेश्वरी एवं जयप्रकाश राठी, मुनि बाहेती आदि गणमान्यजन उपस्थित थे। अतिथि स्वागत ऋषिमुनि प्रकाशन के प्रकाशक पुष्कर बाहेती ने किया। इस अवसर पर श्री बाहेती ने पंचांग की विशेषताओं के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि ऋषिमुनि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित श्री विक्रमादित्य पंचांग की गणना कार्तिक मास से ग्रहलाघवीय पद्धति से की जाती है। अपनी उत्कृष्ट गणना के कारण यह न सिर्फ मालवांचल बल्कि प्रदेश व देशभर में ज्योतिर्विदों के बीच लोकप्रिय है। इसमें न सिर्फ डेढ़ वर्ष के विवाह मुहूर्त अपितु और भी कई आवश्यक मुहूर्त इसी तरह स्पष्ट किये गये हैं, जिससे आम व्यक्ति भी स्वयं अपने स्तर पर इससे मुहूर्त निकाल सकते हैं। ग्रह, लग्न, तिथि, नक्षत्र आदि समस्त गणनाऐं भी अत्यंत स्पष्ट होने से यह ज्योतिर्विदों के लिये भी उपयोग में अत्यंत सहज है। यही कारण है कि इस पंचांग को 'घर का पंडित' कहा जाता है। हमें विश्वास है कि यह पंचांग न सिर्फ ज्योतिर्विदों बल्कि आम पाठकों की आवश्यकताओं पर भी खरा उतरेगा।

केंद्रीय मंत्री ने किया स्टाल अवलोकन

सूरत। गत 22 अगस्त तक चैम्बर ऑफ कॉमर्स द्वारा यॉर्न एक्सपो प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। चेयरमेन गिरधरगोपाल मूंदड़ा ने बताया कि इस प्रदर्शनी में मधुसूदन ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज की स्टाल भी लगी। युनियन स्टेट मिनिस्टर टेक्सटाईल दर्शना बेन जरदोष ने भी मधुसूदन ग्रुप स्टॉल का अवलोकन कर चेयरमेन रामगोपाल मूंदड़ा से वार्तालाप किया। मूंदड़ा परिवार के श्रीकांत, मनमोहन, नवनीत, दीपक, यतिराज, सुदर्शन, निकुंज, सौलभ्य मूंदड़ा आदि कई सदस्य इस अवसर पर उपस्थित रहे।

हाईकू

राम मूंदड़ा, इंदौर

आस्था
और
प्रार्थना
दोनों **अदृश्य**
हैं लेकिन,

वे
असंभव
चीजों को
संभव
बनाती है।

■

मेरे **पाँव**
के **छालों** जरा
लहू उगलो,

जमाना
सफर के
निशान माँगता है।

■

बुद्धिमान लोग
दुनिया **चलाते** हैं,

जबकि **ज़िद्दी**,
सनकी, पागल
दुनिया **बदलते** हैं..!

■

हम
उस **चिट्ठी** को
बार-बार **पढ़ते** हैं,

जिसमें वह
नहीं लिखा होता,
जो हम **पढ़ना**
चाहते थे।

साफा प्रशिक्षण शिविर का हुआ आयोजन

कोलकाता। गणेशोत्सव अंतर्गत माहेश्वरी समाजोत्थान समिति के ऑफिस में गणेशजी व मां लक्ष्मीजी की पूजा उत्सव पूर्वक की गई। समिति के सभापति सुरेंद्र कुमार डागा एवं मंत्री मनमोहन राठी पूजा में बैठे। साथ ही समिति द्वारा जितने भी सामाजिक कार्य किए जाते हैं, उन सबका संकल्प लिया गया। इस पूजा में समिति के उपसभापति कैलाश कुमार भट्टेर, कोषमंत्री ओमप्रकाश मूंदड़ा, कार्यकारिणी सदस्य सुरेंद्र काबरा, उर्मिला मिमानी, योगेश मोहता, बादल बागड़ी एवं बसंत बागड़ी आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर साफा पैचा पाग प्रशिक्षण शिविर संयोजक रामकिशन चांडक एवं पं. शिवकुमार किराड़ू, सह संयोजक गिरीराज दम्मानी, केशव डागा, आदित्य मोहता आदि की उपस्थिति में आयोजित हुआ। परिचय सम्मेलन सह संयोजक रीता थिरानी, गौरीशंकर सोमानी तथा आजीवन सदस्य माखनलाल मूंधड़ा व मनीष बिनानी की उपस्थिति में आयोजित हुआ। माहेश्वरी सभा की तरफ से उप सभापति अशोक द्वारकानी, मंत्री पुरूषोत्तम मूंधड़ा, उपमंत्री अशोक चांडक, वरुण बिनानी, संगीतलय मंत्री, महेश दम्मानी, बालिका विद्यालय मंत्री राकेश मोहता व सभा कार्यकारिणी सदस्य गुलाकीदास डागा आदि उपस्थित थे।

धूमधाम से मनाया राधाष्टमी पर्व

बिल्सी। साहूकार कॉलोनी मोहल्ला नंबर दो स्थित श्री बांके बिहारी मंदिर में राधाष्टमी पर्व अति उत्साह एवं धूम धाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री राधा रानी को 56 भोग लगाया गया। मंदिर में विशेष सजावट कर आतिशबाजी की गई। बाहर से आई संगीत पार्टी द्वारा राधा रानी के भजन प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर सुभाषचंद बाहेती, पंकज बाहेती, विवेक कैटरर्स, नीरज बाहेती, विपिन बाहेती, अवनेश सतीशचंद माहेश्वरी, दीपक माहेश्वरी आदि बड़ी संख्या में कई भक्त उपस्थिति थे।

जिला सभा की बैठक सम्पन्न

नागौर। गत 11 सितम्बर को नागौर जिला माहेश्वरी सभा के कार्यकारी मण्डल की बैठक सुरेश राठी के फार्म हाउस पर सम्पन्न हुई। जिला अध्यक्ष सत्यनारायण भण्डारी ने एक नई सोच के साथ बैठक को गेम्स एवं मनोरंजक तरीके से आयोजित करने का निर्णय लिया। प्रातः 10 बजे से जिला सभा के सदस्यों एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों का रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हुआ। अतिथियों का तिलक व माला पहनाकर स्वागत किया गया। इसके पश्चात् अतिथियों ने पुल पार्टी का भरपूर आनन्द लिया। पुल पार्टी के बाद गेम्स - पिलो पासिंग एवं म्यूजिकल चेयर का आयोजन बहुत ही मनोरंजक तरीके से किया गया। दोपहर के भोजन के पश्चात् बैठक का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा की योजनाओं की जानकारी भी दी गई। मध्य राजस्थान प्रादेशिक सभा के पदाधिकारी केसरीचन्द तापड़िया, गोपीकिशन बंग, अमरचन्द रांदड़, रंगनाथ काबरा आदि ने भी समाज हित में अपने उद्बोधन दिये। अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन के सचिव रमेश छापरवाल, अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के सदस्य श्यामसुन्दर मंत्री एवं महावीर बिदादा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में जिला सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कैलाश मून्दड़ा, सचिव पुरूषोतम लाहोटी, कोषाध्यक्ष मोहनप्रकाश मालपानी, जगदीशप्रसाद जाजू, कालूराम सारड़ा, कालूराम असावा, नन्दकिशोर करवा, पुसाराम कोठारी सहित समस्त पदाधिकारीगण, माहेश्वरी पंचायत संस्थान के अध्यक्ष किशनलाल लोहिया, सचिव मदनमोहन बंग एवं सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन महेश अटल ने किया।

महिला संगठन ने आयोजित की भागवत कथा

जोधपुर। माहेश्वरी महिला संगठन पूर्वी क्षेत्र द्वारा श्रीमदभागवत कथा एवं नानी बाई का मायरा का आयोजन 8-10 सितम्बर तक माहेश्वरी जनोपयोगी भवन में किया गया। संयोजक रामेश्वरी राठी, सह संयोजिका पूष्पा सोनी, सरला बूब, राधिका राठी, अर्चना डागा, पूजा बूब व रमा कपूरिया टीम ने व्यवस्था सम्भाली। प्रदेश सचिव कमला मूंदड़ा, जिलाध्यक्ष शिवकन्या, उर्मिला तापड़िया व समाज के नंदकिशोर शाह का सान्निध्य रहा। सरोज मूंदड़ा, गीता राठी, संगीता सोनी, भगवती बूब सहित समस्त सदस्याओं का सक्रिय सहयोग रहा।

पुस्तक "विवाह क्या और कैसे?" लोकार्पित

उज्जैन। वरिष्ठ साहित्यकार शंकरलाल गुप्ता द्वारा लिखित और ऋषिमुनि प्रकाशन उज्जैन द्वारा प्रकाशित "विवाह क्या और कैसे?" पुस्तक का लोकार्पण उज्जैन के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शिव चौरसिया की अध्यक्षता एवं श्री दुर्गाशंकर वरिष्ठ अभिभाषक देवास के मुख्य आतिथ्य में लक्ष्मीनारायण मंदिर (यज्ञसेनी वैश्य समाज) शुक्रवारिया हाट देवास में सम्पन्न हुआ। विषय प्रवर्तन रोटरी क्लब देवास के सचिव आशीष गुप्ता, संचालन नवीन नाहर तथा आभार प्रदर्शन प्रोफेसर रेखा गुप्ता द्वारा किया गया। उक्त पुस्तक में विभिन्न आयुवर्ग एवं समाजोपयोगी विवाह से सम्बंधित रीति रिवाज एवं परम्परा से सम्बंधित गीत एवं आवश्यक सामग्री सहित विस्तार से वर्णन किया गया। विवाह में विलम्ब की समस्याओं के समाधान एवं शांतिपूर्ण दीर्घ दाम्पत्य की जीवन शैली के साथ ही विवाह की तैयारी एवं प्रबंधन संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी भी समाविष्ट की गई है। अमेजोन पर भी उपलब्ध इस पुस्तक का मूल्य मात्र 200/- रुपए रखा गया है। कार्यक्रम में यज्ञसेनी वैश्य समाज के अध्यक्ष गौरव गुप्ता, महिला विंग अध्यक्ष सुषमा गुप्ता, समाज सदस्य भारतीय पत्रकार संघ की सचिव आभा निगम, प्रकाशक पुष्कर बाहेती, मीना वर्मा, नीलू सक्सेना सहित कई साहित्यकार एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

बी फॉर यू चैनल पर रूपल मोहता

खामगांव। चहुंमुखी प्रतिभा की धनी ख्यात कलाकार रुपल विवेक मोहता द्वारा अभिनित एक गीत 'तेरा आँचल' का प्रसारण "बी फॉर यू" म्यूजिक चैनल पर पिछले दिनों शुरु हुआ है। माँ बेटी के वात्सल्य-प्रेम को बयां करते इस गीत में माँ का किरदार रुपल ने निभाया है तथा बेटी की भूमिका नायरा सिंग ने निभाई है। रुपल का यहाँ तक का सफर काफी संघर्षमय रहा है। यूं तो वे अपने महाविद्यालयीन जीवन से ही कई कलाओं में पारंगत थीं, जैसे गायन, अभिनय, ड्राईंग, फेशन डिजाईनिंग इत्यादि। विवाह के उपरांत वर्ष 2007 में उन्होंने शहर की गायन प्रतियोगिता खामगांव आयडल से अपना सफर दोबारा शुरु किया। मायका एवं ससुराल दोनों में संयुक्त परिवार में रही रुपल ने यह यात्रा परिवार को संभालकर पूर्ण की। इसके पूर्व भी उन्हें समय-समय पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से गौरवान्वित किया जा चुका है। उन्हें मिले मिसेस इंडिया युनिवर्स 2019 व महाराष्ट्र के राज्यपाल द्वारा सम्मान तथा मप्र शासन के प्रकल्पों के प्रचार प्रसार की ब्रांड एम्बेसेडर, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गेस्ट ऑफ ऑनर आदि से वे सुर्खियों में रही हैं।

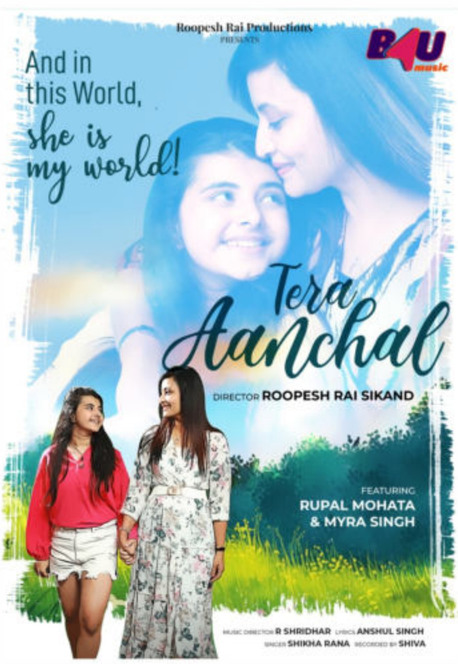

राधिका बनी असिस्टेंट कलेक्टर

अलीराजपुर। मध्यप्रदेश के अलीराजपुर से उन्नति की राह चलती, IAS उत्तीर्ण राधिका गुप्ता (बाहेती) तेलंगाना के खम्मम शहर की असिस्टेंट कलेक्टर के रूप में महत्वपूर्ण दायित्व को सम्भालने जा रही है। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

प्रोफेसर माहेश्वरी बुकर मेडल से सम्मानित

जयपुर। आईआईटी रुड़की में भूकंपीय तकनीक के वैज्ञानिक प्रो. बालकृष्ण माहेश्वरी (आगीवाल) का International Association for Computer Methods and Advances in Geomechanics, Torino, Italy ने विश्व प्रसिद्ध John Booker Medal 2022 के लिए भूकंप सम्बन्धी विशिष्ट परीक्षणों और परिणामों के लिये चयन किया है। इसके अंतर्गत उनको इटली आमंत्रित कर अपने 16 वें अंतरराष्ट्रीय समारोह में गत 1 सितम्बर 2022 को पुरस्कृत किया गया।

युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन

जालना। माहेश्वरी विवाह समिति द्वारा गत 3 नवम्बर को माहेश्वरी युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया। यह समिति द्वारा आयोजित होने वाला नवम सम्मेलन है, जो सभी वर्ग के लिए खुला है। शिक्षित-उच्चशिक्षित युवक-युवती साथ ही विधवा-विदूर तलाकशुदा भी इस सम्मेलन में भाग ले सकते हैं। यह सम्मेलन मोढा रोड पर सोनी फार्म हाऊस के विशाल प्रांगण में आयोजित होगा। दूर गांव में आने वाले अभिभावक व प्रत्याशियों के लिए ठहरने की व्यवस्था महेश भवन में की जाएगी। रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 28 अक्टूबर है। उक्त जानकारी विवाह समिति के अध्यक्ष कांतिलाल राठी ने दी।

पश्चिम बंगाल में आयोजित हुआ "हरसिंगार"

सिलीगुड़ी। गत 27 अगस्त को पश्चिम बंगाल प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा इस सत्र के प्रथम अधिवेशन हरसिंगार का सिलीगुड़ी में आयोजन हुआ। इसमें सभी के साथ रुबरु होने का सुनहरा अवसर मिला। इसमें अखिल भारतीय माहेश्वरी संगठन की पूर्व अध्यक्षा शोभा सादानी, राष्ट्रीय पूर्वांचल की वर्तमान संयुक्त मंत्री गिरिजा सारड़ा, पूर्वांचल सह प्रभारी व्यक्तित्व विकास समिति वर्षा डागा, साहित्य समिति की सरोज मालपानी सहित कई सदस्याऐं उपस्थित थीं। दीप प्रज्जवलन के पश्चात सभी जिला संगठन के सदस्यों द्वारा बेनर प्रेजेंटेशन व अपने यहां की विशेषताओं का मंत्रमुग्ध प्रदर्शन किया गया। उसके बाद उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी के साथ एक बैठक का आयोजन गया। इसमें प्रदेश के सभी आंचलिक संगठनों के तीन वर्षों के कार्यक्रमों का प्रतिवेदन PPT द्वारा प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात सभी संगठन को डायमंड, गोल्ड, सिल्वर, नवगठन आदि केटेगिरी अनुसार अवॉर्ड दिए गए। समिति संयोजिकाओं, प्रदेश कार्यसमिति, कार्यकारणी सदस्यों को उत्कृष्ट कार्य हेतु एवं राष्ट्र और पूर्वांचल से तीनों सालों में हुई प्रतियोगिता में भाग लेने वाले एवं सभी विजेताओं को भी मोमेंटो व सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। दोपहर के भोजन के बाद संध्या में एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आंचलिक संगठनों द्वारा 10 समितियों के अंतर्गत अपनी-अपनी कलाओं को निखारने का मौका मिला। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मुख्य आकर्षण महिलाओं के व्यक्तित्व में निखार लाते हुए कौन बनेगा 'मिसेज बंगाल माहेश्वरी' का आयोजन था। सभी कार्यक्रम सिलीगुड़ी के माहेश्वरी भवन में आयोजित किए गये। पूरे कार्यक्रम के आयोजन की मेहमाननवाजी सिलीगुड़ी माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा की गई। अध्यक्ष रीता कल्लानी, सचिव नीलम झंवर, प्रदेश संगठन मंत्री आभा लाहोटी एवं प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य व समिति संयोजिका शोभना सारड़ा थीं। सांस्कृतिक कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा सुधा कल्याणी ने बनाई। सिलीगुड़ी से सह सचिव सुशीला लोहिया और मोनिका बागड़ी का विशेष योगदान रहा।

गणेश विसर्जन में जलसेवा

सूरत। अड़ाजण घुड़दौड़ रोड माहेश्वरी सभा सूरत एवं श्रीराम भक्त मंडल सूरत के संयुक्त तत्वावधान में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 9 सितंबर को श्री गणेश विसर्जन पर सरदार कोम्प्लेक्स, गुजरात गैस सर्किल, अड़ाजण पर पानी परब लगा कर गणेश विसर्जन में शामिल गणेश भक्तो को सुबह 9 बजे से सांय 7 बजे तक ठंडा पानी पिलाया गया। कार्यक्रम संयोजक अड़ाजण सभा सचिव सुनील माहेश्वरी एवं प्रमोद फोफलिया ने बताया कि करीब 13500 ठंडे पानी की बोतल भक्तों में वितरित की गई। इस अवसर पर सूरत जिला माहेश्वरी सभा के सचिव संदीप धूत, संगठन मंत्री पवन बजाज, वेसू माहेश्वरी सभा सचिव ओमप्रकाश बिरला, गुजरात प्रदेश सभा के कार्यालय मंत्री हनुमान लोहिया, अड़ाजण सभा संरक्षक ओमप्रकाश देवपुरा, उपाध्यक्ष नरेंद्र राठी, सहसचिव सुनील जागेटिया, संगठन मंत्री कृष्णकांत तापड़िया, कोषाध्यक्ष विष्णु बसेर सहित समस्त सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ।

ऋषि पंचमी पर मनाया रक्षाबंधन पर्व

नरैना। माहेश्वरी समाज ने श्रावणमाह की पूर्णिमा को रक्षाबंधन पर्व नहीं मनाकर गणेश चतुर्थी के अगले दिन ऋषि पंचमी पर रक्षाबंधन पर्व परम्परागत रूप से मनाया। श्रावण पूर्णिमा रक्षाबंधन पर जहां युवतियां व महिलाएं अपने भाई-भतीजों को रक्षासूत्र बांधकर स्वयं की रक्षा करने की कामना करती हैं। वहीं ऋषि पंचमी पर माहेश्वरी समाज की युवतियां व महिलाएं अपने भाई-भतीजों की कलाई पर रक्षासूत्र बांधकर उनके कुशल मंगल व दीर्घायु होने की कामना करती हैं। अपने भाई भतीजों के कुशल मंगल व दीर्घायु होने की कामना के साथ ऋषि पंचमी के दिन माहेश्वरी समाज की ज्यादातर महिलाएं व्रत उपवास रखती हैं।

दुनिया में हर चीज कीमती है
पाने से पहले और खोने के बाद।

परिवार परिवेदना प्रकोष्ठ में हिन्दी पर चर्चा

जोधपुर। हिंदी दिवस 14 सितम्बर को सम्पन्न हुई परिवार परिवेदना प्रकोष्ठ की बैठक में इस बार प्राप्त प्रकरणों पर चर्चा के अतिरिक्त हिंदी को प्रोन्नत करने पर भी विषद विवेचन हुआ। इस अवसर पर कथाकार हरिप्रकाश राठी ने कहा कि जब तक हिंदी को हम रोजगार की भाषा नहीं बनाते, जब तक हिंदी को राष्ट्रभाव से नहीं जोड़ते हिंदी का निर्दिष्ट मुकाम तक पहुंचना दूर की गोटी है। एडवोकेट नन्दकिशोर चाण्डक ने कहा कि आज अनेक लोग इंग्लिश पढ़ने, बोलने में गर्व का अनुभव करते हैं, वे जानते हुए भी हिंदी नहीं बोलते हैं। इसी के चलते हिंदी अपने ही देश में बेगानी हो गई है। प्रकोष्ठ के बीजचिन्तक ओमप्रकाश फोफलिया ने कहा कि हमारे राजनीतिज्ञों की लचर, दोगली नीति के चलते हिंदी हमारी राजभाषा, मातृभाषा तो है पर अब तक राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई है। कार्यक्रम में कवयित्री सुनीता हेड़ा, डॉ. सूरज, महेंद्र मालपानी ने हिंदी विकास से संबंद्ध कविताओं का पाठ भी किया। उपस्थित सभी सदस्यों ने संकल्प लिया कि वे हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सच्चे मन से कार्य करेंगे। इस अवसर पर हिंदी विकास की अनेक संस्थाओं से जुड़ी ख्यात समाजसेवी आशा फोफलिया का अभिनन्दन भी किया गया। बैठक डॉ. फूलकौर मुंदड़ा के निवास पर सम्पन्न हुई।

सिंजारा एवं तिरंगा यात्रा का हुआ आयोजन

इंदौर (म.प्र.)। माहेश्वरी फ्रेण्डस ग्रुप की तृतीय साधारण सभा सुरुचि गार्डन में सिंजारा के उपलक्ष्य में आयोजित की गई। ग्रुप की सभी महिलाओं ने दोनों हाथों में मेहंदी लगवाई। इस अवसर पर सोनम पगारे द्वारा सिंजारे के सुमधुर गीतों की प्रस्तुति दी गई एवं कई मनोरंजन कार्यक्रम व गेम आयोजित हुए। शाम के समय आजादी के अमृत माहोत्सव के अवसर पर तिरंगा यात्रा गार्डन परिसर में निकाली गई। यात्रा में देशभक्ति के गीत गाये गये। कार्यक्रम में इंदौर नगर निगम के पार्षद कमल लढ्डा, पार्षद बरखा मालू व इंदौर माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष राजेश मूंगड़ का स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक गोपाल सुधा मालपानी, सतीश आशा साबू, मोहन सुधा मंत्री थे। कार्यक्रम में सुरेश जमना राठी, सम्पत कुमार राधा साबू, सूर्यप्रकाश संतोष झंवर, भरत सावित्री भट्टड़, सुरेश सावित्री सिंगी सहित कई सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर ग्रुप के सभी सदस्य व उपस्थित समाजजनों को घर पर तिरंगा झण्डा लगाने के लिए दिये गये। कार्यक्रम का संचालन प्रमिला भूतड़ा ने किया। उक्त जानकारी ग्रुप के प्रचार मंत्री सम्पत कुमार राधा साबू ने दी।

''शंखनाद'' में राजश्री बिड़ला आमंत्रित

कोटा। अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन की द्वादश सत्र में चली आभासी (virtual) बैठकों के दौर के बाद 9 से 11 अक्टुबर तक शौर्य भूमि राजस्थान की शैक्षणिक नगरी कोटा में 'शंखनाद 2022', महिला महाधिवेशन प्रत्यक्ष रूप से आयोजित हो रहा है। अधिवेशन के लिए पद्म भूषण राजश्री बिरला को आमंत्रित करने हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी, राष्ट्रीय महामंत्री मंजु बांगड़, अधिवेशन स्वागत अध्यक्ष एवं पश्चिमांचल उपाध्यक्ष ममता मोदानी तथा कंप्यूटर समिति दक्षिणांचल सह प्रभारी भाग्यश्री चांडक ने मुम्बई स्थित कार्यालय में उनसे विशेष भेंट की। आशा माहेश्वरी एवं मंजु बांगड़ ने श्रीमती बिरला का सम्मान कर महाअधिवेशन की आमंत्रण पत्रिका देकर महाधिवेशन के उदघाटन के लिए विशेष अनुरोध किया। इस आमंत्रण को श्रीमती बिरला ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। इस अवसर पर महासभा के कार्यसमिति सदस्य मुंबई निवासी श्याम काबरा सपत्नीक एवं विशाल माहेश्वरी (कोटा) की भी उपस्थित थीं। राजश्री बिरला के सामने महिला संगठन की विस्तृत जानकारी एवं द्वादश सत्र के राष्ट्रीय कार्यक्रमों का विवरण कंप्यूटर समिति द्वारा बनाई गई PPT के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

राठी बने महासभा कार्यकारी मण्डल सदस्य

दुर्ग। जिला माहेश्वरी सभा की सामान्य सभा में अशोक राठी को वर्तमान सत्र हेतु अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा कार्यकारी मण्डल का सदस्य चुना गया। महासभा के कार्यसमिति सदस्य विट्ठल भूतड़ा ने इस अवसर पर उपस्थितजनों की ओर से पुष्पगुच्छ भेंटकर श्री राठी का अभिनंदन किया। इस सभा में प्रदेश कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश टावरी, प्रदेश उपाध्यक्ष राजकुमार गाँधी, दुर्ग अध्यक्ष मुरारी भूतड़ा, दुर्ग सचिव कमलकिशोर बियाणी, भिलाई अध्यक्ष हर्ष मंत्री, जिला सचिव अभय माहेश्वरी आदि कई सदस्य उपस्थित थे।

जो निःशुल्क है वही सबसे ज्यादा कीमती है- नींद, शांति, आनंद, हवा, पानी, प्रकाश और सबसे ज्यादा हमारी साँसे।

गौ सेवा के लिए औषधि के लड्डू का वितरण

जोधपुर। माहेश्वरी महिला संगठन पूर्वी क्षेत्र द्वारा गायों में फैल रही भीषण महामारी लम्पी को रोकने एवं उसके उपचार हेतु औषधियुक्त लड्डू एवं दवाई का पाउडर पशु चिकित्सक की देखरेख में बनाये गए। अध्यक्ष सुशीला बजाज ने बताया कि इसके अंतर्गत करीब 31 हजार की लागत की औषधि बनाई गई है। इसे जोधपुर की विभिन्न गौशालाओं में वितरित किया जा रहा है ताकि गायों को जल्दी से जल्दी तंदुरुस्त किया जा सके। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु गीता सोनी, बबीता चांडक, सुनीता डागा, ललिता धूत एवं मंडल के सभी सदस्यों का पूर्ण योगदान रहा।

पुस्तक 'क्या छिपा सन्दूकची में' विमोचित

कोलकाता। शशि लाहोटी के काव्य संकलन 'क्या छुपा सन्दूकची में' का विधिवत विमोचन 'हिंदुस्तान क्लब' में रविवार, 28 अगस्त को संपन्न हुआ। शशि लाहोटी ने राजस्थान के सीकर जिले से अपनी शिक्षा पूर्ण की है और अब कोलकाता शहर में रहती हैं। ताजा टीवी और छपते छपते समाचार पत्र के सीईओ विश्वंभर नेवर ने पुस्तक का विमोचन किया। समाज के कई वरिष्ठ व्यक्ति समारोह में उपस्थित थे।

गाज माता का सामूहिक उद्यापन

हैदराबाद। संस्कार धारा द्वारा सुल्तान बाज़ार कोठी स्थित मंदिर में गाज माता के सामूहिक उद्यापन का आयोजन किया गया। इस दौरान संस्थापिका कलावती जाजू, अध्यक्ष श्यामा नावन्दर, मंत्री अंजना अटल, सविता मालानी, पद्मा बजाज, किशोरी लाहोटी, कमला राठी आदि उपस्थित थीं।

शतदल अर्पण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

कोलकाता। चारण राजा और प्रजा के बीच की एक कड़ी थे। आम लोगों की बात शासकों तक पहुँचाते थे। उनका यह कर्म, चारणाचार है। उक्त विचार राजस्थानी बोली के ख्यात कवि भंवर पृथ्वीराज रतनूँ ने शोभाराम बसाक स्ट्रीट स्थित माहेश्वरी भवन में माहेश्वरी सभा के अन्तर्गत संचालित माहेश्वरी पुस्तकालय की ओर से शतदल अर्पण-कवि प्रणाम (स्वागत-सम्मान) कार्यक्रम में व्यक्त किये। सम्मान स्वरूप उन्हें बीकानेरी पेचा पहनाकर, शॉल ओढ़ा व दुपट्टा पहनाकर, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। माहेश्वरी पुस्तकालय के मंत्री संजय बिन्नानी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया कि मायड़भासा को समर्पित भाव से संरक्षण देना हमारा धर्म है। कार्यक्रम के अध्यक्ष सुपरिचित विद्वान डॉ. बाबूलाल शर्मा, सभापति बुलाकी दास मिमानी, सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय के सहायक निदेशक हिंगलाजदान, पुस्तकालय के उपाध्यक्ष राधेश्याम झँवर आदि मंच पर मौजूद थे। सभामंत्री पुरुषोत्तम दास मूँधड़ा, सुरेश बागड़ी, समाजसेवी-भामाशाह ओमप्रकाश चांडक, नारायण दास सोनी, त्रिभुवन नाथ पांडे, मुकुंद राठी सहित अनेक गणमान्यजन इस कार्यक्रम के साक्षी रहे।

मास पारायण का हुआ आयोजन

पुणे। संस्था श्री माहेश्वरी बालाजी मंदिर द्वारा प्रतिवर्षानुसार श्रावणमास में 29 अगस्त से 27 सितम्बर तक श्रीराम चरित मानस आधारित मास पारायण का आयोजन किया गया। संस्था के पूर्व अध्यक्ष सुरेश नावंदर द्वारा सपत्नीक रामचरित मानस का पूजन कर पाठ का प्रारंभ किया। इस पारायण में अध्यक्ष कैलाश मूंदड़ा सुरेश नावंदर, हरिकिशन राठी, जगदीश राठी आदि कई सदस्यों का सहयोग रहा। जानकारी सुरेश नावंदर ने दी।

देश में 'राजा' समाज के 'गुरु'
परिवार में 'पिता' और घर में 'स्त्री'
ये कभी 'साधारण' नहीं होते, क्योंकि
निर्माण और प्रलय इन्हीं के 'हाथ' में होता है।

त्रिदिवसीय यात्रा का हुआ आयोजन

इन्दौर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा गुजरात में केवडिया स्थित ''स्टेच्यू ऑफ यूनिटी'' की तीन दिवसीय यात्रा का आयोजन किया गया। इसमें लोह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 183 मीटर ऊँची प्रतिमा की जानकारी सदस्याओं ने लेजर शो व उनके जीवन पर बने संग्रहालय एवं वीडियो द्वारा प्राप्त की गई। स्टेच्यू ऑफ यूनिटी की एक खासियत यह है, उस पूरे एरिया को एकता नगर के नाम से जाना जाता है। वहां महिलाओं को प्राथमिकता पर रोजगार दिया गया। उनके द्वारा एकता थाली रेस्टारेंट व ई-रिक्शा संचालित किया जाता है। मानव निर्मित सरदार सरोवर डेम व उसके आसपास बनाये गये अलग-अलग प्राकृतिक दर्शनीय स्थलों में ग्लो गार्डन, केक्ट्स गार्डन, बटरफ्लाई गार्डन, विश्व वन, फ्लावर ऑफ वेली एवं स्टेच्यू ऑफ यूनिटी को देखकर सभी खुशी से लबरेज हो गई। साथ ही एडवेन्चर भरा रिव्हर राफ्टिंग का भी कुछ सदस्याओं ने साहसपूर्ण लुत्फ उठाया। संस्था सचिव नम्रता राठी ने बताया कि इस यात्रा में सुशीला लाठी, ज्योति काबरा, सीमा माहेश्वरी, उर्मिला शारदा, पुष्पा मोलासरिया, शोभा, सुधा माहेश्वरी, विनीता माहेश्वरी, किरण लखोटिया आदि सहभागी रहीं।

महिला गौरव की सेवा गतिविधि

उदयपुर (राज.)। संस्था माहेश्वरी महिला गौरव पहाड़ा में गुरू पूर्णिमा के अवसर पर गुरुओं का अभिनंद तिलक, नारियल व ऊपरणा ओढ़ाकर किया गया। अध्यक्ष आशा नरानीवाल व प्रदेश संगठन मंत्री सरिता न्याती विशेष रूप से उपस्थित थीं। स्कूल में पौधारोपण अंतर्गत औषधीय पौधे के साथ फूल के पौधे भी लगाये गये। बच्चों को तुलसी के पौधे वितरित किये। इस अवसर पर रेखा देवपुरा, नीरू झँवर, नंदा झंवर आदि उपस्थित थीं। ओरियन्टल पैलेस रिसोर्ट में नंद उत्सव व मटकी फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कौशल्या गट्टानी व जनक बाँगड़ ने की। संस्था अध्यक्ष आशा नरानीवाल ने सभी का स्वागत अभिनन्दन किया। सचिव सीमा लाहोटी ने बताया कि कृष्ण जन्म की झांकियों के साथ नृत्य व नाटक की प्रस्तुति भी दी गई। सरिता न्याती, मंजू गाँधी, अंकिता मंत्री, अनिता मूंदड़ा, रीमा सोमानी, मोनिका डाड, निर्मला काबरा, नेहा, राजकुमारी आदि उपस्थित थीं।

जैसलमेरिया व भूतड़ा सम्मानित

जयपुर। समन्वय वाणी फाउंडेशन (रजि.) द्वारा संचालित अथाई समूह द्वारा राष्ट्रीय अधिवेशन व सम्मान समारोह टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में सम्पन्न हुआ। इसमें आयोजित भव्य काव्य गोष्ठी का संचालन मधु भूतड़ा जयपुर एंव स्वाति जैसलमेरिया जोधपुर द्वारा किया गया। माहेश्वरी समाज के राष्ट्रीय कवि प्रह्लाद चांडक व स्वाति मानधना ने अपनी कविताओं से शमां बांधकर खूब तालियां बटोरी। सम्मान समारोह की अध्यक्षता नंद भारद्वाज ने की। मुख्य अतिथि लोकेश कुमार साहिल 'सागर' व विशिष्ट अतिथि न्यायचन्द मूर्ति, पानाचंद जैन व हुकुमचंद भारिल थे। इसमें माहेश्वरी समाज से स्वाति जैसलमेरिया, मधु भूतड़ा, प्रह्लाद चांडक व स्वाति मान्धना को अथाई समूह गौरव सम्मान 2022 से सम्मानित किया गया।

प्रीवेंटिव हेल्थ चेकअप का आयोजन

कोलकाता। माहेश्वरी सेवा समिति द्वारा कार्यक्रम प्रीवेंटिव हेल्थ चेक अप एवं कार्यकर्ताओं के सम्मान का आयोजन सभा के सभापति बुलाकीदास मिमानी के आतिथ्य में किया गया। महेश्वरी सेवा समिति के अध्यक्ष डीके मोहता ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि समाज की इस सेवा का अधिक से अधिक उपयोग करके समाज को एक स्वस्थ जीवन प्रदान किया जा सकता है। समिति के मंत्री अरुण कुमार सोनी ने माहेश्वरी सेवा सदन बासुदेवपुर हरिपाल में आयोजित श्रावण सेवा शिविर में कांवड़ियों की सेवा करने पर सभी कार्यकर्ताओं का सम्मान भी उत्तरीय पहना कर किया। आभार समिति के उपसभापति दिनेश बिहानी ने व्यक्त किया। शंकरलाल सोमानी, पंचानन भट्डड, आदित्य बिनानी, महेश बिनानी, अशोक चांडक, लक्ष्मीकांत करवा, राजकुमार मोहतो, मनमोहन डागा, केशव चांडक आदि कई सदस्यों का योगदान रहा।

इंसान की फितरत भी बड़ी अजीब है डूबता है तो पानी को दोष देता है गिरता है तो पत्थर को दोष देता है, कुछ कर नहीं पाता तो नसीब को दोष देता है।

डॉ. माहेश्वरी को चंद्र ज्योति सम्मान

अलीगढ़ (उ.प्र.)। डॉ. आभा माहेश्वरी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री राजेन्द्र कुमार माहेश्वरी (रिटायर्ड चीफ इंजीनियर) को उनके स्व. साथी को समर्पित काव्य- संग्रह 'जीवन-आभा' के लिये कण्व नगरी कोटद्वार में साहित्य साधिका के रूप में उत्तराखण्ड की 'साहित्यांचल संस्था' के स्वर्ण जयंती वर्ष में 'चन्द्र ज्योति सम्मान' से सम्मानित किया गया। इसी कार्यक्रम में वर्ष 2021 में लिखित उनके दूसरे काव्य-संग्रह 'जीवन-अनंत' का विमोचन किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विजय कुमार माहेश्वरी (वरिष्ठ अधिवक्ता) एवं वेदप्रकाश 'शैवाल' आदि उपस्थित थे।

पश्चिमी म.प्र. महिला संगठन की बैठक सम्पन्न

राजगढ़। पश्चिमी मध्यप्रदेश प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की तृतीय कार्यकारिणी बैठक राजगढ़ जिले के आतिथ्य में सारंगपुर में आयोजित की गयी। सारंगपुर महिला संगठन अध्यक्ष प्रेमलता चोखड़ा एवं जिलाध्यक्ष कुमुद बियानी द्वारा शाब्दिक स्वागत क़िया गया। कार्यक्रम की विशेष अतिथि मीना मोदानी ने उपस्थित महिलाओं से ग्राम से बाहर भी अपनी कला से पहचान बनाने पर अपने विचार रखे। प्रदेश अध्यक्ष वीणा सोमानी ने प्रदेश संगठन द्वारा आगामी आयोजित विभिन्न कार्यक्रम की जानकारी देते हुए कोटा में आयोजित महाअधिवेशन शंखनाद के कार्यक्रमों में प्रतिभागी बनने की अपील की। प्रदेश मंत्री उषा सोडानी द्वारा सचिव प्रतिवेदन पश्चात निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष अरुणा बाहेती ने प्रदेश अधिवेशन अरुणिमा का आयव्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष सरोज सोनी द्वारा संगठन के कोष की जानकारी दी गई। अंत में प्रादेशिक अधिवेशन अरुणिमा के सभी कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में 150 सदस्याओं की सक्रिय उपस्थिति रही। अंत में आभार जिला सचिव शालिनी भट्टड़ एवं प्रदेश संगठन मंत्री शोभा माहेश्वरी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सारंगपुर सचिव अनुकृति राठी, सरला राठी एवं प्रदेश संयुक्त मंत्री रंजना परवाल द्वारा किया गया।

ऋषिमुनि क्रिएशन की नयी युनिट लोकार्पित

उज्जैन। ऋषिमुनि प्रकाशन के सहायक प्रकल्प ''ऋषिमुनि क्रिएशन्स'' की नयी युनिट का शुभारम्भ अयोध्या में श्री रामजन्मभूमि मंदिर निर्माण ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज के करकमलों से हुआ। स्वामीजी उज्जैन में स्वामी सत्यमित्रानंदजी की प्रतिमा के अनावरण व उनके नाम से हुए एक मार्ग के नामकरण अवसर पर पधारे थे। संचालक मुनि बाहेती, श्री माहेश्वरी टाईम्स सम्पादक पुष्कर बाहेती व प्रबंध सम्पादक सरिता बाहेती को स्वामीजी ने आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर अ.भा. माहेश्वरी महासभा के कार्यसमिति सदस्य एवं वरिष्ठ समाजसेवी रामअवतार जाजू, पुष्पा जाजू, वरिष्ठ पत्रकार संदीप कुलश्रेष्ठ, वरिष्ठ पत्रकार सुनील जैन, जयप्रकाश राठी, नवल माहेश्वरी, शैलेष राठी आदि उपस्थित थे।

पर्यावरण संरक्षण के लिए संयुक्त पौधारोपण

बीकानेर। बीएसएफ कैम्पस में बीएसएफ व मारवाड़ी महासभा की ओर से पर्यावरण संरक्षण के लिए संयुक्त रूप से पौधारोपण किया गया। इसमें नीम के करीब 500 पौधों का कैम्पस में रोपण किया गया। इस दौरान डीआईजी पुष्पेन्द्रसिंह राठौड़, बीएसएफ के सैकेंड इन कमांड आलोक शुक्ला, सहायक कमांडेंट परवेश धनकड़ तथा ओम प्रकाश राठौड़, भंवरलाल टावरी, गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू', मारवाड़ी महासभा के ठाणे जिला के अध्यक्ष ओम प्रकाश राठी, बीकानेर के भाजपा के अध्यक्ष अखिलेश सिंह ने स्थानीय पार्षद संजय गुप्ता के साथ अनेकों ने पौधारोपण में भागीदारी निभाई।

जहां तक रिश्तों का सवाल है तो लोगों का आधा वक्त तो आज कल अनजान लोगों को इम्प्रेस और अपनो को इग्नोर करने में चले जाता है।

परिचय सम्मेलन होगा आयोजित

मुख्य अतिथि रामकुमार भूतड़ा अध्यक्षता रामअवतार जाजू करेंगे

इंदौर। आगामी 8 अक्टूबर को दस्तूर गार्डन फूटी कोठी रोड, इंदौर पर श्री महेश सामाजिक पारमार्थिक संस्था द्वारा अ.भा.माहेश्वरी विवाह योग्य युवक-युवती एवं विशिष्ट प्रत्याशी परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रामकुमार भूतड़ा अध्यक्ष अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन एवं विशेष अतिथि पंकज अटल संगठन मंत्री म.प्र. पश्चिमांचल माहेश्वरी सभा व अतिथि लखनलाल नागोरी खण्डवा होंगे। अध्यक्षता उद्योगपति व समाजसेवी रामअवतार जाजु करेंगे। इसमें सम्मान समारोह का आयोजन भी होगा। इस आयोजन के संयोजक श्यामसुंदर सारडा रहेंगे। अधिक जानकारी के लिए स्वागत अध्यक्ष सुनील मालू, कोषाध्यक्ष डॉ. वासुदेव काबरा बड़नगर, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेश मंडोवरा, उपाध्यक्ष कमलकिशोर लड्ढा आदि से सम्पर्क किया जा सकता है।

डॉ. वत्सल को कार्डियोलॉजी में डिग्री

शुजालपुर। वरिष्ठ समाजसेवी एवं शुजालपुर के वरिष्ठ अभिभावक स्व. श्री मोतीलाल कयाल के सुपोत्र, डॉ. प्रदीप कयाल सर्जन-अशोकनगर (गुना) के भतीजे एवं अरुण कयाल के सुपुत्र डॉ. वत्सल कयाल (माहेश्वरी) को डी.एम. (कार्डियोलॉजी) की डिग्री डॉ. राममोहन लोहिया इंस्टिट्यूट ऑफ मेडीकल साइंस, नईदिल्ली, गुरुगोविंदसिंह इन्द्रप्रस्थ, विश्वविद्यालय, नईदिल्ली से प्राप्त हुई। उन्होंने इसमें उच्चतम अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त कर प्रावीण्य सूची में अपना स्थान सुनिश्चित किया है। उक्त उपलब्धि हेतु उन्हें ''स्वर्ण पदक'' हेतु भी चयनित किया गया।

शिक्षिकाओं का किया सम्मान

उज्जैन। श्री माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत महिला मंडल द्वारा विश्व साक्षरता दिवस पर समाज की दो शिक्षिकाएं अनिता काबरा एवं निर्मला माहेश्वरी का शॉल श्रीफल से सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष हेमलता गाँधी, सचिव मनोरमा मंडोवरा, प्रदेश सचिव उषा सोडानी, शांता मंडोवरा, रुक्मणी भूतड़ा, पुष्पा मंत्री, रेखा मंत्री, मंजू लखोटिया आदि उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन संगीता भूतड़ा ने किया और आभार माधुरी राठी ने माना।

मालू ने किया सामूहिक श्राद्ध तर्पण

इन्दौर। भाजपा नेता और खनिज विकास निगम के पूर्व उपाध्यक्ष गोविन्द मालू ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी देश के शहीदों, महापुरुषों, भाजपा और आरएसएस के दिवंगत कार्यकर्ताओं, स्वयं सेवकों, नेताओं, प्रचारकों, संतो और कोरोना योद्धाओं का श्री हंसदास मठ में संस्था आनन्द गोष्ठी द्वारा श्राद्ध कर तर्पण कराया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सांसद शंकर लालवानी, जगमोहन वर्मा, श्रीहरी अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

गरबा महोत्सव का किया आयोजन

भीलवाड़ा। आर. के. आर. सी. व्यास माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वावधान में गरबा महोत्सव का आयोजन अध्यक्ष इंदिरा हेड़ा और सचिव चेतना जागेटिया के नेतृत्व में महेश भवन पर किया गया। प्रचार मंत्री मीनू झंवर ने बताया कि गरबा आयोजन के अंतर्गत बच्चों के फैंसी ड्रेस राउंड के पश्चात मंडल की सदस्याओं द्वारा गरबा नृत्य किया गया। इसके उपरांत धार्मिक प्रश्नोत्तरी रखी गई, जिसके अंतर्गत महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। गरबा कार्यक्रम की संयोजिका सुनीता मूंदड़ा, दीपशिखा शारदा एवं प्रिया न्याति ने बताया कि कार्यक्रम के अंत में बेस्ट स्टेप, बेस्ट ड्रेसेस और प्रश्नोत्तरी के अंतर्गत विजेता रही सदस्याओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय के साथ सांत्वना पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम में मंडल की लाड देवी लड्ढा, वंदना नवाल, स्नेहलता तोषनीवाल, चंद्रकांता गगरानी, सुनीता नाराणीवाल, सुमन दरगड, विनीता नवाल, रंजना बिड़ला, सरोज सोमानी, सुचिता कोगटा, आशा दरगड़ आदि का विशेष सहयोग रहा।

अपने शब्दों में ताकत डालें आवाज में नहीं, क्योंकि फूल बारिश से खिलते हैं, तुफानों से नहीं।

हास्य ऑक्सीजन का विमोचन

उज्जैन। जूना पीठाधीश्वर, आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री अवधेशानंद गिरीजी महाराज एवम पर्यावरणविद स्वामी सच्चिदानंदजी महाराज ने कोरोना के द्वितीय चरण में लिखित हास्याक्सिजन का मुस्कुराता विमोचन किया। हास्य व्यंग्य, आनंद, ठहाके, मस्ती से भरपूर पुस्तिका के लेखक एवम संपादक शैलेंद्र व्यास (स्वामी मुस्कुराके) ने समस्त अतिथिगण को प्रति भेंट की। जूनापीठाधीश्वर स्वामी श्री अवधेशानंदजी ने कहा कि मानव को मुस्कुराहट ईश्वर प्रदत्त उपहार है। मनुष्य आनंद का ही पर्याय है। हंसाने वाले सदैव आदरणीय होते है। स्वामी चितानंदजी ने कहा कि खुश रहना हो तो, अपनी फितरत में एक बात शुमार कर लो। ना मिले कोई अपने जैसा तो खुद से ही प्यार कर लो। कार्यक्रम का संचालन अंतर्राष्ट्रीय कवि अशोक भाटी ने किया। ऋषिमुनि प्रकाशन के निदेशक पुष्कर बाहेती ने आभार व्यक्त किया।

माहेश्वरी की पुण्यतिथि पर आयोजन

जायस (उ.प्र.)। पंकज माहेश्वरी स्मृति महाविद्यालय, नन्दग्राम, जायस (उ.प्र.) में स्मृतिशेष स्व. श्री पंकज माहेश्वरी की पुण्यतिथि पर वृहद पौधारोपण कर प्रबंधक मनोज माहेश्वरी, कालेज परिवार के वरिष्ठ घनश्याम माहेश्वरी व प्राचार्य, शिक्षक एवं छात्र-छात्राओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. आशुतोष पाण्डेय ने स्व. श्री पंकज के चरित्र चिंतन पर प्रकाश डालते हुये छात्र-छात्राओं से उनके सपनों को पूरा करने का आह्वान किया। साथ ही हिन्दी दिवस के अवसर पर 'आधुनिक भारत में हिन्दी भाषा के उत्थान और पतन' शीर्षक पर एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित हुई। घनश्याम माहेश्वरी एवं मनोज माहेश्वरी द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। प्राचार्य डॉ. विजयशंकर मिश्रा ने आभार व्यक्त किया।

जो बाहर की सुनता है वो बिखर जाता है जो भीतर की सुनता है, वो संवर जाता है।

रक्तमित्र दिलीप के. भंसाली सम्मानित

रतलाम। वैश्यजन के हितार्थ कार्य कर रही प्रमुख संस्था वैश्य प्रादेशिक महासम्मेलन का दो दिवसीय कार्यक्रम देवश्री गार्डन सागोद रोड रतलाम पर आयोजित किया गया। इसमें रक्तदान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहे स्व. श्री कन्हैयालाल भंसाली व स्व. श्रीमती गंगादेवी भंसाली के सुपुत्र दिलीप के. भंसाली (रक्तदान जीवनदान समूह के संस्थापक) को भी उनके रक्तदान के प्रति समर्पण भाव व लोगो में रक्तदान के प्रति जागरूकता लाकर लोगो को इसके लिए प्रेरित करने के उपलक्ष्य में मप्र सरकार के पूर्व मंत्री व वैश्य समाज के अध्यक्ष उमाशंकर गुप्ता, डीआरएम विनीत गुप्ता तथा समिति के सदस्यों द्वारा सम्मानित किया गया। संस्था के सहकोषाध्यक्ष शीतल भंसाली ने बताया कि 58 वर्षीय श्री भंसाली अपने जीवन काल में अब तक 99 बार रक्तदान कर चुके है।

तिरंगा रैली का किया आयोजन

उज्जैन। श्री माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत महिला मंडल गोलामंडी द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अमृत महोत्सव के अंतर्गत स्थानीय स्तर पर संस्था अध्यक्ष हेमलता गांधी, प्रदेश सचिव उषा सोड़ानी एवं संस्था सचिव मनोरमा मंडोवरा के नेतृत्व में तिरंगा रैली निकाली गई। जिला स्तर पर आयोजित परेड, प्रतियोगिता एवं कजरी तीज सिंजारा, नृत्य नाटिका प्रतियोगिता में मंडल को जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इसमें आरती सोड़ानी, मनीषा राठी, ज्योति राठी, रेखा मंत्री, ममता बांगड, निशा मूँदड़ा, सुमन माहेश्वरी, सीमा पलोड, शिल्पा जाँवधिया और किंजल सोड़ानी की भागीदारी रही।

रक्तदान शिविर का किया आयोजन

अहमदाबाद। माहेश्वरी युवा संगठन, शाहीबाग द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें समाजबंधुओ के अपार सहयोग से 298+ यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

महिला संगठन प्रदेश अध्यक्ष का ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण

बहादुरगढ़। हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एंड कश्मीर एवं चंडीगढ़ की प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष सुमन जाजू, बहादुरगढ़ ने इस सत्र में आठ नए संगठन बनाएं तथा अब ऐसे 4-5 संगठनों में उन्होंने भ्रमण किया। इनमें 13 सितम्बर को माहेश्वरी महिला मंडल, पानीपत (हरियाणा) में पहुंची एवं सदस्यों से सभी तीज एवं गणगौर आदि त्यौहारो को सामूहिक रूप से मनाने के लिए आग्रह किया। सरोज सारडा (प्रादेशिक संगठन मंत्री) उनके साथ रही। 16 एवं 17 सितंबर 2022 को पंजाब क्षेत्र के जैतो मंडी, रामा मंडी एवं कालावाली आदि संगठनों का भ्रमण करते हुए बठिंडा पहुंची। माहेश्वरी महिला संगठन एवं माहेश्वरी सभा, बठिंडा के पदाधिकारियों द्वारा उनका स्वागत किया गया। बठिंडा संगठन की सचिव अंजू मालपानी के यहां पर एक मीटिंग रखी गई। श्रीमती जाजू ने 9-10-11अक्टूबर को राष्ट्रीय महिला संगठन के होने वाले कार्यक्रम शंखनाद में सभी से कोटा (राजस्थान) पहुंचने का आह्वान किया। पंजाब राज्य भ्रमण के दौरान पूनम राठी (राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य), बठिंडा महिला संगठन अध्यक्ष सविता होलानी एवं सचिव अंजू मालपानी, कालावाली महिला संगठन अध्यक्ष वीणा होलानी और रिंपी कोठारी वरिष्ठ सदस्य प्रादेशिक कंप्यूटर समिति साथ रहीं।

माहेश्वरी महिला मंडल की बैठक सम्पन्न

लखनऊ। माहेश्वरी महिला मंडल की सितंबर माह की बैठक शारदा राठी के निवास स्थान पर सम्पन्न हुई। पितृपक्ष के अवसर पर भगवद् गीता के सातवे अध्याय के पाठ का रितिका राठी ने सभी को श्रवण कराया और राम नाम का सभी ने कीर्तन किया। ममता राठी ने नवरात्री व दीपावली के अवसर पर हैंडीक्राफ्ट की प्रदर्शनी भी लगाई। सुधा बागडी ने मनोरंजक गेम और तम्बोला खिलाया। राष्ट्रीय गान के साथ मीटिंग का समापन हुआ। उक्त जानकारी अध्यक्ष नीता सादानी व मंत्री आभा काबरा ने दी।

अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन की प्रबंधकारिणी समिति बैठक 16 अक्टूबर को नाथद्वारा में

पुष्कर। अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवासदन पुष्कर की प्रबंधकारिणी समिति के इस सत्र की तृतीय बैठक 16 अक्टूबर 2022 रविवार को दोपहर 01 बजे नाथद्वारा शाखा के श्रीनाथ भवन में आयोजित होगी। यह जानकारी सेवा सदन के महामंत्री रमेश छापरवाल ने दी। श्री छापरवाल ने बताया कि इस बैठक में सेवासदन के जगन्नाथपुरी एवं नासिक में भवन निर्माण, अजमेर में प्रस्तावित छात्रावास, बद्रीनाथ भवन, अयोध्या में प्रस्तावित भवन के विषयों के साथ वार्षिक साधारण सभा की तिथि सुनिश्चित करने पर चर्चा होगी।

आइलैंड चोटी पर फहराया ध्वज

सिलीगुड़ी। समाज सदस्य आमोद राधिका मीमाणी (मूलतः सुरतगढ निवासी) के 32 वर्षीय सुपुत्र नयन ने पर्वतारोहण में कीर्तिमान बनाया। गत 7 सितम्बर को नयन ने दृढ़ संकल्प से 6189 मीटर (20 हजार फुट से भी ज्यादा) ऊँची आइलैंड चोटी पर चड़ाई प्रारम्भ की। अखिरकार 70% नुकीली चट्टानों तथा 30% बर्फ से ढकी खड़ी चोटियों को साहसपूर्वक पार करते हुए गत 16 सितम्बर को आइलैंड के शिखर पर ध्वज लहरा ही दिया। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि की प्रशंसा की।

डॉ. झंवर की स्मृति में उपचार वैन लोकार्पित

वाराणसी। डॉ. वेणू गोपाल झंवर द्वारा संचालित मानसिक रोगियों को सेवा देने वाली संस्था 'देवा फाउंडेशन' के तत्वावधान में आयोजित एक कार्यक्रम में आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. दयाशंकर मिश्र 'दयालुजी' ने निःशुल्क मोबाइल मानसिक उपचार वैन का लोकार्पण किया। मानसिक रोग से पीड़ित गांव के लोग लोक-लाज की हिचक के कारण इलाज के लिए शहर आने से कतराते हैं। अब पूरी तरह से विकसित तथा विशेष रूप से डिजाइन की गई वैन ग्रामीण क्षेत्र में पहुंचकर वहां के लोगों को मानसिक चिकित्सा सुलभ कराएगी। पूरी तरह से वातानुकूलित इस वैन में चिकित्सकों के लिए चार सीट, एक परीक्षा कक्ष, एक शौचालय, एक पेंट्री, एक बार में छः रोगियों हेतु प्रतीक्षा क्षेत्र, फार्मेसी, पचास कुर्सी, दो टेंट, स्पीकर, माइक, प्रोजेक्टर, जेनरेटर और टेलीविजन आदि की व्यवस्था है।

ट्रेड मार्जिनक्याप पर नया कानून

निजामाबाद। समाजसेवी पुरुषोत्तम सोमानी ने विगत 4 वर्षों से दवाओं के मूल्य नियंत्रण पर अभियान छेड़ रखा है। दवाइयों के एमआरपी पर कुछ आवश्यक दवाइयों को छोड़कर कोई नियंत्रण या कानून न होने से निर्माता मनमाने तरीके से एमआरपी प्रिंट कर रहे हैं। इससे उपभोक्ता बहुत ही अधिक कीमत पर दवाई खरीद कर आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे हैं। श्री सोमानी ने इस पर 30% का ट्रेड मार्जिनक्याप लाने के लिए सरकार पर दबाव बनाया। इससे 8 मार्च 2019 को सरकार द्वारा ट्रायल बेसिस पर कैंसर की 526 दवाइयों पर 30% का ट्रेड मार्जिनक्याप लगाने से इन दवाइयों की एमआरपी 90% तक कम हो गई। अब बाकी सभी दवाइयों पर ट्रेड मार्जिनक्याप लगाने के लिए DPCO 13 के कानून में संशोधन करना जरूरी था। इसलिए सरकार ने अभी-अभी कानून में संशोधन किया है। अब सरकार ने 100 ड्रग्स पर ट्रेड मार्जिनक्याप करने का निर्णय लिया है, याने 10000 से 12000 रुपये तक की दवाइयों की MRP 80 से 90% तक कम हो जाएगी। मैन्युफैक्चर के सेलिंग प्राइस और एमआरपी के डिफरेंस को ट्रेड मार्जिन कहा जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि मैन्युफैक्चरर अगर दवाई 100 रु. में बेचता है तो उसपर एमआरपी 130 होना चाहिए। यानी 30% ट्रेड मार्जिनक्याप हुआ। वर्तमान में मैन्युफैक्चरर 100 रुपए में दवाई बेचता है तो उस पर एमआरपी रू. 5000 तक प्रिंट की जाती है याने 5000% ज्यादा। अभी-अभी सोमानीजी ने फाइनेंस मिनिस्टर श्रीमती निर्मला सीतारमन से मुलाकात कर उन्हें अवगत कराया कि एमआरपी पर सरकार का नियंत्रण न होने से 135 करोड़ जनता ज्यादा एमआरपी की वजह से आर्थिक संकट झेल रही है और साथ ही साथ सरकार को GST और आयकर का करोड़ों रुपए का नुकसान हो रहा है। फाइनेंस मिनिस्टर ने जल्दी ही इस पर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

कविता

कलयुगी मानव महान

उर में बन जाती यदि किसी की छवि खराब
नफरतों का उमड़ता सैलाब ही सैलाब
चाहे कितना भी कर ले वह उम्दा काम
बखूबी काम को दे अंजाम
समर्थक जपे उसका नाम
उसको न चाहने वाले, किसी भी तरह
करते ही रहते उसको बदनाम।।

झूठ होता नहीं शीघ्र बेनकाब
शातिर करते अपने तरीके से काज
क्षेत्र हो पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक
जादू किसी मंतरबाज का
सालों साल चलता बेहिसाब
किसी ईमानदार को मिलता सिर्फ
अतिशिष्ट पागल होशियार का खिताब
सोशल मीडिया कर रहा, दिलों पर राज।।

कलयुगी दुनिया का खेल निराला
जहाँ आकलन का तरीका अद्भुत
सोशल नेटवर्किंग हो गया अब
चरित्र का सर्टिफिकेट देने वाला।।

इस बात को समझकर भी
बन रहे जो अनजान
आँख मूंदकर चल रहे
करके स्वयं पर अभिमान
उनके लिए बस एक ही बात
सद्बुद्धि दे उन्हें भगवान
विवेक से करें हर कोई काम
तभी होगा जन-जन का कल्याण
कलयुगी मानव महान
कलयुगी मानव महान

सतीश लाखोटिया,
नागपुर, महाराष्ट्र

वैश्य महासम्मेलन की बैठक

शाजापुर। वैश्य महासम्मेलन कार्यकारिणी की प्रादेशिक बैठक रतलाम में गत दिनों संपन्न हुई। इसमें शाजापुर जिला अध्यक्ष कमल नारायण माहेश्वरी द्वारा माहेश्वरी टाइम्स पत्रिका का अवलोकन अशोक सोमानी वैश्य महासम्मेलन महामंत्री को करवाया गया।

तिरंगा यात्रा का किया आयोजन

नागदा। माहेश्वरी सोशल ग्रुप द्वारा गत 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस की 75 वीं वर्षगांठ पर जवाहरमार्ग स्थित माहेश्वरी भवन पर ध्वजारोहण किया गया एवं माहेश्वरी सोश्यल ग्रुप के तत्वावधान में तिरंगा यात्रा निकाली गई। तिरंगा यात्रा माहेश्वरी भवन से दो पहिया वाहन द्वारा निकाली गई। इसमें माहेश्वरी समाज, माहेश्वरी महिला मंडल, माहेश्वरी कपल ग्रुप एवं समस्त माहेश्वरी समाज साथ रहें। सोश्यल ग्रुप के राजेंद्र प्रीति मालपानी, झमक सुषमा राठी, घनश्याम सुनीता राठी, दिलीप ज्योति मोहता, मनोज नीता राठी, जमनालाल सीमा मालपानी एवम महेंद्र बिसानी, प्रतीक माहेश्वरी, रमेश मोहता, गोविंद मोहता, गिरिराज राठी, सतीश बजाज, नाथूलाल बांगड, प्रशांत राठी, आनंदीलाल गगरानी, प्रियेश मोहता, गौरव मालपानी, आदित्य नवाल सहित कई समाजजन रैली में मौजूद थे। उक्त जानकारी विपिन मोहता द्वारा दी गयी।

दिल्ली प्रदेश महिला संगठन की सेवा गतिविधियाँ

दिल्ली। गत 14 अगस्त के दिन आज़ादी के अमृत महोत्सव पर घर-घर तिरंगा अभियान में मोदी के आह्वान पर सभी साथियों ने अपने घर परिवार के साथ तिरंगा फहराया। 3 चयनित फोटोज राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए भेजी गयी। हर सीट हॉट सीट में भगवतीजी एवं शालिनीजी को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुए। तीज का सिंजारा भी मनाया गया। पूर्वी क्षेत्र ने तीज उत्सव पर श्रंगार, मेहंदी, लहरिया, चूड़ी के साथ सदस्याओं सहित ग्रुप डांस किया। फ्रीडम फाइटर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लेकर सदस्याओं ने देश के प्रति अपने भाव को सुंदर रूप में दर्शाया। कॉमेडी नाटिका व तीज की रानी और राजा की प्रतियोगिता में भी शामिल हुई। फ्रीडम फाइटर और तीज क्वीन किंग के जजमेंट में तीन प्रस्तुतियों को पुरस्कृत किया गया। पहले आओ पहले पाओ का इनाम भी दिया गया। बछबारस के दिन गाय और बछड़े का पूजन किया गया। पूजन के समय की फोटो प्रतियोगिता के अंतर्गत बड़ी सुन्दर फोटोज प्राप्त हुई। प्रथम स्थान पर पूर्वी क्षेत्र से नीरू लाहोटी एवं द्वितीय स्थान पर उत्तरी क्षेत्र से रेणु लड्ढा रहीं। उत्तरी क्षेत्र ने सुमन राठी के घर नंदोत्सव धूम धाम से मनाया। भजन और नृत्य ने मन मोह लिया। अति सुंदर तरीके से तम्बोला खेलाया गया। दिल्ली प्रदेश के पदाधिकारियों को तोहफे भी दिए गए। पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र की कृष्ण राधा की अनुपम झांकी ने मानो वृंदावन के रमणीय रास को जीवंत कर दिया और 90 सदस्याओं ने रोम-रोम में कृष्ण नाम को सरोबर कर दिया। गणेश चतुर्थी पर्व भी सभी ने धूमधाम से मनाया।

हेल्दी इंडिया का दिया संदेश

अमरावती (महाराष्ट्र)। सातुर्ना निवासी 16 वर्षीय कक्षा 12 वीं की छात्रा कु. पूर्णिमा महेश सारडा ने भारत की स्वतंत्रता की 75 वी वर्षगांठ, अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अपने घर पर गणमान्यो की उपस्थिति में इन लाईव कैमरा वीडियो शूटिंग से हेल्दी इंडिया का संदेश दिया। सभी की नजरो के सामने, मात्र 75 मिनिट में 75 तरह के 75 ग्लास ड्रिंक, पूरी तरह से प्राकृतिक, केमिकल/पल्प/अल्कोहल के बिना, आर्गेनिक फल एवं सब्जी से सर्व करने लायक बनाकर दिखाये। इस विश्व कीर्तिमान को कलाम्स वर्ल्ड रिकार्ड्स बुक में दर्ज किया गया।

भुतड़ा बने अध्यक्ष

मदनगंज-किशनगंज। भागचन्द भुतड़ा के सुपुत्र सुनील कुमार भुतड़ा को पण्डित फतहलाल नगर विकास समिति (मदनगंज-किशनगढ़) में निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। समस्त स्नेहीजनो ने हर्ष व्यक्त किया।

प्रदेश अध्यक्ष का किया स्वागत

बठिंडा। हरियाणा, पंजाब, हिमाचल जम्मू एंड कश्मीर माहेश्वरी महिला संगठन की प्रादेशिक अध्यक्षा सुमन जाजू (बहादुरगढ़) का प्रदेश भ्रमण के दौरान बठिंडा पहुंचने पर माहेश्वरी महिला संगठन बठिंडा द्वारा स्वागत किया गया। मंडल की सचिव अंजू मालपानी के घर पर एक मीटिंग की गई। श्रीमती जाजू ने इस भ्रमण कार्यक्रम के दौरान उनके साथ जाने के लिए पूनम राठी (राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य), श्रीमति होलानी (अध्यक्ष), अंजू मालपानी (सचिव) एवम रिम्पी कोठारी (कंप्यूटर समिति) के साथ-साथ सभी उपस्थित सभा सदस्यों एवं महिला मंडल का आभार व्यक्त किया।

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री के सलाहकार बने मालानी

थार (पाकिस्तान)। पाकिस्तान में रचे-बसे माहेश्वरी बन्धु भी अपनी सेवा-सदाचार-त्याग की पारम्परिक भावना के निर्वहन में कहीं भी कमतर नहीं हैं। इसी को देखते हुए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री माननीय शहबाज शरीफ ने डॉ. महेश मालानी (MNA) को अपना विशिष्ट सलाहकार नियुक्त किया है। डॉ. मालानी थार क्षेत्र के मीठी शहर के वासी हैं। सम्पूर्ण माहेश्वरी समाज ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

किसी को ज़रा सी खुशियाँ देकर देखिए, मन कितना हल्का होता है।

साक्षी का ICICI बैंक में चयन

किशनगढ़। समाज सदस्य सुनील कुमार भुतड़ा की सुपुत्री साक्षी का ICICI BANK CESB बांच (जोधपुर) में डिप्टी मैनेजर पद पर चयन हुआ। समस्त स्नेहजनो ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

अक्षय को अमेरिका में पीएच.डी.

वाराणसी। समाज सदस्य अखिलेश जाजू के सुपुत्र अक्षत ने पीईयु विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. से गत दिनों कम्प्यूटर साइंस इंजीनियरिंग में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

तनिष्का जेईई एडवांस में टॉपर

अहमदाबाद। जेईई (एडवांस) वर्ष 2022 की परीक्षा में जुसरी नागौर जिला निवासी और अहमदाबाद प्रवासी ललित मोहन काबरा की सुपौत्री व रमेशचंद्र काबरा की सुपुत्री तनिष्का काबरा ने अखिल भारतीय स्तर पर सोलहवां और महिला वर्ग में पहला स्थान प्राप्त किया है। तनिष्का अंतर्राष्ट्रीय कैमेस्ट्री ओलम्पियाड में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए रजत पदक प्राप्त कर चुकी है।

आस्था का कैंपस चयन

भीलवाड़ा। हुरडा निवासी आस्था डाड सुपुत्री दिनेश शैली डाड, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी हमीरपुर हरियाणा में कंप्यूटर साइंस में बी. टेक. तृतीय वर्ष की मेधावी छात्रा के रूप में अध्यनरत हैं। इनका अध्ययन के दौरान ही बैंगलोर की एक प्रतिष्ठित कम्पनी में साफ्टवेयर डेवलपमेंट के पद हेतु 24 लाख रुपये प्रतिवर्ष के पैकेज पर चयन हुआ।

कनुप्रिया करेगी यूएस से एमबीए

सहारनपुर। राजीव चांडक पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन व संगीता चांडक पूर्व अखिल भारतवर्षीय महेश्वरी महासभा कार्यसमिति सदस्य सहारनपुर उत्तर प्रदेश की सुपुत्री कनुप्रिया माहेश्वरी का विश्व की टॉप फाइव यूनिवर्सिटी में से एक कोलंबिया बिजनेस मैनेजमेंट स्कूल यूएस में एमबीए डिग्री कोर्स 2023 के लिए चयन हुआ है। वर्तमान में कनुप्रिया मुम्बई स्थित एक मल्टीनेशनल कम्पनी में कार्यरत हैं तथा कम्पनी द्वारा भी समाजसेवा में योगदान के लिये कनुप्रिया को सम्मानित किया गया है।

शिवानी को विशिष्ट उपलब्धि

डेगाना। शिवानी दरक सुपौत्री रामकवरी व स्व. श्री अमरचंद दरक एवं सुपुत्री शोभा देवी - दिनेश कुमार दरक ने जोधपुर स्तरीय फैशन डिजाइनर स्पर्धा में पहला स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

मेधावी को 95.6 प्रतिशत अंक

जयपुर। मेधावी चितलांगिया सुपुत्री अंकुर बल्लभ चितलांगिया ने सीबीएसई 12वीं की परीक्षा 95.6 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की। समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

निकिता बनी सीए

चारभुजाधाम (राज.)। बड़ी खट्टाली निवासी दिनेशचंद्र लड्ढा की सुपुत्री कु. निकिता लड्ढा ने सीए के दोनों ग्रुप की परीक्षा उत्तीर्ण की। समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

केशव की जेईई एडवांस में 220 वी रैंक

एक ही परिवार में तीन भाइयों का आईआईटी के लिए चयन हुआ

भीलवाड़ा। जेईई एडवांस के परिणाम में केशव समदानी पुत्र महावीर समदानी उदयलाल समदानी के 220 ऑल इंडिया रैंक व उनके छोटे भाई माधव समदानी सुपुत्र लोकेश समदानी ने ऑल इंडिया 8 हजार वीं रैंक प्राप्त की है। केशव व माधव शुरू से ही मेधावी छात्र रहे हैं। जेईई मेंस में भी केशव ने 99.75% परसेंटाइल, माधव ने 99 परसेंटाइल प्राप्त किये थे।

अपूर्व को गोल्ड मैडल

उदयपुर। समाज के वरिष्ठ रामनारायण समदानी के सुपौत्र और अजय-पूजा समदानी के सुपुत्र अपूर्व माहेश्वरी को बैंगलोर की क्राइस्ट यूनिवर्सिटी द्वारा बेस्ट स्टूडेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। इसके अंतर्गत बीकॉम (स्ट्रेटेजिक फाइनांस) और CMA (US) दोनो कोर्स में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने और हर क्षेत्र में अच्छी परफॉर्मेंस के लिए यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में इस अवार्ड के साथ गोल्ड मैडल प्रदान किया गया।

कितनी भी जान छिड़क लो, बदलने वाले बदल ही जाते हैं।

IS:1786

CM/L - 6943589

GBR TMT

THE STRENGTH WITHIN

www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

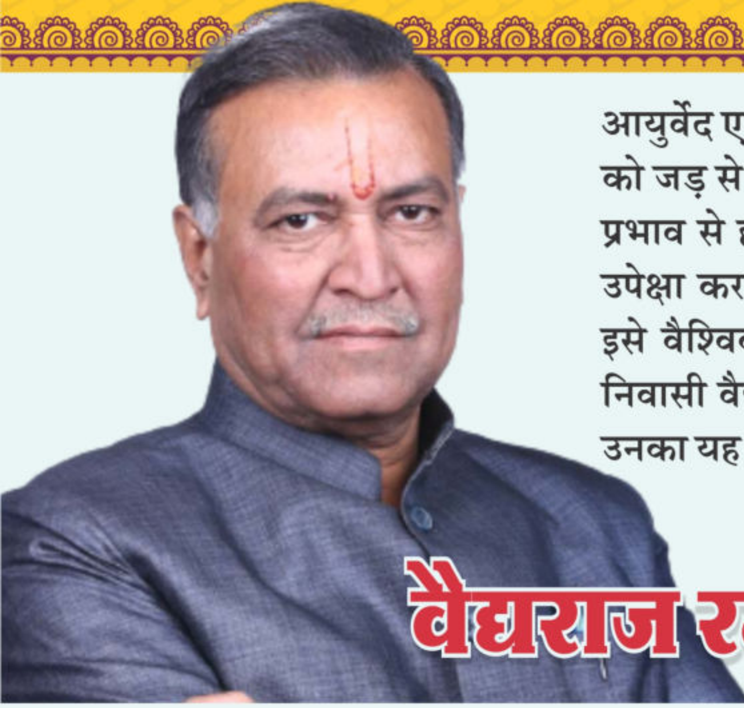

आयुर्वेद एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है और इसमें रोग को जड़ से समाप्त करने की अद्भुत क्षमता भी है। किंतु पाश्चात्य प्रभाव से हम आज अपनी ही इस प्रभावी चिकित्सा पद्धति की उपेक्षा कर रहे है। आमजन तक आयुर्वेद का प्रचार-प्रसार और इसे वैश्विक सम्मान दिलाना यही लक्ष्य बना रखा है, भोपाल निवासी वैद्यराज रमेश कुमार माहेश्वरी ने अपने जीवन का और उनका यह अभियान आज भी निरन्तर सतत् रूप से जारी है।

भारतीयता के ''पुजारी''

वैद्यराज रमेश कुमार माहेश्वरी

जमना हर्बल रिसर्च लिमिटेड तथा जमना फार्मास्युटिकल्स जैसी प्रतिष्ठित आयुर्वेद औषधि निर्माण शालाओं का प्रबंध संचालक के रूप में संचालन करने वाले भोपाल निवासी वैद्यराज रमेश कुमार माहेश्वरी का आयुर्वेद के क्षेत्र मे एक ऐसा प्रतिष्ठित नाम हैं, जो अनेकों रोगों पर प्रभावी आयुर्वेद औषधियों पर रिसर्च के उपरान्त उनका निर्माण कर निरन्तर इस चिकित्सा विधा को समृद्ध करने में जुटे हुए हैं। आमजन तथा चिकित्सकों तक आयुर्वेद को पहुंचाने के लिये श्री माहेश्वरी आयुर्वेद पर आधारित देश की प्रतिष्ठित और शीर्ष पत्रिका 'आयुष्मान' तथा मासिक समाचार पत्र 'आयुर्वेद चिंतन' का भी प्रकाशन कर रहे हैं।

वैद्यराज रमेश कुमार माहेश्वरी परिवार के साथ

योगदानों ने दिलाया सम्मान

वैद्यराज रमेशकुमार माहेश्वरी का जन्म 12 अप्रैल 1959 में स्व. कविराज डॉ. एस.के माहेश्वरी (डांगरा) के यहाँ हुआ। बचपन से ही आयुर्वेद चिकित्सा के प्रति सम्मान के भाव विरासत में ही मिले। अतः भोज आयुर्वेद महाविद्यालय भोपाल से इसी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर आपने भी अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए अपना जीवन आयुर्वेद को ही समर्पित कर दिया। वर्तमान में 500 से अधिक शास्त्रोक्त व पेटेंट आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण उनकी औषधि निर्माण इकाइयों में होता है। इन योगदानों के कारण ही वैद्यराज श्री माहेश्वरी म.प्र. शासन के उद्योग विभाग द्वारा राज्य स्तरीय पुरस्कार, अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन द्वारा 'आयुर्वेद

म.प्र. शासन के तत्कालीन उद्योग मंत्री मा. श्री कैलाश विजयवर्गीय से एस.एम.ई. अवार्ड प्राप्त करते हुए वैद्यराज रमेश कुमार माहेश्वरी

अखिल भारत वर्षीय आयुर्वेद महासम्मेलन के अध्यक्ष पद्मभूषण वैद्य श्री देवेन्द्र जी त्रिगुणा, वैद्यराज रमेश कुमार माहेश्वरी का सम्मान करते हुए

लोकसभा स्पीकर मा. श्री ओम बिरला जी का स्वागत करते हुए वैद्यराज रमेश कुमार माहेश्वरी

पीयूषपाणि' की उपाधि व श्री अवंतिका देशी चिकित्सक मंडल, उज्जैन द्वारा 'विशिष्ट सेवा सम्मान पत्र' से सम्मानित हो चुके हैं। अपने इन उद्योगों द्वारा वर्तमान में आप 350 से अधिक लोगों को रोजगार भी प्रदान कर रहे हैं। सेवा भारती आदि संस्थाओं के माध्यम से सेवाओं में भागीदारी रही है। कोविड-19 में तन-मन-धन व आयुर्वेद के माध्यम से सेवारत रहे। निःशुल्क अनेकों आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविरों का आयोजन भी किया। वर्तमान में आप अ. भा. आयुर्वेद महासम्मेलन दिल्ली, म.प्र. आयुर्वेद औषधि निर्माता संघ इंदौर व भोपाल चेम्बर ऑफ कॉमर्स के आजीवन सदस्य तथा म.प्र. लघु उद्योग संघ, म.प्र. फेडरेशन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, ऐसोसिएशन ऑफ इंडस्ट्रीज मंडीदीप व ऑल इंडिया आयुर्वेद औषधि मेन्युफेक्चरिंग ऐसोसिएशन, दिल्ली के सदस्य हैं।

समाजसेवा में भी सक्रिय योगदान

अपनी व्यावसायिक जिम्मेदारियों के बावजूद श्री माहेश्वरी गत 20 वर्षों से माहेश्वरी समाज एवं वैष्णव सम्प्रदाय की सेवा में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। इसी श्रृंखला में श्री जगदगूरू वल्लभाचार्य ट्रस्ट (भोपाल), सेवा भारती, आनंदधाम वृद्धाश्रम व म.प्र. आयुर्वेद महासम्मेलन भोपाल जिला के अध्यक्ष व प्रदेश संयोजक-बांगड मेडिकल वेलफेयर सोसायटी म.प्र. पूर्व के रूप में सेवा दे रहे हैं। म.प्र. पूर्व क्षेत्रिय प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के मानद मंत्री- अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा (मध्यांचल) के संयुक्त मंत्री व माहेश्वरी नागपुर (अ.भा. माहेश्वरी महासभा का मुखपत्र) के सलाहकार रहे हैं। प्रबंध न्यासी- श्री वैद्यराज श्रीकृष्णदास धनराज माहेश्वरी व आयुर्वेद पारमार्थिक ट्रस्ट, भोपाल तथा ट्रस्टी-ए बी माहेश्वरी एज्युकेशनल ट्रस्ट, इंदौर तथा अखिल भारतीय माहेश्वरी एज्युकेशन एण्ड चैरिटेबल ट्रस्ट कोटा, संस्थापक ट्रस्टी- श्री माहेश्वरी पारमार्थिक ट्रस्ट, भोपाल तथा आजीवन ट्रस्टी-म.प्र., महेश सेवा ट्रस्ट जबलपुर, भोपाल चेम्बर ऑफ कॉमर्स, माहेश्वरी प्रगति मंडल भोपाल, श्री माहेश्वरी समाज भोपाल 'वृहद', श्री महेश सेवा समिति भोपाल, श्री आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र चेन्नई, मध्यप्रदेश रोज सोसाइटी व श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर के ट्रस्टी के रूप में भी सेवा दे रहे हैं।

सीनियर सिटीजन

उम्र बढ़ी लेकिन उनका समाजसेवा का जज्बा वही रहा। आज उम्र के 77वें पड़ाव पर भी कई समाजसेवी संस्थाओं में सेवा दे रहे हैं नजीबाबाद निवासी विजयकुमार माहेश्वरी।

नि:स्वार्थ समाजसेवी विजयकुमार माहेश्वरी

आभा माहेश्वरी, अलीगढ़

वरिष्ठजन तो वो वट वृक्ष हैं जिनकी छत्र छाया में परिवार और समाज सभी सुरक्षित रहते हैं। जीवन पथ की विषम परिस्थितियों को सहने की क्षमता उनसे वरिष्ठ जन रूपी वटवृक्ष तले पल्लवित होने पर ही मिलती है। वरिष्ठ हमारे समाज के मूल कर्णधार हैं। ऐसे ही एक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी हैं श्री विजय कुमार माहेश्वरी (अधिवक्ता) जो 77 वर्ष की आयु में भी समाज सेवा और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और निरन्तर अपना योगदान सामाजिक सेवाओं में दे रहे हैं। पर्वत श्रृंखलाओं से जुड़ा नजीबाबाद उनकी जन्म भूमि है। वे अपने समाज के लिए पूर्णसमर्पित व्यक्तित्व हैं। विनम्रता, सरल सहजता, परोपकारीवृत्ति, आतिथ्य सत्कार उनके व्यक्तित्व को द्विगुणित कर देता हैं। किसी भी जरुरतमंद की सहायता के लिए तत्पर रहना उनकी सहजता का परिचायक है। वे अनेक संस्थाओं द्वारा अपने सामाजिक सराहनीय कार्यों के लिए सम्मानित किये गए हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने भी उनके सहयोग की अपने पत्र के माध्यम से प्रशंसा की है। मैं भी भाग्यशाली हूँ और गौरवान्वित हूँ कि ऐसे समाजसेवी,

बहन आभा के साथ विजयकुमार माहेश्वरी

निर्मल हृदय वाले मेरे बडे.भाई हैं। आज हमारे समाज को ऐसे ही वटवृक्ष की आवश्यकता है जो निरअहंकारी, निर्पेक्षभाव से समाज की सेवा में अपनाजीवन समर्पित करें।

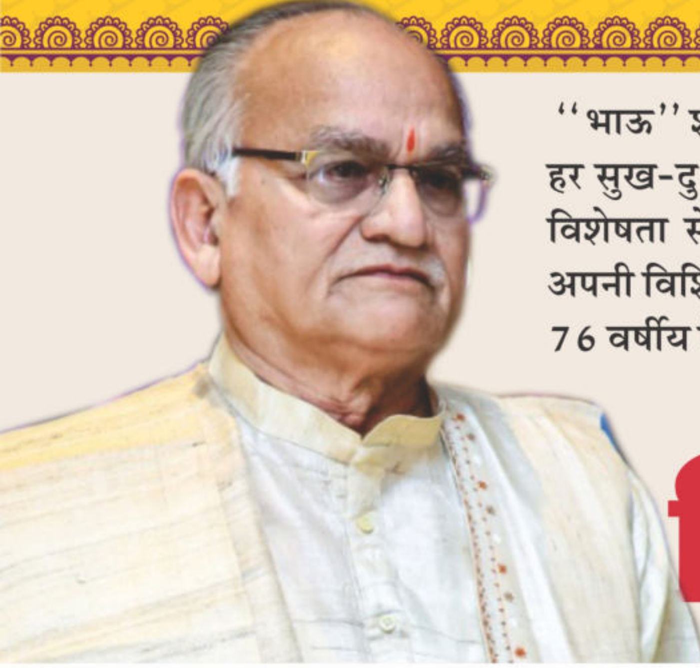

''भाऊ'' शब्द का हिन्दी अर्थ है, भाई। अर्थात् वह व्यक्ति जो हमारे हर सुख-दुःख में हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो। इसी विशेषता से न सिर्फ अपने गृहनगर दुर्ग अपितु पूरे छत्तीसगढ़ में अपनी विशिष्ट प्रतिष्ठा के साथ ''भाऊ'' के सम्बोधन से जाने जाते हैं, 76 वर्षीय विठ्ठल भूतड़ा।

जगदीश चाण्डक, दुर्ग

जन-जन के ''भाऊ'' विठ्ठल भूतड़ा

व्यक्ति उम्र से नहीं अपितु विचारों व कर्मों से जनमानस में आदर का पात्र होता है। कोई भी उम्र हो आपकी दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे मस्तक टेकती है। उनका सूत्र है, जब किसी से मिलो तो मुस्कुराते हुए मिलो पता नही किस मोड़ पर इस अनमोल ज़िंदगी की शाम से मुलाकात हो जाये। अपने योगदानों के कारण ही छत्तीसगढ़ के दुर्ग शहर के विठ्ठल भूतड़ा को केवल दुर्ग ही नहीं अपितु पूरा प्रदेश भाऊ के नाम से जानता है। किसी भी परिचित तो ठीक है अपरिचित की भी कोई परेशानी हो और उसने भाऊ से सम्पर्क किया तो उसकी समस्या का समाधान निश्चित ही है।

कम उम्र से ही समाजसेवा की शुरुआत

आपका जन्म 21 दिसम्बर 1946 को हुआ। आपने कम उम्र में ही जहाँ व्यापार की बारीकी सीख लीं, वहीं समाज के प्रति कुछ करने के अपने समर्पण भाव के साथ संगठन से भी जुड़े। परिवार और व्यापार की अपनी जिम्मेदारी को कुशलता से निभाते हुए विभिन्न संगठन से जुड़े व बड़ी जिम्मेदारी के पद लेकर पद के साथ न्याय करते हुए पूरी निष्ठा से उसे पूरा किया। यह गुण सरल व सहज नहीं है जो हमें आपके अंदर बड़ी सरलता व सहजता से मिलता है। 'सहयोग से सफलता' एवं 'सेवा संतुष्टि तक' यह आपके कार्य करने के मूलमंत्र हैं। श्री भूतड़ा ने बी.कॉम., एल. एल. बी. तक उच्च शिक्षा ग्रहण की, लेकिन स्व व्यवसाय को ही अपने जीवन की आजीविका बनाया। अन्तर्राष्ट्रीय सेवा संस्था लायंस क्लब से 20 वर्षो तक सम्बद्ध रहते हुए आपने जोन व रीजन चेयरमेन जैसे पदों पर भी अपनी सेवा दी

कई संस्थाओं को दी सेवा

सन 1963-1965 में आपने उपाध्यक्ष श्री माहेश्वरी नवयुवक मण्डल दुर्ग पद से अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन प्रारम्भ किया। उसके बाद सन 1965-1970 में सचिव श्री माहेश्वरी नवयुवक मण्डल दुर्ग, 1973-76 में अध्यक्ष श्री माहेश्वरी नवयुवक मण्डल दुर्ग, सन 1977-79 में सचिव श्री माहेश्वरी पंचायत, दुर्ग, सन् 1989-95 में उपाध्यक्ष श्री माहेश्वरी पंचायत दुर्ग, सन् 1995-98 में सचिव श्री माहेश्वरी पंचायत, दुर्ग, सन् 1997-2000 में महामंत्री छत्तीसगढ़ पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी सभा, 2006-2009 में अध्यक्ष श्री माहेश्वरी पंचायत दुर्ग, सन् 2009-12 में अध्यक्ष दुर्ग जिला माहेश्वरी सभा, वर्ष 2013-16 में उपाध्यक्ष छत्तीसगढ़ प्रदेश माहेश्वरी सभा रहे। वर्ष 2016-19 में अध्यक्ष छत्तीसगढ़ प्रदेश माहेश्वरी सभा के पद पर दायित्व का निर्वहन करते हुए वर्तमान में कार्यसमिति सदस्य अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा हैं। श्री भूतड़ा श्रीमती केसरबाई सोनी छात्रावास मुंबई, सेठ मीठालाल राठी छात्रावास भिलाई, श्री बांगड़ मेडिकल वेलफेयर सोसाइटी भीलवाड़ा, श्री आदित्य विक्रम बिड़ला मेमोरियल व्यापार सहयोग केंद्र चेन्नई व श्री खींवज माता ट्रस्ट पोकरण के ट्रस्टी हैं। छत्तीसगढ़ महेश सेवा निधि, इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी, चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज, अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर के आजीवन सदस्य भी है। नागरिक सहकारी बैंक दुर्ग एवं बुलढाणा अर्बन कॉपरेटिव बैंक सोसायटी के सदस्य के रूप में सेवा भी दे रहे है।

वैसे तो गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा केवल 21 कि.मी. की है, लेकिन इसे दंडवत रूप में अर्थात् लोट-लोटकर करने के कारण यह अत्यंत कठिन परिक्रमा में से एक मानी जाती है। मुंबई निवासी 68 वर्षीय मनमोहन राठी ने उम्र के इस पड़ाव पर भी 125वीं दंडवती परिक्रमा का कीर्तिमान बनाया है।

125 दंडवती परिक्रमा का बनाया कीर्तिमान

मनमोहन राठी

हिन्दू धार्मिक स्थलों में सबसे महान तीर्थ स्थल ब्रज धाम है, जिसमें गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा के बारे में कहा जाता है कि चाहे चारो धाम की यात्रा कर लो या फिर गिरिराज पर्वत की 21 किलोमीटर की परिक्रमा, दोनों बराबर मानी जाती है। यह पर्वत छोटे-छोटे बालू पत्थरों से बना हुआ है। इस पर्वत की लंबाई 8 कि.मी. है। हिन्दू धर्म में मान्यता है कि इसकी परिक्रमा करने से मांगी गई सभी मुरादें पूरी हो जाती हैं। यह आस्था की अनोखी मिसाल है। इसीलिए तिल-तिल घटते इस पहाड़ की लोग लोट-लोट कर परिक्रमा पूरी करते हैं।

ऐसे हुई परिक्रमा की शुरुआत

ईश्वर में आस्था है, तो उलझनों में भी रास्ता है। इस कथन में विश्वास रखने वाले मन मोहन राठी का विभाजित भारत में वर्ष 1954 में सहारनपुर में संयुक्त परिवार में जन्म हुआ। श्री राठी के माता-पिता भी अत्यंत धार्मिक स्वभाव के थे। अतः धार्मिक भावना उन्हें विरासत में मिली। 55 वर्ष की आयु में उन्हें परमात्मा के सत्यस्वरूप को पहचानने की दिव्य अनुभूति हुई। उन्हें ईश्वर की सर्वोच्च सत्ता के प्रति खिंचाव महसूस हुआ। इसी से प्रेरित हो पहली दंडवती परिक्रमा वर्ष 1978 में लगायी फिर गृहस्थ जीवन से बीच-बीच में अवकाश लेकर परिक्रमा लगाते रहे। वर्ष 2010 में इकलौते पुत्र के विवाह के बाद, परिवार सहित महानगर मुंबई के महेश नगर, गोरेगांव पश्चिम में बस गए।

विषम परिस्थिति भी बनी सहज

शुरुआती दिनो में व्यापार में घाटा हुआ और वर्ष 2012 में एक समय ऐसा भी आया कि वापस सहारनपुर जाने के बारे में सोचना पड़ा। लेकिन तभी ठाकुरजी की परिक्रमा का मन बना और गोवर्धनजी चले गए। तब से आज तक प्रत्येक माह में 10 दिन गोवर्धनजी रहकर दंडवती परिक्रमा लगा रहे हैं और फ़िर ऐसा कुछ चमत्कार हुआ कि सहारनपुर वापस जाने के बारे में कभी सोचने की जरुरत ही नहीं पड़ी। चाहे झुलसती धुप हो, कंपकपाती ठण्ड या फिर चाहे घनघोर बरसात हो किसी बाधा से नहीं घबराते। भगवान की दिव्य अलौकिक शक्ति से पथरीली राह भी उन्हें पुष्पों सी कोमल लगने लगती है। अब तक ठाकुर जी की कृपा से 125 से ज्यादा दंडवती परिक्रमा लगा चुके हैं और इसके साक्षी है स्वयं श्री ठाकुर जी। ठहरने का स्थान माहेश्वरी भवन गोवर्धन और परिक्रमा का संकल्प दिलाने वाले पर परम पूज्यनीय गोसाई जी, श्री हर्षवर्धन कौशिक।

परिवार भी साथ-साथ

इस के साथ राठीजी परिवार में मुखिया की जिम्मेदारी या व्यापार की जिम्मेदारी या रिश्तेदारी या समाज के प्रति जिम्मेदारी हो सब को अच्छे से भली भाति निभा रहे हैं। भाजपा और आरएसएस को आदर्श मानते हुए राजनीति में और क्रिकेट में बहुत रूचि रखते हैं। परिवार में अपने इकलौते पोते कल्प ऋषि राठी के बहुत करीब है। उनकी बस अब एक कामना है ठाकुर जी से, जब तक जीवन है ये क्रम यू ही बना रहे।

कैसे कह दू की मेरी हर पुकार बेकार हो गई,
मै जब भी रोया मेरे श्याम को खबर हो गई।

-मन मोहन राठी

व्यवसायी तन व मानवसेवी मन का संगम माहेश्वरी समाज की विशेषता रही है। इसी का परिणाम विभिन्न सेवा प्रकल्पों के रूप में नजर आता है। इसी विशेषता को अपनी करनी व कथनी से चरितार्थ कर रहे हैं, ख्यात व्यवसायी, उद्यमी व समाजसेवी अजमेर निवासी 67 वर्षीय रमाकांत बाल्दी।

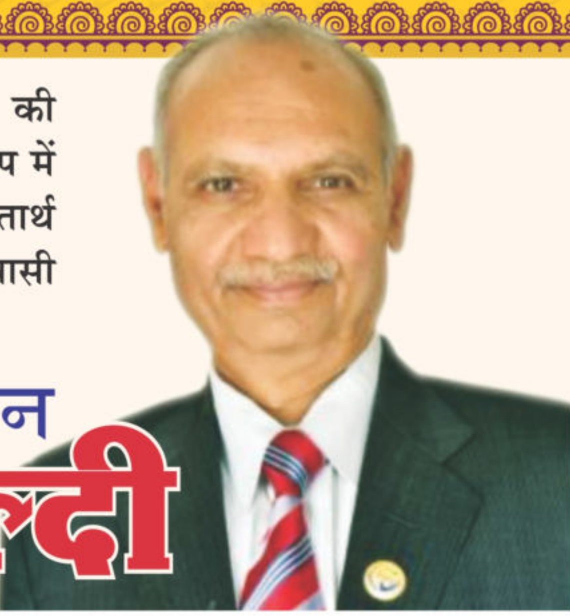

व्यवसायी तन में मानवसेवी मन

रमाकान्त बाल्दी

अजमेर (राज.) निवासी रमाकांत बाल्दी की व्यवसाय जगत में पहचान लेडअलोय, लेड ग्रे ऑक्साईड तथा "एन्वोल्टा" ब्राँड बैटरी के निर्माता के रूप में है। उद्यम जगत में उनके इन योगदानों की विशिष्ट प्रतिष्ठा है। इन सबमें व्यस्तता के बावजूद श्री बाल्दी समाजसेवा के क्षेत्र में अपना योगदान देने में भी पीछे नहीं रहे। श्री बाल्दी अजमेर माहेश्वरी समाज जिलाध्यक्ष के रूप में सिविल सर्विसेस मार्गदर्शन सेमीनार व टेस्ट परीक्षा के आयोजन पर केंद्रीत हैं। इसके साथ ही कक्षा 10 से 12वीं तक के विद्यार्थियों के करियर काउंसिग मार्गदर्शन सेमीनार का आयोजन करते हैं। सदभावना यात्रा के रूप में माहेश्वरी दम्पत्तियों को नेपाल, श्रीलंका व सिंगापुर बाली की विदेश यात्रा करवा चुके हैं। भव्य व गरिमामय प्रतिभा सम्मान व अभिनन्दन समारोह भी आयोजित कर चुके हैं। अ.भा. माहेश्वरी महासभा के कार्यसमिति सदस्य के रूप में भी सेवा दे रहे हैं।

विरासत में मिली समाजसेवा

श्री बाल्दी का जन्म 4 मार्च 1955 को पीसांगन जिला अजमेर (राज.) में प्रख्यात समाजसेवी स्व. श्री रामजस बाल्दी तथा स्व. श्रीमती सरस्वती देवी बाल्दी के यहाँ हुआ। अतः समाजसेवा विरासत में ही मिली। फिर जब शकुंतला बाल्दी का साथ जीवनसंगिनी के रूप में मिला तो यह सेवायात्रा दौड़ लगाने लग गयी। श्री बाल्दी के छोटे भाई सेवा निवृत्त आईएएस डॉ. श्रीकांत बाल्दी हिमाचल सरकार के चीफ सेक्रेटरी रहे और वर्तमान में रेरा चेयरमेन के रूप में सेवा दे रहे हैं। डॉ. बाल्दी को आजादी के बाद माहेश्वरी समाज का पहला आईएएस होने का गौरव प्राप्त है। आपके परिवार में बी.ई. तक शिक्षित पुत्र अभिषेक व बी.ई., एम.बी.ए. तक शिक्षित पुत्र अभिनव एवं विवाहित पुत्री आभा करवा (दिल्ली) शामिल हैं, जो प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से आपके पदचिन्हों पर ही अग्रसर हैं।

समाजसेवा में चहुंमुखी योगदान

श्री बाल्दी अपनी तमाम व्यस्तता के बावजूद भी समाजसेवा के क्षेत्र में भी सदैव सक्रिय योगदान देते रहे हैं। इसके अंतर्गत अजमेर जिला माहेश्वरी सभा, श्री माहेश्वरी सेवा परिषद-अजमेर व प्रभात क्लब, दौलतबाग (अजमेर) को अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश वैश्य महासम्मेलन-अजमेर जिला को संरक्षक एवं महेश शिक्षण संस्थान (अजमेर), मथुरा प्रसाद गुलाब देवी आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय (अजमेर) एवं पुष्कर गौ आदि पशुशाला (अजमेर) को आजीवन सदस्य के रूप में सेवा दे रहे हैं। श्री आनंद गोपाल गौशाला (अजमेर) को उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन (पुष्कर) को कार्यसमिति सदस्य तथा श्री बांगड़ माहेश्वरी मेडिकल वेलफेयर सोसायटी व आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र को ट्रस्टी के रूप में सेवा दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त अध्यक्ष, क्षेत्रीय अध्यक्ष, सम्भागीय अध्यक्ष व प्रान्तीय केबिनेट सचिव - लायन्स क्लब, इन्टरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 323 ई2 व वर्तमान 3233 ई2 तथा चैयरमेन लायन्स क्लब, अजमेर चेरिटेबल ट्रस्ट के रूप में भी सेवा दे चुके हैं।

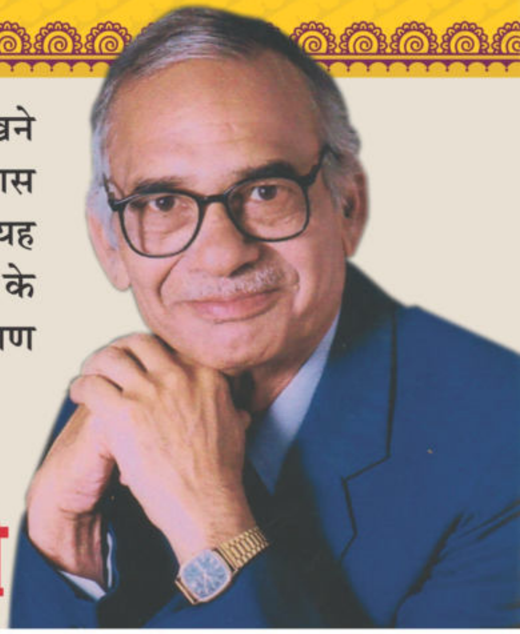

शिक्षाविद्, समाजसेवी एवं मोटीवेशनल रायटर के रूप में पहचान रखने वाले डॉ. एच. एल. माहेश्वरी ऐसे लोगों में से एक हैं जो अपनी कलम से खास हैं। उनकी शख्सियत में भी कुछ ऐसी बात है जो उन्हें खास बनाती है। यह सब कुछ धन-दौलत या शोहरत के कारण नहीं बल्कि बिना शोर-शराबे के मानवीय गरिमा एवं नैतिक मूल्यों के साथ शिक्षा-जगत एवं समाज कल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के कारण है।

प्रेरणा के ''अक्षय स्त्रोत''

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी

हीरालाल मालानी जिनका प्रचलित नाम डॉ. एच. एल. माहेश्वरी है, का जन्म 16 सितम्बर 1937 में ग्राम शमशाबाद जिला विदिशा में श्री गन्नूलाल माहेश्वरी एवं श्रीमती रामकुंवर के यहाँ हुआ था। माहेश्वरी की प्रायमरी तक शिक्षा ग्राम शमशाबाद में हुई, इसके बाद विदिशा से हाईस्कूल और इन्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा के लिए भोपाल गए जहाँ से बी.कॉम और एम.कॉम की परीक्षा पास की। इसके पश्चात् विक्रम विश्वविद्यालय की प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान के साथ एम.ए. अर्थशास्त्र की परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

व्यस्तता में भी मानवता की सेवा

म.प्र. लोकसेवा आयोग से चयन के बाद डॉ. माहेश्वरी की नियुक्ति सहकारिता विस्तार अधिकारी के पद पर आगर मालवा में हुई। शासकीय सेवा में रहते हुए भी कुछ कर गुजरने की तमन्ना के कारण उन्होंने समाजसेवा की ओर अपने कदम बढ़ाए और नेहरू स्मृति बाल मंदिर, लाल बहादुर शास्त्री बाल निकेतन, महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, सार्वजनिक वाचनालय, प्रौढ़ महिलाओं के लिए संक्षिप्त पाठ्यक्रम की संस्था आदि की स्थापना कर उनका सफलतापूर्वक संचालन किया। उस समय आगर में उच्च शिक्षण की सुविधाएँ नहीं थीं। डॉ. माहेश्वरी के प्रयास एवं जनसहयोग से जुलाई 1966 से श्री नेहरू महाविद्यालय का शुभारंभ हो गया। महाविद्यालय सुचारू रूप से चल सके इस हेतु डॉ. माहेश्वरी को शासकीय सेवा छोड़कर महाविद्यालय की सेवा में आना पड़ा। बाद में वे इसी महाविद्यालय के प्राचार्य भी बने। डॉ. माहेश्वरी के प्रयास से यहाँ लाल बहादुर शास्त्री हौम्योपेथिक मेडीकल कॉलेज भी प्रारम्भ हुआ जो मध्यप्रदेश हौम्योपेथिक बोर्ड भोपाल द्वारा डी.एच.बी. उपाधि के लिए मान्यता प्राप्त था। विधि के शिक्षण की आवश्यकता महसूस की गई। साधन सम्पन्न वकील श्री मदनलाल घुगारिया के सहयोग से उनके पिता के नाम पर कन्हैया घुगरिया विधि महाविद्यालय की स्थापना की गई। बाद में इस महाविद्यालय की कक्षाएँ श्री नेहरू महाविद्यालय में ट्रांसफर कर दी गई।

समाजसेवा में भी सक्रिय

आगर-मालवा से ट्रांसफर होकर जून 1975 में डॉ. माहेश्वरी नरसिंहगढ़ आए। उस समय यहाँ का माहेश्वरी समाज दो हिस्सों (धड़े) में बंटा हुआ था। दोनों एक-दूसरे से ईर्ष्या रखते थे और नीचा दिखाने का सोचते रहते थे किन्तु डॉ. माहेश्वरी ने अपनी मिलनसारिता, सद्व्यवहार, सूझबूझ और प्रभाव से दोनों के बीच का मतभेद मिटाकर उन्हें एक मंच पर खड़ा कर दिया, दो धड़े हमेशा के लिए समाप्त हो गए। उसी समय से नरसिंहगढ़ में प्रतिवर्ष महेश नवमी समारोह बड़े धूमधाम से उत्साहपूर्वक मनाया जाने लगा। सन् 1982 में डॉ. माहेश्वरी शासकीय महाविद्यालय नरसिंहगढ़ से ट्रांसफर होकर माधव महाविद्यालय, उज्जैन आए। उज्जैन में एक अलाभकारी समिति का गठन कर इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश हस्त एवं ललित कला मण्डल स्थापित किया। डॉ. माहेश्वरी द्वारा स्थापित इस मण्डल को अच्छा महत्व मिला और इससे मध्यप्रदेश के जिलों एवं तहसीलों के अनेक केन्द्र जो सिलाई, कढ़ाई, पेन्टिंग, मेहन्दी, रंगोली आदि विषयों का प्रशिक्षण देते थे, सम्बद्ध हो गए।

कलम भी सतत् प्रेरणा स्त्रोत

डॉ. माहेश्वरी की देश के प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा 20 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी है। इसमें खूबसूरती से जिएँ 55 के बाद, खूबसूरती से जीवन जीने की कला, हँसते मुस्कुराते प्रसन्नता से जिएँ, सुखी जीवन के प्रभावी सूत्र, जिएँ शानदार जिन्दगी 60 के बाद, रूकिए जरा - आत्महत्या से पहले, सहजें खुशियों का अनमोल खजाना-दोस्ती, ढूँढते रह जाओगे इंसानियत, बिना मरे पाएँ स्वर्ग, पाँए दुःखों से छुटकारा, खुशियों की चाबी आपके हाथ, हँसते-हँसते जिएँ, हँसते-हँसते अलविदा, क्या आप जिन्दा हैं?, दुष्कर्म पर कैसे लगे लगाम?, कोरोना क्यों, कैसे करें सामना?, कैसे छुए आसमान, हरपल जिएं भरपूर जिन्दगी, टेंशन क्यों लेना?, सकारात्मकता - खुशियों का महामंत्र, सुख कहाँ - ढूँढ लिया ठिकाना आदि प्रमुख हैं।

समाज की सेवा के लिये किसी पद की भी आवश्यकता नहीं होती। बस जरूरत होती है, तो दृढ़ इच्छा शक्ति की। इन्हीं पंक्तियों को चरितार्थ करते हुए उम्र के 73वें पड़ाव पर भी समाज के लगभग अधिकांश सेवा प्रकल्पों में तन-मन-धन से सहयोगी बने हुए हैं, माणकचंद होलानी।

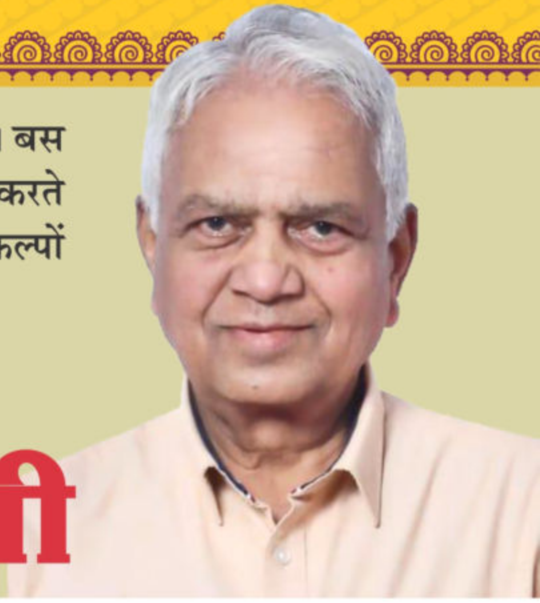

समाज सेवा के 'गौरव' माणकचन्द्र होलानी

इस पंक्ति को चरितार्थ करते हैं माणकचन्द होलानी। तेज दिमाग, दयालु हृदय और कोमल आत्मा के स्वामी समाज प्रेम से ओत प्रोत, सकल स्नेह से लबालब सदा ऊर्जावान माणकचन्द होलानी का जन्म 16 अगस्त 1949 को गांव खुनखुना, तहसील-डीडवाना, जिला-नागौर राजस्थान में श्री भँवरलाल व श्रीमती सरजू देवी होलानी के यहां हुआ। आपकी आरम्भिक शिक्षा डीडवाना में ही हुई। मात्र 18 वर्ष की आयु में अपने गांव खुनखुना में किराने की होलसेल दुकान के साथ अपना व्यवसायिक जीवन प्रारम्भ किया।

ऐसे बढ़े व्यवसाय में कदम

अगर संघर्ष नहीं है, तो कोई प्रगति नहीं है। इस कहावत को अपना प्रेरणास्त्रोत बनाते हुए श्री होलानी नवम्बर 1983 में गाँव से दिल्ली आये और खारी बावली दिल्ली में बालाजी ट्रेडिंग कम्पनी के नाम से अनाज का होलसेल कारोबार शुरू किया। कहते है जीवन में सफलता का आशीर्वाद दिव्य संगत से ही फलीभूत होता है। आदरणीय होलानी जी को भी यह दिव्य साथी 1968 में जीवन संगीनी श्रीमती जमना देवी होलानी के रूप में मिला और जीवन के हर खट्टे-मिट्ठे पलो का सदा सर्वदा एक देवी शक्ति के रूप में साक्षी बना रहा।

समाजसेवा में योगदान

आप जिस समाज में पले-बढ़े हैं, उससे अधिक नैतिक बनने के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार हैं। इस क्रम में आगे बढ़ते हुए श्री होलानी ने जन्मभूमि पैतृक गाँव खुनखुना से कर्मभूमि दिल्ली में अनेकानेक सेवा प्रकल्पों का निर्माण कराया और समाज को अपनी कृतज्ञता समर्पित की। उन्होंने स्वास्थ्य (सुंदरकांड मित्र मंडल

आरोग्यधाम), पढ़ाई (जयचंद करवा यूपीएससी संस्थान के ट्रस्टी), खेल (क्रिकेट होलानी कप), पशु पक्षी (रामदेव दादूपंती गौशाला) और जन सेवा (महाजनी पंचायत ट्रस्ट के अध्यक्ष) में अनेकानेक कार्य किए।

परिवार भी सेवा पथ पर साथ-साथ

आपके जीवन आदर्श को समाज के साथ आपके सुपुत्र रामस्वरूप व सुपुत्री सरोज, सरिता ने अपने-अपने जीवन के मूल मंत्र के रूप में अपनाया और विभिन्न समाज व देश निर्माण के उपक्रमों में अपनी महती भूमिका निभाकर शिक्षा व संस्कारों को निरन्तर सम्मान दे रहे है। श्री होलानी का कहना है कि दुनिया कठोर है और जीवन एक संघर्ष, लेकिन लेकिन आप अपनी निष्ठा और दयालु हृदय से सब कुछ पा सकते हैं और जो भी आपने पाया है उसे इस समाज के साथ साझा कीजिए। वे सभी के लिये कामना करते हैं, सुफल, सफल, सुगम आनन्दमय जीवन हो आपका, आपकी प्रतिभा का प्रकाश आकाश सा हो, सेवा साधनामय व हर पल उत्सव हो।

वास्तव में व्यक्ति वृद्ध अपने मन से होता है, मात्र उम्र से नहीं। यही कारण है कि उज्जैन निवासी वरिष्ठ समाजसेवी अशोक सोमानी 75 वर्ष की अवस्था होने के बावजूद भी ऊर्जा से आज भी युवा ही है। इस उम्र के इस पड़ाव पर भी उनकी समाजसेवा भाावना में कोई फर्क नहीं पड़ा।

75 वर्ष के युवा अशोक सोमानी

उज्जैन के समाजजनों, जैसीज सदस्यों व व्यावसायिक क्षेत्र में अशोक कुमार सोमानी की पहचान 75 वर्ष के युवा की तरह सक्रिय एक ऊर्जावान समाजसेवी के रूप में है। अपनी युवावस्था में श्री सोमानी एक उत्कृष्ट खिलाड़ी रहे। उनकी यह खिलाड़ी वाली भावना व ऊर्जा आज भी वैसी की वैसी ही है। बस इस ऊर्जा की दिशा बदल गई। उम्र के इस पड़ाव पर भी श्री सोमानी समाजसेवा के क्षेत्र में उसी ऊर्जा के साथ अपना योगदान देते आये हैं, जैसे वे खेल के क्षेत्र में देते थे।

उच्च शिक्षा के साथ खेल यात्रा

श्री सोमानी का जन्म 9 जुलाई 1947 को सुलताना (राज.) में स्व.श्री सागरमल सोमानी के यहाँ हुआ था। कक्षा 7वीं तक स्थानीय स्तर पर शिक्षा ग्रहण के पश्चात् आपका कर्मक्षेत्र बदल गया और उज्जैन आ गये। यहीं रहते हुए आपने माधव कॉलेज उज्जैन से समाजशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। अपनी इस शिक्षा के दौरान श्री सोमानी ने वर्ष 1968 से 1972 तक सतत रूप से इंटर कॉलेजिएट बैडमिंटन टूर्नामेंट में कॉलेज की टीम के कैप्टन की भूमिका निभाई। वर्ष 1969 से 1972 तक सतत् रूप से इन्टर युनिवर्सिटी बैडमिंटन टीम में विक्रम विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया तथा वर्ष 1972 में विक्रम वि.वि. बैडमिंटन टीम के कैप्टन भी रहे। इसी प्रकार वर्ष 1968 से 1971 तक माधव कॉलेज टेनिस टीम के कैप्टन रहे और अन्तर महाविद्यालयीन स्पर्धा में कॉलेज टीम का प्रतिनिधित्व किया।

सुमनजी ने बनाया माधव क्लब सदस्य

जब श्री सोमानी माधव कॉलेज में अध्ययनरत थे, उस समय विद्यार्थियों को माधव क्लब की सदस्यता प्रदान नहीं की जाती थी। इसके बावजूद पूर्व कुलपति व ख्यात राष्ट्र कवि डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन की अनुशंसा पर उन्हें श्रेष्ठ खिलाड़ी होने से माधव क्लब में खेलने की अनुमति मिली और फिर विशेष प्रावधान के अंतर्गत माधव क्लब की सदस्यता भी प्रदान की गई। छात्र संगठन आर्ट्स एसोसिएशन माधव कॉलेज के वर्ष 1967 में श्री सोमानी सचिव भी रहे। इस दौरान विद्यार्थियों व महाविद्यालय के हित में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

समाजसेवा में भी रहे सतत सक्रिय

उच्च शिक्षा प्राप्ति के बावजूद श्री सोमानी ने व्यवसाय की राह ही चुनते हुए चाय व कोल व्यवसाय तथा इंडस्ट्रीयल सप्लायर के रूप में अपने स्व-व्यवसाय की शुरुआत की। एलआईसी एजेंट भी रहे। समाजसेवा अंतर्गत विशाला जैसीज उज्जैन के वर्ष 1980 में अध्यक्ष व मप्र स्टेट जैसीज के वर्ष 1981 में कोषाध्यक्ष रहे। वर्ष 1980 के सिंहस्थ के दौरान मारवाड़ी रीलिफ सोसायटी कलकत्ता के बैनर तले चिकित्सा शिविर लगाकर लगभग 15 हजार रोगियों तक निःशुल्क चिकित्सा पहुँचाई। वर्ष 1992 के सिंहस्थ में भारत रीलिफ सोसायटी कलकत्ता के बैनर तले 25 हजार से अधिक रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा उपलब्ध करवाई। वर्ष 2004 में सिंहस्थ के दौरान भी मारवाड़ी रीलिफ सोसायटी कलकत्ता के बैनर तले शिविर लगाकर श्रद्धालुओं को भोजन व शर्बत वितरित किया।

वर्तमान दौर की तनावपूर्ण जीवन शैली में सिरदर्द एक आम समस्या है। इस समस्या का भी बिना किसी दवा के ''महाशीर्ष योग मुद्रा'' से समाधान किया जा सकता है।

सिरदर्द को रफूचक्कर करती महाशीर्ष मुद्रा

शिवनारायण मूंधड़ा
'वास्तु मित्र'
94252-02721

कैसे करें:- सबसे पहले अनामिका उंगली को अंगूठे की गद्दी में लगाकर, अंगूठे, तर्जनी और मध्यमा उंगली के अग्रभाग मिला लें। सबसे छोटी उंगली को सीधी रखें। अर्थात् सूर्य मुद्रा और व्यान मुद्रा एक साथ लगाएं। 6 मिनट के लिये, दिन में 3 बार इसे करें।

लाभः- यह मुद्रा सिर दर्द के लिये बड़ी लाभकारी है। सिर दर्द कैसा भी हो उसका कोई भी कारण हो, इस मुद्रा से लाभ होगा। सिर दर्द, जुकाम चाहे साईनस के कारण हो, तनाव के कारण हो, मौसम के कारण हो, अपच के कारण हो अथवा सरवाईकल या कमर दर्द या मासिक धर्म के कारण हो। इस मुद्रा से हमारी उर्जा शक्ति शरीर के सभी भागों में समान रूप से फैलती है। उच्च रक्तचाप ठीक होता है। सिर में सूजन नहीं होती है। सिर दर्द का मुख्य कारण है, सिर की नसों में सूजन व शोथ। यह मुद्रा तनाव कम करती है। साइनस में भी लाभकारी है। इससे मोटापा भी कम होता है, कोलेस्ट्रोल व रक्तचाप भी कम होता है, ठीक होता है। मधुमेह में भी लाभकारी है।

वरिष्ठजन अर्थात् वृद्ध वे हैं, जिनकी छत्र छाया में उनके स्नेह से सिंचित होते हुए हम बड़े हुए हैं। वास्तव में उनका हमारे जीवन में योगदान ही हमें उनके प्रति नतमस्तक कर देता है। लेकिन क्या वास्तव में वृद्धों की वर्तमान में वह सम्मानजनक स्थिति बची है? क्या हम उन्हें वह सम्मान दे रहे हैं?

अभिवादन की जगह तिरस्कृत होते वृद्ध

ललित किशोर जाजू

कहा गया है-

'अभिवादन शीलस्य नित्य वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलं'

वरिष्ठ यानि बड़े! क्या सचमुच हम उन्हें बड़ा मानते हैं? यदि हाँ! तो क्या हमारी दृष्टी में उनका यथोचित सम्मान है? यदि है! तो परिवारों में उनका तिरस्कार क्यों? उनकी बताई हुई मर्यादाओं का उल्लघंन क्यों? भला हमारे सुसंस्कृत समाज में वृद्धाश्रम नाम का महापराध क्यों? जिन माता पिता ने हमें यह शरीर प्रदान किया, हमारा उस अवस्था में पालन पोषण किया, जब यह शरीर अपने आप को स्वच्छ रखने में भी असमर्थ था। हमारी खुशियों और सुविधाओं हेतु अपने सुख का त्याग किया, हमारी अनेकों नालायकियों को सहन किया, अपनी सारी संपदा हमारे लिए दे दी, उनका उन्हीं के घर से निष्कासन! आखिर हम ने उन संतानों का समाज से बहिष्कार क्यूं नहीं किया? बल्कि उन्हें एक रास्ता दे दिया कि ठीक है भाई तुम बुजुर्गों के साथ नहीं रह सकते तो हम संभालेगें! तो एक परिपाटी ही चल पड़ी इस दुराचार की और समाज के सेठ लोग वृद्धाश्रम बनवाने में तन मन धन से सहयोग कर रहे हैं? हमारी मति कुमति कैसे बन गई?

बच्चे, जो अपने को भ्रमवश संस्कारी समझते हैं, वे कहते हैं कि हमारे तो मां बाप हमारे साथ रहते हैं जी! ये ध्यान ही नहीं आता कि हम हमारे माता पिता की शरण में रहते हैं! यही विकृति श्री गौमाताजी के संबंध में फैल गई है! बडे गर्व से कहते हैं कि हमने एक गाय गोद ले ली है जी! आप जगन्माता को गोद लोगे कि उन करुणामयी की अंक में शरण लोगे? इसी उपेक्षा का दुष्परिणाम घरों में भयंकर विवादों के रुप में दिखाई दे रहा है। क्या हमारे दादाजी के दादाजी हमारे लिए वरिष्ठ जन नहीं? क्या हम उनके बताये हुए नियमों को मानते हैं? यदि उन नियमों पर चलते तो क्या रोग घर में आ सकते थे? क्या अवसाद/झगड़ा/फसाद/तलाक/प्रोपर्टी विवाद/सुसाइड/पितृदोष/निर्धनता/कुसंस्कार आदि घर में प्रवेश कर पाते? कभी नहीं ना!

यदि आपको लगता है कि ऐसा नहीं है तो थोड़ा श्रम कीजिये और अपनी 5-7 पीढ़ियों पूर्व के जीवन पर दृष्टिपात कीजिये। वे सभी 'बड़ा कहे ज्यूँ करणो, भीत में भाटो धरणो' पर चलते थे। सुबह ब्रह्म मुहुर्त में उठना, सभी बडों के चरणों में वंदन करना, शरीर को श्रमित करना, अभ्यंग (मालिश), गंगा स्नान (5 बजे पूर्व का स्नान), तिलक धारण, संध्योपासन, श्रीहरि स्मरण, अपने वर्ण के अनुसार सेवा से आजीविका उपार्जन, गुरुजनों के सान्निध्य में अपनी संस्कृति के अनुसार विद्यार्जन, षोड़ष संस्कारों का यथा समय आचरण, समय से बालभोग, राजभोग, सायं संध्या पूर्व ब्यारू प्रसादम से निवृति, संध्या में नित्य सपरिवार सत्संग, जल्दी शयन आदि बड़ों द्वारा प्रदत्त विज्ञान का यथा रूप पालन करते। इससे उपरोक्त संकट सदैव दूर रहते और वर्ष में 365 दिन आनंद और उल्लास रहता था। सहज ही जीवन 'पायो परम विश्राम' की ओर अग्रसर हो जाता था। आओ अपनी भूल सुधारें? पुनः वही समस्या रहित एवं परमआनंद पूर्ण जीवन पायें। मेंरी तरह उस जीवन का अनुभव पाने हेतु नित्य संध्या में 6:50 बजे अपने घर से अपने ही मोबाइल से अपनी जिज्ञासा के समाधान हेतु टेलीग्राम पर 'पालनहार सनातन OPD' में पधारें।

(लेखक पालनहार सनातन फाउंडेशन के संचालक हैं।)

वार्डन चाहिए

अ.भा. माहेश्वरी महासभा द्वारा प्रवर्तित महेश एजुकेशनल एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट के अंतर्गत संचालित श्रीकिशन रामप्यारीबाई डागा गर्ल्स हॉस्टल हेतु पूर्णकालिक महिला वार्डन की आवश्यकता है।

स्वजातिय, उम्र 55-65 वर्ष, कम से कम ग्रेजुएट, कम्प्यूटर का ज्ञान अपेक्षित, एकल महिला हेतु आवास, भोजन निःशुल्क के साथ वाजिब वेतन दिया जावेगा।

आवेदन सम्पूर्ण कागजात एवं आधार कार्ड की छायाप्रति के साथ भेजें।

सचिव

महेश एजुकेशनल एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट

96-97, प्रथम तल, आकाशगंगा कॉम्प्लेक्स,
सुपेला, भिलाई- 490023 (छ.ग.)
classique.bhilai@gmail.com

वैसे तो दीपावली पर्व 5 दिवसों का माना जाता है, लेकिन आमतौर पर प्रारम्भ के तीन दिवस धनतेरस, नरक चतुर्दशी व दीपावली का विशेष महत्व है। तीनों ही दिन विशिष्ट पूजन होती है। तो आईये जानें कैसे करें इस त्रिदिवसीय पर्व पर शास्त्रोक्त पूजन जिससे हमें मिले पूर्ण फल।

त्रिदिवसीय दीपावली पर्व पर शास्त्रोक्त पूजन

प्रथम पर्व - धनतेरस

कब करें पूजन- आयुर्वेद के प्रणेता भगवान धन्वंतरी जी का प्राकट्य दिवस (धन त्रयोदशी) यम निमित्त दीपदान दिनांक 23 अक्टूबर 2022 रविवार को प्रदोषकाल में प्रशस्त है।

पूजन विधि-

भगवान धन्वन्तरि की मूर्ति या चित्र साफ स्थान पर स्थापित करें तथा पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाएं। भगवान धनवन्तरि कर आह्वान निम्न मंत्र से करें-

सत्यं च येन निरत रोग विधूतं
अन्वेषित च सविधिं आरोग्यमस्य।
गूढ़निगूढ़औषध्यरूपम्,धन्वन्तरि च सततं प्रणमामि नित्यं।

इसके पश्चात् पूजन स्थल पर आसन देने की भावना से चावल चढ़ाएं। इसके बाद आचमन के लिए जल छोड़ें। भगवान धन्वन्तरि के चित्र पर गंध, अबीर, गुलाल, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाएं। चांदी के पात्र में खीर का नैवैद्य लगाएं। मुख शुद्धि के लिए पान, लौंग, सुपारी चढ़ाएं। भगवान धन्वन्तरि को अर्पित रोगनाश की कामना के लिए इस मंत्र का जाप करें।

''ऊँ रं रूद्र रोगनाशाय धन्वन्तर्य फट्॥''

इसके बाद भगवान धनवन्तरि को श्रीफल व दक्षिणा चढ़ाए। पूजन के अंत में कर्पूर आरती करें।

यह भी करें

घर के मुख्य द्वार पर यमराज के निमित्त दीपदान करना चाहिए। रात्रि को एक दीपक में तेल, एक कौड़ी, काजल, रौली, चाँवल, गुड़, फल, फूल व मीठे सहित दीपक जलाकर यमराज का पूजन करना चाहिए। दीप प्रज्जवलित करते समय निम्न मंत्र से प्रार्थना करनी चाहिए।

''मृत्युना पाशहस्तेन कालेन भार्याय सह।
त्योदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतामित॥

द्वितीय पर्व- नरक चतुर्दशी

कब करें स्नान- कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी ब्रह्म मुहूर्त काल में रूप चौदस का स्नान होता है। 24 अक्टूबर 2022 सोमवार को ब्रह्म मुहूर्त में अभ्यङ्ग तैल उबटन लगाकर स्नान कर अपने ईष्टदेव तथा ग्राम देव का दर्शन कर दीपावली पर्व प्रारंभ करना शुभकारी होता है। इस प्रकार कर्म करने पर नर्कवास का योग समाप्त हो जाता है।

पूजन विधि- इस दिन शरीर पर तिल के तेल से मालिश करके सूर्योदय के पूर्व स्नान के दौरान अपामार्ग (एक प्रकार का पौधा) को शरीर पर स्पर्श करना चाहिए। अपामार्ग को निम्न मंत्र पढ़कर मस्तक पर घुमाना चाहिए-

सितालोष्ठसमायुक्त सकण्टकदलान्वितम।
हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणः पुनः पुनः ॥

स्नान करने के बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर तिलक लगाकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके यम से परिवार के सुख की कामना करें। इसके साथ ही प्रदोषकाल में चार बत्तियों वाला दीपक जलाकर दक्षिण दिशा में रखें और उसका निम्न मंत्र से पूजन करें-

श्लोक- ''दीपश्चतुर्दश्यां नरक प्रीतये मया।
चतुर्वर्ति समायुक्त र्वपानतये।(लिंग पुराण)

तृतीय महापर्व-दीपावली

कब करें पूजन- कृष्ण पक्ष अमावस्या काल दिनांक 24 अक्टूबर 2022 सोमवार को उज्जैन के समय अनुसार सायं 5/27 को प्रारंभ हो जायेगा जो कि 25 अक्टूबर 2022 मंगलवार को सायं 4/18 तक रहेगा। दीपावली का पूजन प्रदोष काल में तथा महालक्ष्मी का पूजन रात्रि में प्रशस्त माना गया है। अतः पर्व 24 अक्टूबर 2022 को प्रशस्त है। 24 अक्टूबर 2022 को उज्जैन में सूर्यास्त का समय सायं 5/53 पर है। प्रदोष काल सायं काल 5/53 से रात्रि 8/28 तक रहेगा। इस काल में दीपोत्सव तथा महालक्ष्मीपूजन मुख्य रूप से प्रशस्त है।

पूजन विधि- पूजन के दिन घर को स्वच्छ कर पूजा स्थान को भी पवित्र कर लें एवं स्वयं भी पवित्र होकर श्रद्धा भक्ति पूर्वक सायंकाल महालक्ष्मी व भगवान श्रीगणेश का पूजन करें। श्री महालक्ष्मीजी की मूर्ति के पास ही पवित्र पात्र में केसर युक्त चंदन से अष्टदल कमल बनाकर उस पर द्रव्य लक्ष्मी (रूपयों) को भी स्थापित करें तथा एक साथ ही दोनों की पूजा करें। सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख हो आचमन, पवित्री धारण, मार्जन, प्राणायाम कर अपने ऊपर तथा पूजा-सामग्री पर निम्न मंत्र पढ़कर

जल छिड़के-

ॐ अपवित्र: पवित्रों वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तर: शुचि:॥''

उसके बाद जल अक्षत लेकर पूजन का निम्न मंत्र से संकल्प करें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य मासोत्तमे मासे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे पुण्याममावस्यायां तिथौवार वार का नाम वासरे... गौत्र का उच्चारण करें गोत्रोत्पन्नः /गुप्तोहंश्रुतिस्मृतिपुराणोक्त-फलावाप्तिकामनया ज्ञाताज्ञातकायिकवाचिकमानसिक सकल-पापानिवृत्तिपूर्वकं स्थिरलक्ष्मीप्राप्तये श्री महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं महालक्ष्मीपूजनं कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये। तदङ्त्वेन गौश्रीगणपत्यादिपूजनं च करिष्ये।

ऐसा कहकर संकल्प का जल छोड़ दे।

प्रतिष्ठा- पूजन से पूर्व नूतन प्रतिमा की निम्न रीति से प्राण प्रतिष्ठा करें। बाएं हाथ मे चावल लेकर निम्नलिखित मंत्रों को पढ़ते हुए दाहिने हाथ से उन चावलों को प्रतिमा पर छोड़ते जाए-

ॐ मना जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पितिर्यज्ञमिमं
तनात्वरिष्टं समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामोम्पतिष्ठ।
ॐ अस्ये प्राणा: प्रतिष्ठन्तु
अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च।
अस्ये देवत्वपमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

पूजन- सर्वप्रथम भगवान गणेश का पूजन करें इसके बाद कलश तथा षोडशमातृका (सोलह देवियों का) पूजन करें। तत्पश्चात प्रधान पूजा में मंत्रों द्वारा भगवती महालक्ष्मी का षोडशोपचार पूजन करें-

'ॐ महालक्ष्म्यै नमः' इस नाम मंत्र से भी उपचारों द्वारा पूजा की जा सकती है।

प्रार्थना- विधिपूर्वक श्री महालक्ष्मी का पूजन करने के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

सुरासरेंद्रादिकिरीटमौक्तिकै-
युक्तं सदा यत्तव पादवपंकजम् ।
परावरं पातु वरं सुमंगल
नमामि भक्तयाखिलकामसिद्धये ।।
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी ।।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोस्तु ते।
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा में भूयात् त्वदर्चनात् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः
प्रार्थनापूर्वक समस्कारान् समर्पयामि।
प्रार्थना करते हुए नमस्कार करें।
समर्पण- पूजन के अंत में-
'कृतोनानेन पूजनेन भगवती महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम् न मम।'

यह वाक्य उच्चारण कर समस्त पूजन कर्म भगवती महालक्ष्मी को समर्पित करें तथा जल गिराएं।

माँडना परम्परा का जतन

जय श्री कृष्ण,

गत 20-22 वर्षों से माँडना कला को जनमानस और घर-घर हिंदू-माहेश्वरी परिवार में पहुँचाने का प्रयास कर रही हूँ और आप सभी का मुझे अत्यंत सराहनीय योगदान मिल रहा है। अभी मेरे माँडना स्टीकर के 45 पेटर्न मार्केट उपलब्ध हैं। इन स्टीकर को आप संक्रांति पर्व पर तेरूँडा बाठने तथा धार्मिक आयोजन, शादी ब्याह, तीज-त्यौहार का उपहार देने हेतु उपयोग ले सकते हैं। मेरा प्रयास: ''घर-घर माँडना, हर घर माँडना''

RAKHI'S CREATIONS - MANDANA ART

Facebook Page **Rakhi's Creations**
Pinterest **Rakhi Bajaj (Mandana artist)**
Email: **rakhisbajaj19@gmail.com**
Instagram :**@rakhisbajaj19**

YouTube Channel : **Rakhi's Creations Mandana Art**
Contact/WhatsApp No : **+ 91 7021023074**
by : **Rakhi Bajaj, Mumbai**

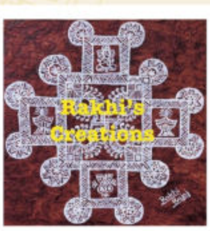

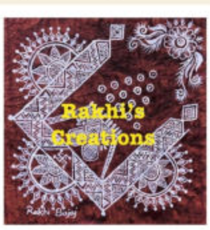

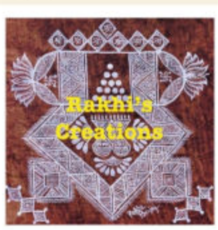

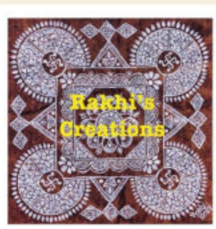

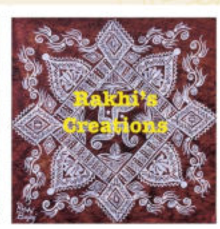

पढ़-लिखकर बच्चे गांव से शहर की तरफ रचने-बसने लगे हैं, जिससे बुजुर्ग माता-पिता को भी अपने पैतृक गांव को छोड़कर बच्चों के साथ शहर में आकर रहना पड़ता है। गांव भी धीरे-धीरे खाली होते जा रहे हैं। ऐसे में वृद्ध माता-पिता को उनके पैतृक गांव में अकेले छोड़ना बच्चों को सुरक्षित नहीं लगता है। समय के साथ बेटे-बहू, पोते-पोती तो अपनी शहरी दिनचर्या में रम जाते हैं, पर शहर में आकर बसने पर बड़े-बुजुर्गों के हिस्से में सिर्फ अकेलापन आता है। इनमें से अधिकांश बुजुर्ग शहर में आकर खुश नहीं है। ऐसे में सामाजिक दायित्वों के सफल निर्वहन में यह चिंतनीय हो गया है कि क्या बुजुर्गों का बच्चों के साथ शहर में आकर बसने का फैसला उचित है अथवा अनुचित? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

बुजुर्गों का पैतृक गांव छोड़कर शहर में बसना
उचित अथवा अनुचित?

शहर हो या गांव; परिवार का एक स्थान पर रहना जरूरी है

गाँवों का समुचित विकास नहीं होने के कारण बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए शहर जाना पड़ता है और फिर बच्चे अपनी शिक्षा के अनुरूप शहर में ही अपना भावी जीवन आरंभ कर देते हैं। माता-पिता और परिवार को भी बच्चों की खुशियों की खातिर अपने पैतृक स्थान को छोड़कर शहर में रचना-बसना पड़ता है। अगर संयुक्त परिवार हो यानि परिवार बड़ा हो तो गांव में रहने वाले परिवार के अन्य सदस्यों के साथ आजीवन गांव में भी रहा जा सकता है। पर परिवार छोटा हो तो बुजुर्गों को शहर में बच्चों के पास जाकर रहने के सिवाय कोई विकल्प नहीं रह जाता है। जब तक आत्मनिर्भर हों; बुजुर्ग अपने पैतृक गांव में ही रहें और बच्चों को त्यौहार-छुट्टियों में अपने पास गांव में बुलाते रहें, इससे नई-पीढ़ी का लगाव भी अपनों से और अपने पैतृक गांव से बना रहेगा। उम्र के साथ जब बुजुर्गों के जीवन में आश्रित होने की परिस्थिति आये तब बच्चों के शहर की तरफ रुख करें। शहर में बुजुर्ग दम्पति स्वयं को व्यस्त रखने की भरसक कोशिश करें। जीवन के अंतिम पड़ाव में नए स्थान पर बसने पर निश्चित ही बुजुर्गों को काफी परेशानियों का सामना करना होगा। ऐसे में बच्चों को अपने माता-पिता को नए वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में यथासंभव मदद करनी होगी। वैसे अगर गाँव में बुजुर्ग माता-पिता कार्यरत न हों तो बच्चों के शहर में बसने के शुरुआती समय में ही उनके साथ पलायन करना उनके लिए उचित होगा क्यूंकि एक लंबे अंतराल के बाद अगर वो अपने बच्चों की शहरी दिनचर्या में प्रवेश करेंगे तो उनकी जीवनशैली के साथ तालमेल नहीं बैठा पाएंगे। यह समय का ऐसा दौर है कि बुजुर्गों को समझदारी से स्थान परिवर्तन को अपनाना ही होगा वरना परिवार एक होते हुए भी दो भागों में विभाजित रहेगा। हमेशा एक-दूसरे की चिंता बनी रहेगी; पूरा परिवार एक स्थान पर रहेगा तो गांव हो या शहर परिवार हरा-भरा परिपूर्ण रहेगा।

❒ **सुमिता मूंधड़ा, मालेगांव,** नाशिक

परिस्थिति के अनुकूल लें निर्णय

कोई व्यक्ति अपच या पेट की गड़बड़ी से बीमार है, बहुत ज्यादा मोटापा बढ़ रहा है तो उसका भोजन करना कुछ समय के लिए अनुचित ही होगा। इसी तरह अगर कोई बुजुर्ग पैतृक गांव छोड़कर शहर में बसता है, तो उसके पीछे के कारण देखने होंगे ।अगर वह शारीरिक रूप से असमर्थ है, गांव में उसकी देखभाल करने वाला कोई ना हो, शहर में उसकी संतान उसे अपने पास ही रखना चाहती है, ताकि बार-बार गांव (जो बहुत दूर है) ना जाना पड़े, उसके धंधे या नौकरी में व्यवधान उत्पन्न ना हो, तो उस बुजुर्ग का संतान या संबंधी के साथ शहर में बसना सर्वथा उचित होगा। इसके विपरीत बुजुर्ग सक्षम हैं, गांव में उसका परिवार भी है और खेती या कारोबार भी है, या उसे निसर्ग के सान्निध्य में रहकर मनः शांति और आनंद मिलता हो, तो केवल शहर की चमक दमक देखने के लिए या अपना बड़प्पन दिखाने के लिए शहर में बसना है, तो सर्वथा अनुचित है। कभी-कभी आर्थिक मजबूरी या शरीर की पराधीनता में शहर जाकर बसना पड़ता है। तो ऐसी अवस्था में बुजुर्गों को अपनी संतान या संबंधी के घर में रहते हुए, इस बात का दुख नहीं मनाना चाहिए कि मेरा घर बार, पैतृक गांव छूट गया। क्योंकि उदासी के कारण स्वयं और परिवेश में रहने वालों का मनोबल भी गिरता है। आजकल संयुक्त, बड़े परिवार रहते नहीं, तो आपका शहर में अपनी संतान के साथ रहना उचित ही होगा। इसमें स्वयं बुजुर्ग और उनकी संतान दोनों को बहुत समझौते करने पड़ते हैं। अगर आप शहर में संतान या संबंधी के साथ रह ही नहीं पाते, तो वृद्धाश्रम सही विकल्प होगा। या फिर गांव में ही 1-2 मददगार की व्यवस्था हो सकें तो वह ज्यादा उचित होगा। मैंने ऐसे बहुत सारे बुजुर्ग देखे हैं जो शहर में अपनी संतान के निकट रहना चाहते हैं, पर उनके साथ नहीं। तो वे अपने लायक किसी वृद्धाश्रम में रहना पसंद करते हैं।

❒ **पुष्पा बल्दवा,** ठाणे (महाराष्ट्र)

बच्चों के साथ रहने की विवशता

कोई भी व्यक्ति यह नहीं चाहेगा कि उसको अपने जन्म गाँव से दूर जाकर रहना पड़े। मगर आज के इस स्पर्धा भरे युग में न चाहकर भी कुछ फैसले इसलिये लेना पड़ते हैं जिससे हमारी आने वाले पीढ़ी को कोई समस्या ना हो। जैसे पढ़ाई के लिये शहर जाना होता है और बिना पढ़े लिखें आज कोई महत्व नहीं है। फिर आगे सर्विस के हिसाब से जहाँ जगह खाली हो बसना पड़ता है और फिर अपने बच्चों का शिक्षण ना बिगड़े इसलिये बड़े शहरों में जाना पड़ता हैं। दूसरा समाज में आज शादी ब्याह के हिसाब से भी लोग गाँव छोड़कर शहरों की तरफ जा रहे हैं क्योंकि कोई भी माँ-बाप अपनी बेटी का छोटे गाँव में ब्याह कराना नहीं चाहता हैं ना ही कोई लड़की छोटे गाँव में बसना चाहती है। फिर उनके बूढ़े माँ-बाप क्या करें? घर के बुजुर्गों को अपनी सेहत और सेवा के हिसाब से अपने बच्चों के साथ मन मारकर रहना ही पड़ता है। कुछ स्वास्थ्य संबध से तो कुछ समाज की खातिर। कुल मिलाकर बुजुर्गों को अपना पैतृक गाँव छोड़कर अपने बच्चों के साथ रहना ही होगा, जिससे परिवार साथ रहे और सुख दुःख में एक दुसरे का ख्याल रखे।

❒ **सपना श्यामसुंदर सारडा,** सुरेंद्रनगर (गुजरात)

जरुरी होने पर बुजुर्गों का शहर में स्थानांतरण उचित

आजीविका / व्यवसाय/ रोज़गार के लिए स्थानांतरण को हमारा माहेश्वरी समाज शुरुआत से ही अपनाता आया है। हमारे पूर्वज राजस्थान/ मारवाड़ छोड़ देश/विदेश की बहुतांश जगहों पर जा बसे। फलस्वरूप आज देश में हम अल्पसंख्यक (0.06%) होकर भी राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। हम जहां भी रहते हैं, अल्प समय में ही वहां का एक प्रतिष्ठित हिस्सा बन जाते हैं। कड़ी प्रतियोगिता के इस जमाने में पढाई, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक तरक्की एवं आत्म संतुष्टि के लिए स्थानांतरण जरूरी होने लगा है। इस दरमियान परिवार भी एकल तथा छोटे (1-2 बच्चे) हो गये। बच्चों का गांव में बस कुछ करना मुमकिन ना होने से शहरों में रहना उनकी मजबूरी हो गई है। अब सिमटते छोटे परिवार को बनाए रखने के लिये माता-पिता या तो बच्चे के पास शहर आ जायें या फिर अकेले गांव में रहें इसके अलावा कोई रास्ता भी नहीं है। आधुनिकता की होड़ में गांव के परिचित भी व्यस्त हो गए हैं, जिसके चलते चाहकर भी आपका पूरा ध्यान रख पायेंगे या नहीं कहना मुश्किल है। अतः मेरा व्यक्तिगत मानना है कि जब तक आप सक्षम हैं, अपने पैतृक गांव में रहें, लेकिन एक निश्चित अंतराल में बच्चो के पास भी आत-जाते रह कर समय जरुर बिताये। इससे आप भी वहां समायोजित होंगे एवं बहू व बच्चों को भी आपके संग रहने की आदत डाल पायेंगे, जिससे आप मजबूरीवश जब भी वहां स्थानांतरित हों तो प्रसन्नता से रह सकें। शहरों में आप जैसे अनेकों बुजुर्ग रह रहे हैं। उनके संग मिलकर अपना हम उम्र समूह आसानी से बना सकते हैं, जिससे अकेलापन नहीं रहेगा और असल मायने में परिवार भी बना रहेगा। वरना चाचा, मामा, बुआ, मौसी में से बहुतेरे रिश्ते समाप्ति की ओर ही अग्रसर हैं।

❒ **विनोद गो. फाफट,** नागपुर

पैतृक गांव छोड़ शहर में बसना उचित नहीं

बुजुर्गों का पैतृक गांव छोड़कर शहर में बसना उचित नहीं है। गांव में बुजुर्गों की, कुदरत की अपनी छांव है, जिसे अपनाकर वे हर दिन, हर पल कहते हैं, यह अपना गांव है। गांव में अड़ोसी-पड़ोसी और सगे संबंधी से मिलकर, बातचीत करके बुढ़ापे में उनका मन बहल जाता है। उसी जगह पर रहते-रहते पूरी जिंदगी गुजर जाती है। उन्हें वहां का खान पान, रहन-सहन, सगे संबंधी के साथ शकुन और आराम मिलता है। अक्सर बूढ़े लोगों के मुंह से सुना है, शहर की हलचल से दूर यहां गांव में ही हमारे मन को आराम मिलता है। घर तो अपना गांव में ही है जनाब, शहर में तो बस मकान हैं। कई बार शहर तो अपने बच्चों के पास कुछ दिनों के लिए रहने आ जाते हैं मां-बाप। बहू-बेटे तो लगे रहते हैं अपनी दिनचर्या में बाहर नौकरी पर नोट कमाने में और पोते-पोती भी पढ़ाई और अपनी क्लासेस में रह जाते हैं। बूढ़े मां-बाप सिर्फ तन्हाई और अकेलेपन के हो जाते हैं शिकार।

❒ **पूजा काकाणी** (मध्य प्रदेश)

स्थिति के अनुसार शहर में बसना उचित

बुजुर्गों का पैतृक गांव छोड़कर शहर में बसना या गांव में ही रहना यह बात बुजुर्गों पर ही निर्भर है। हर माता-पिता की इच्छा होती है कि उनके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करके सुख शान्ति से अपना जीवनयापन करें। इसके लिए वे येनकेन प्रकारेण बच्चों को पढ़ाते हैं तथा अपने से दूर भेज देते है, बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करके वहाँ पर अच्छी नौकरी तय करके रच बस जाते है। शहरों में रहने के बाद उनकी महत्वाकांक्षाऐं भी बढ़ जाती है, उनके रहन सहन, पहनावे में भी बदलाव आ जाता है। समयानुसार कुछ जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है, वापिस गाँव की तरफ रुख करना उनके लिये असंभव हो जाता है। लेकिन अपने बुजुर्गों को अकेले गाँव में छोडना भी अखरता है और शहरों में भी चार दिवारी में रखने में एक दुविधाजनक स्थिति आ जाती है। 'एक तरफ कुआं और एक तरफ खाई'। ऐसी स्थिति में बुजुर्ग ही समस्या को हल कर सकते है। जब तक उनके माता-पिता अपना कार्य करने में सक्षम हैं तब तक वे भले ही अपने पैतृक स्थान पर रहें लेकिन असहाय अवस्था में बुजुर्गों को अपना पैतृक गांव छोड़ कर बच्चों का साथ देते हुए शहर में बस जाना चाहिए जिससे उनके अकेलेपन की समस्या बच्चों के साथ रहने से दूर हो जाती है।

❒ **सरोज लढ़ा,** कलकत्ता (पश्चिम बंगाल)

आप भी दे सकते है मत-सम्मत के लिये विषय

''**मत-सम्मत**'' सामाजिक समस्याओं पर चिंतन का ''**श्री माहेश्वरी टाईम्स**'' का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। इसके द्वारा न केवल सम्बंधित विषय पर प्रबुद्ध पाठकों के विचार व सुझाव ही प्राप्त होते हैं, अपितु यह पाठकों को विचार-विमर्श का ''**एक मंच**'' भी प्रदान करता है। अतः पाठकों से निवेदन है कि यदि मत-सम्मत में विचारों का पक्ष-विपक्ष रखने योग्य आपके पास कोई सामाजिक विषय हो तो हमें अवश्य प्रेषित करें। इस विषय पर भी विचार आमंत्रित होंगे। विषय का अंतिम चयन सम्पादक मंडल का होगा, जो सर्वमान्य होगा।

सम्पादक

समयानुकूल निर्णय ही उचित

बुजुर्गों का पैतृक स्थान छोड़कर शहरों में बसना, ये विषय ही भ्रामक है। कोई भी बुजुर्ग अपना पैतृक स्थान छोड़ना, उचित या अनुचित की दृष्टि से चयन नही करता है। पारिवारिक व स्वास्थ्य की मजबूरी ही बुजुर्गों के पैतृक स्थान छोड़ने का कारण बनती है। ये सर्वविदित है कि नई पीढ़ी के युवाओं को अपने अनुरूप नोकरी हेतु अन्य स्थानों पर जाना ही होता है। अब बुजुर्ग दंपति का एक उम्र के बाद, स्वास्थ्य की दृष्टि से, अकेला रहना उचित नही है। इस कारण उन्हें शहरों में बच्चो के पास जाने के अलावा कोई विकल्प ही नही है। इसमे यदि बुजुर्ग व्यक्ति, अपने साथी को खो चुके हैं, तो पैतृक स्थान छोड़कर संतान के पास जाकर रहना उनकी आवश्यकता है। दूसरा, यदि बुजुर्ग आत्मनिर्भर भी है व उनके बेटा-बहु (लड़की-दामाद) दोनो कार्यरत है, एवं नाती-पोतों की देखरेख के लिए, यदि बुजुर्गों की जरूरत, संतान महसूस करती है, तो ऐसी स्थिति में भी बुजुर्गों का पैतृक स्थान छोड़कर जाना उचित है। उसमे भले ही बुजुर्गों को कुछ सामंजस्य की परेशानी हो सकती हो, परन्तु बुजुर्गों को इस कर्तव्य निर्वाहन हेतु शहरों में जाना चाहिए। अंतिम व्यवहारिक सत्य यह है कि उपरोक्त परिस्थितियों की अनुपस्थिति में, आत्मनिर्भर दंपत्तियों को अपना पैतृक स्थान कभी नही छोड़ना चाहिए।

❒ **श्रीकांत बागड़ी,** नवी मुंबई (महा.)

मिलकर ही निकालें समाधान

बुजुर्गों का पैतृक गांव से लगाव होना स्वाभाविक है। परिस्थितिवश गांव से शहर की ओर रूख करना उनके लिए आसान नहीं होता है। किन्तु वृद्धावस्था में बच्चों का साथ भी आवश्यक है और साथ ही बच्चों का विकास भी। जिन बच्चों का गांव में रहकर उज्जवल भविष्य बन सकता है, उन्हें गांव में रहकर बुजुर्गों का ध्यान रखते हुए गांव का भविष्य उज्जवल करना चाहिए। नई तकनीकी से गांव को सुंदर और सुगम बनाया जा सकता है, जिससे नई पीढ़ी के बच्चों को पैतृक गांव जाने से कोई आपत्ति नही होगी। बुजुर्गो का जीवन भी खुशहाल रहेगा। किन्तु जिन बच्चों का विकास शहर में है उन बुजुर्गों का शहर में जाना ही सही निर्णय है। इससे उनकी देखभाल सही ढंग से हो सकेगी और बच्चों को भी दिक्कतो का सामना नहीं करना पड़ेगा। बच्चों को भी उन्हें सुख-सुविधा के साथ लाड़-दुलार और समय देना होगा। बच्चे अगर बुजुर्गों की पसंद-नापसंद का ध्यान रखेंगे तो उन्हे अकेलापन भी महसूस नही होगा। बच्चों में अगर संस्कारों की कमी होगी तो, गांव हो या शहर बुजुर्गो को अकेलापन हर पल महसूस होगा। ताली दोनो हाथ से बजती है। बच्चों और बुजुर्ग दोनो को ही एक दूसरे की भावनाओ का सम्मान करना होगा। जिससे दोनो के मन में कोई मलाल ना रहे।

❒ **किरण कलंत्री,** रेनुकूट (उ.प्र.)

गांव में रहना स्वास्थ्य वर्धक

बुजुर्गो का अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि से लगाव रहना स्वाभाविक है। गांव में अपना घर, सगे साथी, मंदिर, चौपाल हर एक जगह में जैसे खुशियां व अपनापन समाया रहता है। आस पड़ोस और साथियों का संग जीवन संध्या के दौरान संजीवनी का कार्य करता है। इस अवस्था में आते-आते अधिकांश दायित्व पूर्ण हो जाते है और बुजुर्गो के पास अवकाश का समय पर्याप्त मात्रा में रहता है, जिससे वह अपने हम उम्र साथियों के संग समय बिताना पसंद करते है। बच्चों के साथ शहरों में जाकर बसना, उस औपचारिक नये परिवेश में ढलना, उनके लिए मुश्किल होता है और ऐसे में उनके भीतर की खुशी लुप्त हो जाती है। शहरों की व्यस्त जीवनशैली के चलते बुजुर्गो के साथ बातचीत करने का अधिक समय किसी के पास होता नहीं जिसके चलते उन्हें अकेलापन महसूस होता है और मन खिन्न हो जाता है और यह उदासी कब बीमारियों में परिवर्तित हो जाती है पता ही नहीं चलता। शहर का वातावरण भी प्रदुषण से भरा रहता है, जिसके चलते चार दिवारी में एक खुला व्यक्तित्व सिमट कर रह जाता है। शरीर जब तक स्वस्थ रहता है तब तक बुजुर्ग गांव में रहते हुए अपने जीवन का भरपूर लुत्फ उठाऐं। छुट्टियों में बच्चे अपने परिवार के साथ गांव में जाकर रह सकते हैं। व्यवस्था न होने पर या स्वास्थ्य प्रतिकूल परिस्थिति में रहने पर ही शहर का रुख अपनाएं अन्यथा खुशी से जीवनयापन हेतु गांव का जीवन ही श्रेष्ठ होगा।

❒ **राजश्री राठी,** अकोला

बुजुर्गों का शहर में बसना निजी परिस्थिति पर निर्भर

गांव में उच्च शिक्षा की व्यवस्था नहीं होने के कारण बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु शहर में जाते हैं। वर्तमान समय में पहले जैसा शुद्ध खानपान नहीं होने के कारण अधिकतर शुगर, ब्लड प्रेशर, हृदय रोग आदि के शिकार रहते हैं, जिसके कारण बच्चे उन्हें गांव में अकेले छोड़ नहीं सकते। साथ रहने से सही देखभाल और बच्चों की उच्च शिक्षा भी हो जाती है। हां, ये सही है कि उन्हें गांव का माहौल शहर में नहीं मिलता, इसके लिए अपना कुछ समय बच्चों के लिये निकाल कर उनकी इच्छाओं का ध्यान रखना चाहिए। छुट्टी के दिन साथ में कुछ ऐसा काम करना चाहिए (ताश, चोपड़ खेलना आदि) ताकि उन्हें शहर में भी गांव जैसा लगे। हां बड़ों को भी अपने बच्चों की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बच्चों की दुनिया में भाव विभोर होकर रहना चाहिये ताकि खुद भी खुश व बच्चे भी खुश।

❒ **वीणा थिरानी,** झारसुगुड़ा (ओड़िशा)

अनुचित नहीं है गांव छोड़ शहर में बसना

समय के साथ चलकर निर्णय लेना चाहिये। आज तक जहां रहे, बड़े हुए व नाम, इज्जत, शोहरत पैसा कमाया वही गांव अपनी बाकी जिंदगी बेहतर हाल में पसंदीदा तौर तरीकों के साथ जीने के लिए खुशी से छोड़ना है तो कोई बात नहीं। बात ये है कि पढ़ लिखकर नई पीढ़ी नौकरी के लिए शहर की ओर आकर्षित हो रही है। ऐसी अवस्था में गांव में व्यापार कम हो गए हैं। अगर विश्वास है कि गांव से बढ़कर कामयाबी हम शहर में जाकर हासिल कर सकते हैं तो इसी इरादे को मजबूत करने, इरादों में दम भरकर अपनी मंजिल पाने के इरादे से शहर की ओर बढ़ना गलत नहीं है। अगर बेटा बहु कामकाजी हैं और पोता पोती की सही देखभाल के लिए आपका सही प्रबंध नहीं हो रहा हो तो बच्चों की देखभाल के लिए सम्मान के साथ गांव छोड़कर शहर में बसना उचित है। बुजुर्ग किसी असाधारण रोग से ग्रस्त हैं, गांव में वैद्यकीय सुविधाओं का अभाव है, ऐसे में भी गांव छोड़ना उचित है। दूसरा हमारी पैतृक संपत्ति की देखभाल करने कोई परिवार तैयार है और हमारी वजह से उन्हें रोजगार प्राप्त होता है, ऐसे में भी शहर में बसना उचित है।

❒ **मीना कलंत्री,** वसई, (भायंदर)

सांझ से घर में अकेला पड़ा हूँ। बेटा-बहू नौकरी कर आठ बजे तक आते हैं। लेटे-लेटे अपने दुर्भाग्य को कोस रहा हूं। कुछ पल आंखें मूंदी तो जाने किस लोक में चला गया। आंखें खोली तो सामने एक आकृति देखकर हैरान रह गया। काली छाया-सी यह आकृति मुझे स्पष्ट तो नहीं दिखाई दी, पर निश्चय ही कोई तो था?

निजात

हरिप्रकाश राठी
जोधपुर
94141-32483

दस दिन पूर्व पांव में मोच आई तो मुझे फिर खाट पकड़नी पड़ी। मोर्निंग वॉक से लौटते समय जाने कैसे पांव गड्ढे में पड़ गया। दो माह पूर्व कोहनी उतरी तो पन्द्रह रोज पट्टा बंधा था। उसके पहले भी जाने कितनी बार भुगतना पड़ा है। सात वर्ष पूर्व पांव की हड्डी टूटी तब तीन माह खाट में पड़ा था। तब तो सुमित्रा थी, बेचारी ने बहुत सेवा की, पर अब तो बेटे-बहू ऐसे देखते हैं मानो बार-बार पूछ रहे हों, "देखकर नहीं चल सकते क्या? मम्मी जब से ऊपर गई है, ऊपर ही देखते रहते हो!"

ये बला जाने कैसे आ गई? ऊपर से बैरी बुढ़ापा। वाकई जीने का समय तो मात्र जवानी है। यौवन सर्वत्र सुरभि बिखेरता एक पल्लवित वृक्ष है, लेकिन बुढ़ापा ऐसा ठूंठ है जो पल-पल गिरने का इंतजार करता है। जिस अवस्था में शरीर ही साथ न दे तो और कौन देगा?

सांझ से घर में अकेला पड़ा हूँ। बेटा-बहू नौकरी कर आठ बजे तक आते हैं। लेटे-लेटे अपने दुर्भाग्य को कोस रहा हूं। कुछ पल आंखें मूंदी तो जाने किस लोक में चला गया। आंखें खोली तो सामने एक आकृति देखकर हैरान रह गया। काली छाया-सी यह आकृति मुझे स्पष्ट तो नहीं दिखाई दी, पर निश्चय ही कोई तो था? मैनें चीखकर पूछा, "तुम कौन हो?"

पहले तो उसने इधर-उधर छुपने का प्रयास किया फिर जाने क्या सोच कर सम्मुख होकर बोला, "मैं दुःख हूं। तुम्हारी याद आई अतः पुनः तुम्हारे समीप चला आया।" उसकी तेज आवाज से कमरा गूंज उठा।

"तुम फिर चले आए? तुम्हें क्या मैं ही दिखता हूं? कितनी बार मैंने तुम्हें मार-मार कर भगाया, पर तुम हो कि हर बार पतली गली से चले आते हो ! समय-असमय कुछ नहीं देखते। इतना उपहास, धिक्कार एवं दुत्कार मिलने पर भी कोई क्या किसी के यहां पुनः आता है? इतना ही नहीं, तुम आकर चाती की तरह चिपक जाते हो। दुनिया में और भी तो हैं?" बिना सांस रोके मैं बोलता गया।

"आप तो खामख्वाह नाराज हो गए। मैं तो सर्वत्र समान रूप से विचरता हूं। आप जैसे विद्वान् तो फिर भी मेरे प्रभाव को दर्शन, चिंतन एवं अध्यात्म के बल से क्षीण कर देते हैं। अन्यत्र तो मेरे प्रवेश करते ही त्राहिमाम् हो जाता है। खैर! अब कोसो मत। आया हूं तो कुछ समय तो रहूंगा।"

"अरे! तू गया कब था? मुझे तो सम्पूर्ण जीवन यात्रा में तू दांये-बांये नजर आया। बचपन में मां चल बसी, कुछ बड़ा हुआ तो पिता चले गए। उसके बाद नौकरी प्राप्त करने में कितनी मशक्कत हुई! विवाह कौन-सा आराम से हो गया? अनाथ को कोई लड़की देता है क्या? वो तो भला हो सुमित्रा के पिता का, जिन्हें मुझ पर दया आ गई। वह थी तब तक तुझसे लड़ भी लेता था, लेकिन तेरी कृपा से वह भी पांच साल पहले स्वर्ग सिधार गई। अब तो निपट अकेला हूँ। तुझे क्या पता है पत्नी के साथ तेरा प्रभाव आधा एवं उसके बिना दस गुना हो जाता है। बेटे-बहू सेवा करते हुए ऐसे देखते हैं जैसे कह रहे हों, "अब और कितना जिओगे? मम्मी ऊपर अकेली है, आप भी चले क्यों नहीं जाते!"

"आप तो लट्ठ लेकर पीछे पड़ गए। ऐसे कह रहे हो जैसे मेरा भाई सुख कभी आपके यहां आया ही नहीं?"

"उसका आना तुझे कब सुहाया दुर्मुख! वह तो घड़ी भर सावन की फुहार की तरह कभी-कभी आता था। उसे तूने टिकने कब दिया? उसके साथ क्षणभर सांस लेता उसके पहले तो तू आ जाता। इतना ही नहीं, जब भी आता, पसर कर बैठ जाता। मुझे तो लगता है तेरी सुख से सांठ-गांठ है। घड़ी भर उसको भेजकर तू हरी-हरी चरवाता है फिर हाथ में कटार लिए ऐसे आता है जैसे बकरा काटने कसाई !"

"इतना भी नाराज क्यों होते हो? माना कि मैं जीवन भर आपके इर्द-गिर्द रहा, लेकिन क्षणभर ठण्डे दिमाग से सोचकर देखो कि अगर मैं न होता तो क्या आप इतना संघर्ष करते? मैं न होता तो क्या आपके भीतर आस्था का प्रादुर्भाव होता? क्या आप प्रभु को तहे दिल से पुकार पाते? क्या आपके अनुभव इतने विलक्षण होते? मुझे इतना न कोसो! चिंतन की मथनी में मथकर मैंने आपके कितने विकारों को बाहर किया। मैं न होता तो आप घमंडी, आततायी एवं दुराचारी बन जाते! यह मेरा ही अंकुश एवं भय था जिससे सहमे आप सदैव सत्पथ पर रहे। मेरी वजह से ही आपमें गांभीर्य का प्रादुर्भाव हुआ। मेरे कारण ही आप में युक्तियुक्त बोलने की कला आई, आपके कर्मबंधनों का विमोचन हुआ। मेरी वजह से ही आपकी आत्मा उच्चतर सोपानों पर चढ़ी। मैंने ही विटामिन की तरह आपकी आत्मा का पोषण किया। मैं न होता तो इस भौमनरक से आत्मोत्सर्ग की दुर्लभ यात्रा आपको कौन करवाता? मेरे त्याग का सिला आप यूं धिक्कार से दे रहे हैं?"

उसके गूढ़ वचन सुनकर क्षणभर के लिए मैं सहम गया। वह और कुपित न हो जाए, अतः ठण्डे होकर प्रश्न किया, "यह भौमनरक क्या है भाई?"

"भौमनरक यानि यह पृथ्वी, भू-लोक नरक है। यहां वे आत्माएं ही गिरती हैं जिनके पुण्य क्षीण हो गए हों। भांति-भांति की यातनाएं देकर मैं ही उनके पापों को काटता हूं। मेरे बिना कोई भी पुण्यरथ पर चढ़ ही नहीं सकता.."

उसकी बात पूरी भी न हुई थी कि मेरे पांव में पुनः दर्द हुआ। शायद बातों-बातों में एक पांव पर दूसरा पांव आ गया। दर्द से कराहते हुए मैंने उसे पुनः आड़े हाथों लिया, "अब बस कर! ज्यादा ज्ञान मत बघार! कुछ बताना ही चाहता है तो सिर्फ यह बता कि तुमसे निजात कैसे सम्भव है?"

मेरी बात सुनकर उसने पहले तो अट्टहास किया फिर रुककर बोला, "मुझसे निजात तो तुम्हें मेरी मां ही दिला सकती है। तुम कहो तो उसे बुलाऊं?"

"हां-हां, तुरंत बुलाओ।" मैं अधीर होकर बोला।

तभी एक और काली आकृति कमरे में प्रविष्ट हुई। वह दुःख की काली आकृति से कई गुना विकराल एवं भयानक थी। उसे देखते ही दुःख ने चरणस्पर्श किए तो उसने कंधों से पकड़कर उसे प्रेमपूर्वक उठाया, उसका माथा सूंघा, फिर आशीष देते हुए बोली, "पुत्र! अपनी मां के लिए तुमसे अधिक त्याग करने वाला कोई पैदा नहीं हुआ। तभी तो मैंने तुम्हें चिरंजीवी होने का आशीर्वाद दिया है। जाओ! तुम अजर रहोगे, अमर रहोगे !"

मातृ आशीर्वाद से उपकृत दुःख मुस्कुराता हुआ कमरे से निकल गया। लेकिन मेरी गति तो सांप-छछूंदर वाली थी। एक आकृति ने छोड़ा तो दूसरी सामने आ गई। मैं विह्वल होकर बोला, "अब तुम कौन हो?"

"मृत्यु !" इतना कहकर उसने मुझे अपने आगोश में ले लिया।

परिचय

नाम : **हरिप्रकाश राठी**

जन्मतिथि : 5 नवंबर 1955

शिक्षा : एमकॉम सीएआईआईबी

साहित्यिक यात्रा : दस कथा-संग्रह, तीन निःबन्ध-संग्रह, प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में सौ से ऊपर कहानियां प्रकाशित, आकाशवाणी पर 30 से ऊपर कहानियां प्रसारित। पत्रकारिता से भी जुड़े हैं। संपादकीय पृष्ठ पर गत दस वर्षों में 500 से ऊपर लेख। कतिपय कहानियां राजस्थानी, अंग्रेजी, संस्कृत, सिंधी, मराठी, पंजाबी , उड़िया में अनुदित, कथाबिम्ब पत्रिका द्वारा वर्ष 2021 में सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखन पर कमलेश्वर कथा-स्मृति सम्मान। प्रतिष्ठित राही संस्थान द्वारा जारी हिंदी के सौ वैश्विक साहित्यकारों में एक नाम। मानसश्री, राष्ट्र-किंकर, वीर दुर्गादास, सृजन साहित्य सम्मान सहित अन्य अनेक सम्मान। मॉस्को, एथेंस, रंगून अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों में उद्बोधन एवं सम्मान। कैरो, इजिप्ट में सृजन-गाथा डॉट कॉम का सर्वोच्च सम्मान। राही हिंदी रैंकिंग 22 में विश्व के प्रथम सौ साहित्यकारों में चयनित।

पता : सी-136 प्रथम विस्तार, लोकसेवा के पास, यूनिटी पार्क, कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राज.)

मोबाइल : 9414132483

ईमेल : hariprakashrathi@yahoo.co.in

स्तम्भ

राह जिंदगी की...

शक्तिमान बनिये

प्रो. कल्पना गगडानी, मुंबई

शक्ति पर्व नवरात्रि बड़े ही जोर शोर से हम सबने मनाया है। दो वर्ष के कोविडीय वातावरण के बाद इस वर्ष इस पर्व में लोगों का उत्साह उफनता नजर आया। हमारे त्यौंहार रोजमर्रा की जिंदगी में केवल उत्साह ही नहीं उत्पन्न करते अपितु वे जिंदगी की राह का सही रास्ता भी दिखाते हैं।

नवरात्रि पर्व गौर से शक्तिअर्जन कर शक्तिशाली बनने की गाथा का पर्व है। यह पर्व समझाता है कि जीवन में सफल होने के लिये अपने साध्य को प्राप्त करने के लिये साधक का शक्तिशाली होना आवश्यक है।

यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं या जीवन को सहज रूप से जीना चाहते हैं तो आपको शक्ति केंद्रित करनी होगी व आवश्यकतानुसार उपयोगी शक्तियों का विस्तार करना होगा।

जिंदगी की राह के लिये यह शक्ति अनेकों प्रकार की हो सकती हैं- ज्ञान की शक्ति, ध्यान की शक्ति, धन की शक्ति, जन की शक्ति, तन की शक्ति, मन की शक्ति, बुद्धि की शक्ति, कला कौशल की शक्ति।

सुप्त रूप में ये शक्तियाँ ईश्वर प्राप्त होती हैं परंतु इनका विकास व्यक्ति की मेहनत और लगन से होता है। केवल भाग्य के भरोसे रहकर इन्हें प्राप्त नहीं किया जा सकता।

पाठक कहेंगे कि अब उम्र के इस दौर में या अब बड़ी उम्र में यह पाठ पढ़ने से क्या फायदा? उनसे मेरा निवेदन है कि उम्र के बढ़ते दौर में शक्ति की अधिक आवश्यकता होती है। समय-समय पर शक्ति विशेष की अधिक आवश्यकता होती है। बढ़ती उम्र में मन की शक्ति को सशक्त करने की अधिक आवश्यकता होती है। धन की शक्ति के उचित नियोजन की आवश्यकता होती है और तन में उम्र के अनुरूप जो शक्ति बची है, उसे अनुशासित तरीके से ऊर्जावान बनाये रखने की आवश्यकता है। नियमित घूमना, व्यायाम और योग-अभ्यास से तन को शक्तिशाली बनायें और सकारात्मक विचार, अध्ययन, मनन चिंतन से मन को शक्तिशाली बनायें।

शक्ति पर्व से "राह जिंदगी की" शक्तिशाली बनाने का प्रण लें और पूजा की तरह उसे नियमित करें।

चाहे राजनीति में रहे अथवा किसी स्वयं सेवी संस्था के साथ सेवा पथ पर अग्रसर, बस जीवन का लक्ष्य जनसेवा रहा तो वह उन्होंने हर हाल में की ही। घाटा बिल्लौद (म.प्र.) निवासी पश्चिमी म.प्र. प्रादेशिक सभा अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश भराणी समाजसेवा पथ के वे पथिक थे जिनकी सेवा भावना ने उन्हें जनसेवा का पर्याय ही बनाकर रख दिया। गत दिनों जब आपने अंतिम बिदाई ली तो हर किसी की आंखें नम हुए बिना नहीं रह सकीं।

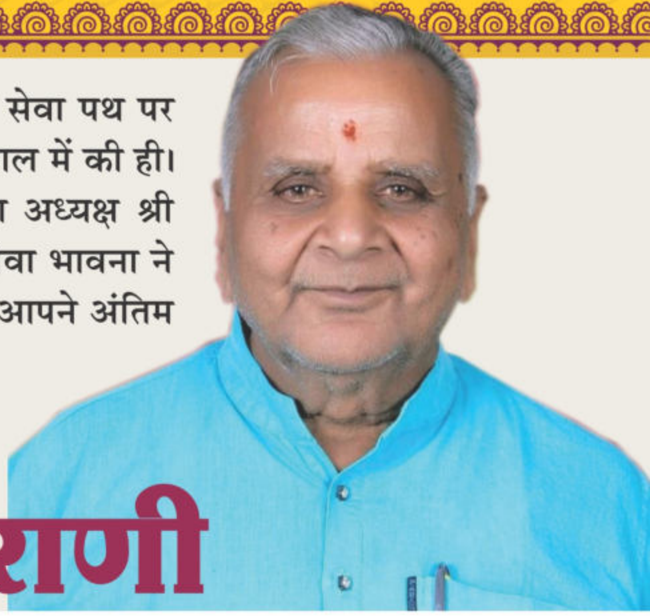

नहीं रहे जनसेवा के पर्याय श्री ओमप्रकाश भराणी

न सिर्फ घाटा बिल्लोद क्षेत्र बल्कि लगभग पूरे प्रदेश में समाजसेवा का पर्याय रहे पश्चिमी मध्यप्रदेश प्रादेशिक सभा अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश भराणी 'भैयाजी' का गत 31 अगस्त को प्रातः गणेश चतुर्थी के पावन दिवस पर देहावसान हो गया। मोक्षधाम पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में उप लोकायुक्त उमेश माहेश्वरी, महासभा कार्यसमिति सदस्य अशोक ईनानी, प्रदेश सभा के मानद मंत्री अजय झंवर, कोषाध्यक्ष राम तोतला, कार्यालय मंत्री अनिल मंत्री, महासभा सदस्य पुरूषोत्तम जाजू, नरेश माहेश्वरी, पुरूषोत्तम मंत्री, प्रकाश राठी इंदौर, सतीश मंत्री बेटमा, सुरेश साबू सीहोर आदि कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

बचपन से मिले सेवा के संस्कार

आपका जन्म 05 अक्टूबर 1946 को श्री बालकृष्ण एवं श्रीमती गोदावरी बाई भराणी के यहां हुआ था। आप तीन भाई एवं तीन बहनों में दूसरे नम्बर पर थे। बी.कॉम. तक शिक्षा के दौरान छात्र जीवन से ही जनसेवा के कार्य में अग्रणी रहे। आर.एस.एस. विचारधारा के होने की वजह से संघ के साथ जनसंघ एवं भारतीय जनता पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता भी रहे। शुरू से ही आप मिलनसारिता, एकता एवं भाईचारे के साथ समाजहित में संलग्न रहे। इन्हीं विचारधारा के साथ वर्ष 1984 में हुए दंगे में दंगाईयों को समझाने के प्रयास में आपको गहरी चोटें लगी। इसके बावजूद भी आपने जनसेवा का कार्य नहीं छोड़ा।

समाजसेवा को समर्पित जीवन

घाटाबिल्लौद ग्राम पंचायत के सरपंच पद (अन्त्योदय समिति के अध्यक्ष) पर रहकर नगर के अनेक विकास कार्य करवाये। इसी कड़ी में सामाजिक सक्रियता के रूप में भी स्व. श्री मदनलाल पलोड़ (तात्कालीक प्रदेश सभा अध्यक्ष) के कार्यकाल में उनके साथ जुड़कर अनेक सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेना शुरू किया। वर्ष 2004 के सिंहस्थ मेला उज्जैन में माहेश्वरी समाज का केंप लगाकर समाजबंधुओं की सेवा की। ग्रामीण स्तर पर माहेश्वरी समाज के परिचय सम्मेलन का निर्णय लेकर रतलाम, नागदा, उज्जैन में परिचय सम्मेलन आयोजित करवाये। इसी कड़ी में श्री पलोड़ के कार्यकाल में धार जिला माहेश्वरी समाज की जनगणना पुस्तिका का विमोचन घाटाबिल्लौद नगर में रखा गया। इसी कार्यक्रम के दौरान अचानक दिल का दौरा पड़ा। फिर भी आपने अस्पताल से भी इसी कार्य को संचालित करके उस सामाजिक कार्य को सम्पन्न करवाया। उनकी ऐसी सेवा ने ही उन्हें समाजसेवा का पर्याय बना दिया।

श्रद्धांजलि

श्रीमती कमलादेवी लड्ढा

महू (म.प्र.)। शम्भू दयाल लड्ढा व पश्चिमी मध्यप्रदेश माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष, आध्यात्म मण्डल महू के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश लड्ढा की माताजी, रूक्मादेवी पन्नालाल लड्ढा ट्रस्ट परिवार की वरिष्ठ सदस्या व स्व. सेठ मोहनलाल लड्ढा की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी लड्ढा का देवलोकगमन विगत दिनों हो गया। पूर्व उप लोकायुक्त जस्टिस उमेश चंद्र माहेश्वरी, कैंट बोर्ड के उपाध्यक्ष कैलाश दत्त पांडे, प.म.प्र. प्रादेशिक सभा के कोषाध्यक्ष राम तोतला, प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के निवर्तमान मंत्री पुष्प माहेश्वरी, माहेश्वरी शिक्षण मंडल के अध्यक्ष पवन माहेश्वरी, सचिव मनोज भराणी, कोषाध्यक्ष कमल मूंदड़ा महू, माहेश्वरी समाज के मंत्री पुरुषोत्तम लोया, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर प्रमुख केदार प्रसाद गोयल सहित कई गणमान्यजनों ने अंतिम यात्रा के समय उपस्थित रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

खरी-खरी

सेवा, त्याग, मान, मर्यादा
नीति, धर्म की सीख अमर

शेष रहीं व्याख्यानों में
या मंदिर की दीवारों पर

औरों में तो राम सदृश
व्यक्तित्व खोजते हम लेकिन

अंतरमन में पाल रहे हैं
द्वेष दंभ के दशकंधर

© राजेन्द्र गट्टानी, भोपाल
94250-16939, 87702-21707

आमतौर पर गठिया को एक ऐसी बीमारी के रूप में जाना जाता है, जो आमतौर पर अच्छे भले व्यक्ति के जोड़ों को जकड़ कर उसे चलने-फिरने तक का मोहताज अर्थात पंगु बना देता है। वृद्धों की समझी जाने वाली इस बीमारी की चपेट में अब युवा वर्ग भी बड़ी संख्या में आ रहा है। आइये जानें क्या हैं, इससे बचाव के आसान उपाय?

पंगु बनाने वाला रोग गठिया

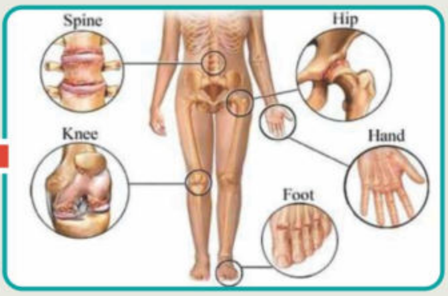

कैलाशचंद्र लड्ढा
जोधपुर

आमवात जिसे गठिया भी कहा जाता है, अत्यंत पीड़ादायक बीमारी है। अपक्व आहार रस याने 'आम' 'वात' के साथ संयोग करके गठिया रोग को उत्पन्न करता है। अतः इसे आमवात भी कहा जाता है। इसमें जोडों में दर्द होता है, शरीर में यूरिक एसिड की मात्रा बढ़ जाती है। छोटे-बड़े जोड़ों में सूजन का प्रकोप होता रहता है। यूरिक एसिड के कण (क्रिस्टल्स) घुटनों के साथ अन्य जोड़ों में भी जमा हो जाते हैं। जोडों में दर्द के मारे रोगी का बुरा हाल रहता है। गठिया के पीछे यूरिक एसीड की जबर्दस्त भूमिका रहती है। इस रोग की सबसे बडी पहचान ये है कि रात को जोडों का दर्द बढता है और सुबह अकड़न महसूस होती है। यदि शीघ्र ही उपचार कर नियंत्रण नहीं किया गया तो जोडों को स्थायी नुकसान हो सकता है। अतः गठिया के ईलाज में हमारा उद्धेश्य शरीर से यूरिक एसिड बाहर निकालने का प्रयास होना चाहिये।

यूरिक एसिड है इसका कारण

यह यूरिक एसिड प्यूरीन के चयापचय के दौरान हमारे शरीर में निर्मित होता है। प्यूरिन तत्व मांस में सर्वाधिक होता है। इसलिये गठिया रोगी के लिये मांसाहार जहर के समान है। वैसे तो हमारे गुर्दे यूरिक एसिड को पेशाब के जरिये बाहर निकालते रहते हैं। लेकिन कई अन्य कारणों की मौजूदगी से गुर्दे यूरिक एसिड की पूरी मात्रा पेशाब के जरिये निकालने में असमर्थ हो जाते हैं। इसलिये इस रोग से मुक्ति के लिये जिन भोजन पदार्थो में प्युरीन ज्यादा होता है, उनका उपयोग कतई न करें। याद रहे, मांसाहार शरीर में अन्य कई रोग पैदा करने के लिये भी उत्तरदायी है। वैसे तो पतागोभी, मशरूम, हरे चने, वालोर की फ़ली में भी प्युरिन ज्यादा होता है लेकिन इनसे हमारे शरीर के यूरिक एसिड लेविल पर कोई ज्यादा विपरीत असर नहीं होता है। अतः इनके इस्तेमाल पर रोक नहीं है। जितने भी सॉफ्ट ड्रिन्क्स हैं, सभी परोक्ष रूप से शरीर में यूरिक एसिड का स्तर बढ़ाते हैं, इसलिये सावधान रहने की जरूरत है।

यह अपनाऐं के आसान उपाय

सबसे जरूरी और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि मौसम के मुताबिक 3 से 6 लीटर पानी पीने की आदत डालें। ज्यादा पेशाब होगा और अधिक से अधिक विजातीय पदार्थ और यूरिक एसिड बाहर निकलते रहेंगे। आलू का रस 100 मिली भोजन के पूर्व लेना भी हितकर है। संतरे के रस में 15 मिली काड लिवर आईल मिलाकर शयन से पूर्व लेने से गठिया में आश्चर्यजनक लाभ होता है। लहसुन, गिलोय, देवदारू, सौंठ, अरंड की जड ये पांचों पदार्थ 50-50 ग्राम लें। इनको कूट-खांड कर शीशी में भर लें। 2 चम्मच की मात्रा में एक गिलास पानी में डालकर ऊबालें, जब आधा रह जाए तो उतारकर छान लें और ठंडा होने पर पी लें। ऐसा सुबह शाम करने से गठिया में अवश्य लाभ होगा। लहसुन की कलियां 50 ग्राम लें। सैंधा नमक, जीरा, हींग, पीपल, काली मिर्च व सौंठ 2-2 ग्राम लेकर लहसुन की कलियों के साथ भली प्रकार पीस कर मिलालें। यह मिश्रण अरंड के तेल में भून कर शीशी में भर लें। आधा या एक चम्मच दवा पानी के साथ दिन में दो बार लेने से गठिया में आशातीत लाभ होता है। हर सिंगार के ताजे पती 4-5 नग लें। पानी के साथ पीस लें या पानी के साथ मिक्सर में चला लें। यह नुस्खा सुबह-शाम लें 3-4 सप्ताह में गठिया और वात रोग नियंत्रित होंगे। जरूर आजमाएं।

आयुर्वेद में है स्थायी समाधान

आयुर्वेदिक चिकित्सा भी कई मामलों मे फ़लप्रद सिद्ध हो चुकी है। पंचामृत लोह गुगल, रसोनादि गुगल, रास्नाशल्ल की वटी, तीनों एक-एक गोली सुबह और रात को सोते वक्त दूध के साथ 2-3 माह तक लेने से गठिया में बहुत फ़ायदा होता है। उक्त नुस्खे के साथ अश्वगंधारिष्ट, महारास्नादि काढ़ा और दशमूलारिष्टा 2-2 चम्मच मिलाकर दोनों वक्त भोजन के बाद लेना हितकर है। चिकित्सा वैज्ञानिकों का मत है कि गठिया रोग में हरी साग सब्जी का प्रचुरता से इस्तेमाल करना बेहद फ़ायदेमंद रहता है। पत्तेदार सब्जियों का रस भी अति उपयोगी रहता है। भाप से स्नान करने और जेतुन के तैल से मालिश करने से गठिया में अपेक्षित लाभ होता है। गठिया रोगी को कब्ज होने पर लक्षण उग्र हो जाते हैं। इसके लिये गुन गुने जल का एनिमा देकर पेट साफ़ रखना आवश्यक है। अरण्डी के तैल से मालिश करने से भी गठिया का दर्द और सूजन कम होती है। सूखे अदरक (सौंठ) का पावडर 10 से 30 ग्राम की मात्रा में नित्य सेवन करना गठिया में परम हितकारी है। चिकित्सा वैज्ञानिकों का मत है कि गठिया रोगी को जिन्क, केल्शियम और विटामिन सी के सप्लीमेंट्स नियमित रूप से लेते रहना लाभकारी है। गठिया रोगी के लिये अधिक परिश्रम करना या अधिक बैठे रहना दोनों ही नुकसान कारक होते हैं। अधिक परिश्रम से अस्थिबंधनो को क्षति होती है जबकि अधिक गतिहीनता से जोड़ों में अकड़न पैदा होती है। एक लीटर पानी तपेली या भगोनी में आंच पर रखें। इस पर तार वाली जाली रख दें। एक कपड़े की चार तह करें और पानी मे गीला करके निचोड़ लें । ऐसे दो कपडे रखने चाहिये। अब एक कपड़े को तपेली से निकलती हुई भाप पर रखें। गरम हो जाने पर यह कपड़ा दर्द करने वाले जोड़ पर 3-4 मिनिट रखना चाहिये। इस दौरान तपेली पर रखा दूसरा कपड़ा गरम हो चुका होगा। एक को हटाकर दूसरा लगाते रहें। यह विधान रोजाना 15-20 मिनिट करते रहने से जोड़ों का दर्द आहिस्ता-आहिस्ता समाप्त हो जाता है। यह बहुत कारगर उपाय है।

कपालभाती को बीमारी दूर करने वाले प्राणायाम के रूप में देखा जाता है। ऐसे पेशंट्स जो बिना बैसाखी के चल नही पाते थे नियमित कपालभाती करने के बाद उनकी बैसाखी छूट जाती है और वे ना सिर्फ चलने, बल्कि दौड़ने भी लगते हैं। तो आईये जानें क्या-क्या हैं, इसके लाभ?

■ टीम SMT

सर्व रोगों का रामबाण कपालभाति

कपालभाती करने वाला साधक आत्मनिर्भर और स्वयंपूर्ण हो जाता है। कपालभाती से हार्ट के ब्लॉकेजेस् पहले ही दिन से खुलने लगते हैं और 15 दिन में बिना किसी दवाई के वे पूरी तरह खुल जाते है। इससे हृदय की कार्यक्षमता बढ़ती है, जबकि हृदय की कार्यक्षमता बढ़ाने वाली कोई भी दवा उपलब्ध नही है। कपालभाती करने वालों का हृदय कभी भी अचानक काम करना बंद नही करता, जबकि आजकल बड़ी संख्या में लोग अचानक हृदय बंद होने से मर जाते हैं। कपालभाती करने से शरीरांतर्गत और शरीर के ऊपर की किसी भी तरह की गाँठ हो तो वह गल जाती है, क्योंकि कपालभाती से शरीर में जबर्दस्त उर्जा का निर्माण होता है जो गाँठ को गला देती है, फिर वह गाँठ चाहे ब्रेस्ट की हो अथवा अन्य कही की। ब्रेन ट्यूमर हो अथवा ओव्हरी की सिस्ट हो या यूटेरस के अंदर फाइब्रॉईड हो, क्योंकि सबके नाम भले ही अलग हो लेकिन गाँठ बनने की प्रक्रिया एक ही होती है।

इनमें भी यह लाभकारी

⏭ कपालभाती से बढा हुआ कोलेस्टेरोल कम होता है। खास बात यह है कि कपालभाती शुरू करने के प्रथम दिन से ही मरीज की कोलेस्टेरॉल की गोली बंद हो जाती है।

⏭ कपालभाती से बढा हुआ ईएसआर, युरिक एसिड, एसजीओ, एसजीपीटी, क्रिएटिनाईन, टीएसएच, हार्मोन्स, प्रोलेक्टीन आदि सामान्य स्तर पर आ जाते है।

⏭ कपालभाती करने से हिमोग्लोबिन एक महीने में 12 तक पहुँच जाता है, जबकि एलोपॅथीक गोलियाँ खाकर कभी भी किसी का हिमोग्लोबिन इतना बढ़ नही पाता है। कपालभाती से हीमोग्लोबिन एक वर्ष में 16 से 18 तक हो जाता है। महिलाओं में हिमोग्लोबिन 16 और पुरुषों में 18 होना उत्तम माना जाता है।

⏭ कपालभाती से महिलाओं के मासिक धर्म की सभी शिकायतें एक महीने में सामान्य हो जाती है।

⏭ कपालभाती से थायरॉईड की बीमारी एक महीने में ठीक हो जाती है, इसकी गोलियाँ भी पहले दिन से बंद की जा सकती है।

⏭ इतना ही नही बल्कि कपालभाती करने वाला साधक 5 मिनिट में मन के परे पहुँच जाता है। अच्छे हार्मोन्स का सीक्रेशन होने लगता है। स्ट्रेस हार्मोन्स गायब हो जाते है, मानसिक व शारीरिक थकान नष्ट हो जाती है। इससे मन की एकाग्रता भी आती है।

ये हैं इसके विशिष्ट लाभ

⏭ कपालभाती से खून में प्लेटलेट्स बढ़ते हैं। व्हाइट ब्लड सेल्स या रेड ब्लड सेल्स यदि कम या अधिक हुए हों तो वे निर्धारित मात्रा में आकर संतुलित हो जाते हैं। कपालभाती से सभी कुछ संतुलित हो जाता है, ना तो कोई अंडरवेट रहता है, ना ही कोई ओव्हरवेट रहता है। अंडरवेट या ओव्हरवेट होना दोनों ही बीमारियाँ हैं।

⏭ कपालभाती से कोलायटीस, अल्सरीटिव्ह कोलायटीस, अपच, मंदाग्नि, संग्रहणी, जीर्ण संग्रहणी, आँव जैसी बीमारियाँ ठीक होती है। काँस्टीपेशन, गैसेस, एसिडिटी भी ठीक हो जाती है। पेट की समस्त बीमारियाँ ठीक हो जाती है!

⏭ कपालभाती से सफेद दाग, सोरायसिस, एक्झिमा, ल्युकोडर्मा, स्कियोडर्मा जैसे त्वचारोग ठीक होते हैं। स्कियोडर्मा पर कोई दवाई उपलब्ध नही है लेकिन यह कपालभाती से ठीक हो जाता है। अधिकतर त्वचा रोग पेट की खराबी से होते है, जैसे जैसे पेट ठीक होता है ये रोग भी ठीक होने लगते हैं !

⏭ कपालभाती से छोटी आँत को शक्ति प्राप्त होती है जिससे पाचन क्रिया सुधर जाती है। पाचन ठीक होने से शरीर को कैल्शियम, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, प्रोटीन्स इत्यादि उपलब्ध होने से कुशन्स, लिगैमेंट्स, हड्डियाँ ठीक होने लगती हैं और 3 से 9 महिनों में अर्थ्राइटीस, एस्ट्रो अर्थ्राइटीस, एस्ट्रो पोरोसिस जैसे हड्डियों के रोग हमेशा के लिए ठीक हो जाते हैं।

⏭ ध्यान रखिये की कैल्शियम, प्रोटीन्स, हिमोग्लोबिन, विटामिन्स आदि को शरीर बिना पचाए बाहर निकाल देता है क्योंकि केमिकल्स से बनाई हुई इस प्रकार की औषधियों को शरीर द्वारा सोखे जाने की प्रक्रिया हमारे शरीर की प्रकृति में ही नही है। हमारे शरीर में रोज 10% बोनमास चेंज होता रहता है, यह प्रक्रिया जन्म से मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है अगर किसी कारणवश यह बंद हुई, तो हड्डियों के विकार हो जाते हैं। कपालभाती इस प्रक्रिया को निरंतर चालू रखती है इसीलिए कपालभाती नियमित रूप से करना आवश्यक है।

खुश रहें - खुश रखें

हमारी धरोहर हैं घर के बड़े बूढ़े...

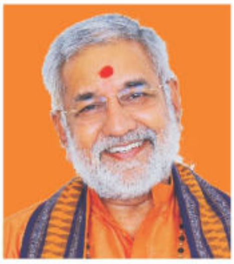

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

हमारा देश कई बातों में दुनिया के अनेक देशों से पीछे है, लेकिन एक बात में हम दुनियाभर पर भारी पड़ते हैं, जो है परिवार। जैसे परिवार हमारे पास है, दुनिया में कहीं नहीं हैं। हमारी परिवार की व्यवस्था यूं तो कई मामलों में अनूठी है, लेकिन इनमें सबसे खास हे हमारे बुजुर्गों का हमारे साथ होना।

भारत के परिवारों की एक विशेषता है कि यहाँ 80 बरस का एक वृद्ध वही सम्मान पा लेता है जो स्नेह आठ वर्ष के बच्चे को उपलब्ध है। कुछ वृद्ध अपने परिवार के साथ हैं तो उनकी सेवा हो जाती है। एक वर्ग ऐसा है जिनके बच्चे दूर हैं, वे वो जैसे तैसे अपनी सेवा पूरी कर रहे हैं। यह अवसर अभी भी है कि अपने बड़े-बूढ़ों से कुछ ऐसा बेशकीमती ले लें जिसे लेने में हम चूक रहे हैं।

रामकथा की दो घटनाओं पे नजर डालिये। बाली को जब श्री राम ने बाण मारा तो अपनी अंतिम सांस के समय उसने अपने बेटे अंगद को रामजी को सौंप दिया। इस प्रसंग के पीछे हमारे लिए सीखने-समझने की बात यह है कि समय रहते अपनी संतानों को भगवान से जोड़ दीजिए। यह प्रयोग लगातार करते रहना चाहिए।

दुनिया में सबसे अधिक गाया जाने वाला साहित्य है रामकथा का सुंदरकांड। इसकी पहली चौपाई है- 'जामबंत के बचन सुहाए। सुनी हनुमंत ह्रदय अति भाए।

सुंदरकाण्ड का पहला शब्द था 'जामवंत' जो कि रामजी की सेना का सबसे बूढ़ा सदस्य था। हनुमानजी की यशागाथा है सुन्दरकाण्ड। हनुमानजी जब पहली बार अपनी सफलता की यात्रा पर निकले तो उस साहित्य में जांबवंत को सबसे पहले याद किया।

हनुमानजी और तुलसीदासजी हमें एक बात सीखा गए कि जिस राष्ट्र में, समाज में, परिवार में बड़े-बूढ़ों का मान होगा, उनका आशीर्वाद प्राप्त किया जाएगा, उनकी सेवा की जायेगी, उस राष्ट्र, समाज और परिवार की सफलता सुनिश्चित है।

मेरा तो मोहश्वरी समाज के कई बड़े-बूढ़ों के साथ उठना-बैठना होता है। जब मैं उनसे उनकी स्मृतियां सुनता हूं तो भरोसा हो जाता है कि हर वृद्ध एक धरोहर है और संसार को अतुलनीय देकर जाएगा। अब हमारी पीढ़ी के ऊपर है कि हम इनसे कितना और कैसा उपयोगी ले सकते हैं...।

ऋषिमुनि समूह द्वारा काल गणना की
प्राचीन नगरी उज्जयिनी से प्रकाशित

श्री विक्रमादित्य पञ्चाङ्ग
इतना सरल की अपने घर के पंडित आप खुद बन जाए

डेढ़ वर्षीय
विवाह मुहूर्त
के साथ

सभी प्रमुख बुक
स्टॉलों पर उपलब्ध

व्रत-पर्व देखना हो या शुभ मुहूर्त या विवाह के लिए पत्रिका का करना हो मिलान
कहीं जाने की जरूरत नहीं, स्वयं देखें अपने पञ्चाङ्ग में

90, विद्या नगर, टेढ़ी खजूर दरगाह के पीछे, साँवेर रोड़, उज्जैन (म.प्र.) मो. 094250-91161

KHANA KHAZANA

चॉकलेट नट्स रोल

सामग्रीः- बारिक पिसेस में कटा हुआ कुकिंग चॉकलेट 200 ग्राम, बटर 2 टेबलस्पून, क्रीम 2 टेबलस्पून, बादाम-काजू को धिमी गैस पर भूनना और उसके दरदरे पिसेस किये हुये एक कप, बारीक कटे सूखे अंजीर पाव कप, दरदरे हुए अखरोट के पीसेस पाव कप ।

विधिः- कुकिंग चॉकलेट, बटर और क्रीम मिलाकर डबल बॉयलर पर मेल्ट करे। अखरोट को छोड़कर बाकी सभी सूखे मेवे मिलाकर उसे थोड़ा सख्त होने के लिए फ्रिज में रख दें। फिर 10 मिनट बाद यह मिश्रण निकलकर उसका रोल बनावे। यह रोल अखरोट की गिरी में रोल करें। यह रोल बटर पेपर पर या सिल्वर फॉईल में लपेट कर 6 से 8 घंटे के लिए फ्रिज में सेट करें। फिर उसके 2 इंच की स्लाइस के पीससे कट करें। और इस दिवाली पर अपने आए हुए मेहमानों को चॉकलेट नट्स रोल खिलाकर खुश करें।

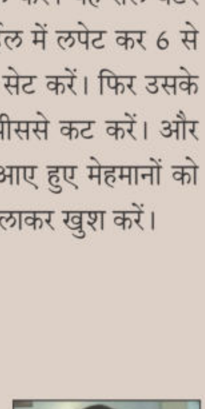

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

बुढ़ापें में पद री लालसा

खम्मा घणी सा हुकुम आज आपा बात कर रियाँ हां बुढ़ापे में पद री.. हुकुम सही कहूं जीवन रो असली आनन्द ही बुढ़ापे में ही है जवानी में तो फुर्सत ही नहीं मिळे जिम्मेदारी सूं.

हुकम बुढो कुण हुवणी चाहवे ..? शायद कोई नहीं ..! पर जवानी भी तो टिकयोड़ी कठे रेहवे ..? आपाणे ग्रंथों के अनुसार चिर युवा तो शायद स्वर्ग में ही रहता हुवेला। पृथ्वी लोक में तो जवानी रे बाद इंसान बूढ़ों हूँ जावे और बाद में मर जावे। जीवन करीब 100 साल रो चक्र है उन्हें बाद समाप्ति।

हुकुम बुढ़ापे री उम्र करीब 60- 65 साल रे बाद री मानिजे.. कई लोग पचास पचपन साल में ही बूढा दिखण लाग जावें। कई व्यक्ति सतर-पचतर साल में भी बुढ़ापे री झलक नहीं दिखे।

हुकुम अगर बात करा नेताओं री... तो नेता लोग 80-90 साल रा हूँ जावें तो भी अपने आपने बूढ़ा नहीं समझे.. चुनाव लड़ने रे समय वाणी जवानी परवान पर चढ़ जावें और टिकिट लेने पद पर आवण रा कई पैतरा अपनावें और पद ले भी लेवें .. हुकुम इतिहास गवाह है एड़ा बहुत कम लोग है जो उम्र रे अंतिम पड़ाव पर आने पद छोड़ देवे। भारत री राजनीति में नानाजी देशमुख एकमात्र एड़ा व्यक्ति था जो मंत्री पद ने ठुकरा दियो और घोषणा की पैसठ साल रे बाद में व्यक्ति ने रिटायर ले लेवणों चईजे ।

हुकुम कई लोग परिस्थितियों सूं समझौतों कर लेवे। अपने आपने सीनियर सिटीजन केवणों शुरू कर देवें। सीनियर सिटीजन हुवण रा कई फायदा है। ट्रैन में टिकिट सस्ती मिल जावें, बैंक में ब्याज ज्यादा.. अगर लाइन लंबी हुवे तो सीनियर री लाइन अलग कर ने वाणे प्रति सहानुभति राखें। आपरें द्वारा कियोड़ा अच्छा कार्य रे वास्तें आपनें सम्मानित करें।

हुकुम चाहे समाज रो पद हो या घर मे बड़ा स्थान पर... हर व्यक्ति ज्यों ज्यों बुढ़ापे री दहलीज़ पर कदम रखता जावें विने मोह माया सूं धीरे धीरे आसक्ति छोड़नी चालू कर देवणी चईजे ।

साठ -पैसठ साल रे बाद तो हर व्यक्ति ने ईश्वर रो आभार प्रकट करणो चईजे कि जीवन मे बुढापों देखण ने मिलियों.. कई लोग तो जवानी में ही भगवान ने प्यारा हूँ जावें। बुढ़ापे में अगर आप चल पा रियाँ हो.. देख पा रियाँ हो.. सुण पा रियाँ हो.. खुद रो काम कर पा रियाँ हो... तो ईश्वर री असीम कृपा आप पर है। जिण लोगा रा गुर्दा खराब नहीं हुया.. जो डायलिसिज़ पर नहीं है जिनो गुर्दा प्रत्यारोपण नहीं हुयो वे ईश्वर ने बार बार धन्यवाद देवों क्योंकि बुढ़ापे में स्वास्थ्य ही एकमात्र धन है विने बचानें राखों। आपरे जीवन रो अनुभव आपरे परिवार में समाज मे देने आवण वाली पीढ़ी रो भविष्य सुदृढ और सशक्त रे साथे वानें आपरे ज्ञान रे निचोड़ सूं कई गलतियां करण सूं बचा सकों.. सही राह दिखाने आणे वाली पीढ़ी ने मजबूती दे सकों।

मुलाहिजा फरमाइये

ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- टूट कर मैं ज्यों बिखरती जा रही हूँ,
  किंतु छोड़ा है नहीं मैंने संवरना।
- सिलसिला यह चल रहा है मुद्दतों से
  नहीं भूली हूँ कभी बचना सिमटना।
- मोड़ कितने ही मिले इस ज़िंदगी में
  याद लेकिन रह गया बच कर निकलना।
- हौसला अपना यकीनन साथ पाया,
  और तेरी चाह थी मुझ पर मेहरबा।
- जीस्त में जो मौत का साया मिला था,
  पड़ गया उससे मुझे बरबस उलझना।
- वक्त वो जब मैं बहुत घबरा गयी थी,
  भूल बैठी थी कि जब खुद को निरखना।
- हम बिछुड़ कर बारहा अक्सर मिले है,
  रह गया लेकिन अधूरा एक सपना।

कार्टून कौतुक

प्रथम पुण्य स्मरण

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि॥

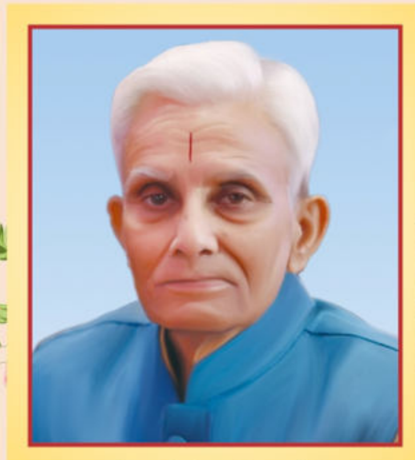

सुप्रसिद्ध प्रबल गोरखा दक्षिण बाहु (प्रथम श्रेणी) से सम्मानित

श्री नंदकिशोर सारडा

(श्रीजी शरण दिनांक 7 जुलाई 2021)

प्रेम की प्रतिमूर्ति एक निर्मल निश्छल आत्मा
आपको कोटिश: प्रणाम
जीवन पथ पर प्रेरणा हो आप, यादों में खुशनुमा अहसास हो आप
क्या हुआ जो पास नहीं, सदा हमारे पास हो आप

श्रद्धावनत
श्रीमती सम्पतदेवी सारडा (धर्मपत्नी)
श्रीमती गिरिजा-सुनील सारडा (पुत्रवधू-पुत्र)
श्रीमती पायल- अनिल सारडा (पुत्रवधू-पुत्र)
डॉ. ईरा, ईशान, यश व युवराज सारडा (पौत्री-पौत्र)

◆ सारडा ग्रुप ऑफ कम्पनीज ◆
नेपाल, काठमांडू, बिराटनगर, लहान

राशिफल संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए अक्टूबर का महीना अनुकूल रहेगा। इस महीने के प्रारंभ में आपके छठे भाव में तीन ग्रह आपस में युती करेंगे, जिससे आपके स्वास्थ्य पर अच्छा असर आएगा। शनि इस महीने में आपके कर्म भाव में रहेंगे। इस वजह से आपके कार्यक्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे। पारिवारिक जीवन संतोषप्रद रहेगा एवं सुखद रहेगा। इस माह क्रोध की अधिकता रहेगी, जिसके प्रति सजग रहें। बहुत लंबे समय से पेंडिंग कार्यों के पूर्ण होने के लिए आप साहस जुटा पाएंगे। छोटे भाई-बहनों का स्नेह एवं सहयोग मिलेगा।

वृषभ

वृषभ राशि के जातकों के लिए अक्टूबर माह शुभ फलदायी रहेगा। जो जातक नवीन कार्य योजना बना रहे हैं एवं नया कार्य व्यवसाय प्रारंभ करने वाले हैं, उन्हें सफलता मिलेगी। नौकरी पेशा जातकों के लिए यह महीना प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला है एवं कार्यक्षेत्र में अनुकूल वातावरण देगा। प्राइवेट सेक्टर में कार्य करने वाले जातक नई कंपनी ज्वाइन कर सकते हैं। यदि किसी जातक के कार्यक्षेत्र में कोई मुकदमा आदि चल रहा हो तो उसमें जीत होने की संभावना है। परिवार में कोई शुभ कार्य आयोजित हो सकता है, जिस पर धन व्यय होना है। परिवार के वृद्धजनों के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा एवं यात्रा पर जाने की संभावना रहेगी। विद्यार्थियों के लिए यह महीना अनुकूल रहेगा एवं प्रतियोगी परीक्षाएं पास करने की दृष्टि से सहयोगी रहेगा।

मिथुन

मिथुन राशि के जातकों के लिए अक्टूबर महीना मिश्रित फल वाला रहेगा। व्यवसाय कार्य क्षेत्र की दृष्टि से यह माह अनुकूल रहेगा किंतु आर्थिक दृष्टि से आपको विशेष सजग रहने की आवश्यकता है। किसी भी प्रकार के इन्वेस्टमेंट के पहले आपको भली-भांति विचार कर लेना चाहिए। पारिवारिक संबंधों में एवं दांपत्य जीवन में भ्रम की स्थिति निर्मित हो सकती है, इसके प्रति सजग रहें। घर के बड़े सदस्यों खासकर भाई-बहनों के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। बाहर के लोगों और विदेश से धन लाभ की संभावना है। सड़क पर चलते समय एवं ड्राइविंग करते समय सतर्कता रखें।

कर्क

कर्क राशि के जातकों के लिए अक्टूबर महीना उतार-चढ़ाव का रहेगा। दशम भाव में ग्रहण योग बनने से कैरियर में आकस्मिकता और भ्रम की स्थिति बनेगी। छोटे भाई-बहनों से सहयोग मिलेगा एवं परिवार में सकारात्मक माहौल रहेगा। जीवन साथी से वाद-विवाद संभावित है। आर्थिक दृष्टि से यह महीना खर्चीला रहेगा किंतु प्रॉपर्टी के कोई पुराने विवाद में सफलता भी मिल सकती है। माह के प्रथम 3 सप्ताह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा किंतु आखिरी सप्ताह में स्वास्थ्य नरम रहेगा। आपके लिए उचित होगा, इस महीने में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने से बचें।

सिंह

कैरियर की दृष्टि से यह महीना सिंह राशि वालों के लिए उत्तम रहेगा। जमीन, भवन निर्माण आदि सिविल कार्यों से जुड़े हुए जातकों को लाभ होगा। सेना, पुलिस एवं जेल प्रशासन व न्यायालय से संबंधित जातकों के लिए भी यह महीना उत्तम रहेगा। सामाजिक मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी, जो जातक स्थान परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए यह समय अनुकूल रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना अनुकूल नहीं रहेगा, जोड़ इत्यादि की समस्या उत्पन्न हो सकती है। वाहन सावधानी से चलाएं। पारिवारिक दृष्टि से सिंह राशि के जातकों के लिए अक्टूबर महीना शुभ रहेगा।

कन्या

कैरियर के लिहाज से कन्या राशि के जातकों के लिए अक्टूबर महीना अनुकूल रहेगा। जो जातक नवीन कार्य योजना बना रहे हैं, उनकी योजना सफल रहेगी। शासन की ओर से सहयोग मिलेगा एवं आसानी से कार्य होंगे। यद्यपि परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, लेकिन सफलता मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से कन्या राशि के लिए यह महीना मिले-जुले असर वाला रहेगा। निवेश करने से बचें या सोच समझ कर करें। अनावश्यक खरीदी करने की प्रबल इच्छा हो जाएगी, इसके प्रति सजग रहें। पारिवारिक दृष्टि से यह महीना वाणी पर संयम रखने के लिए है। परिवार में अनावश्यक विवाद उत्पन्न हो सकते हैं, कृपया सजग रहें। हर बात पर और बिना मांगे सलाह देने से बचें।

तुला

व्यवसाय की दृष्टि से तुला राशि वालों के लिए अक्टूबर महीना अत्यंत अनुकूल है। कार्य में सफलता मिलेगी। जो लोग एक्सपोर्ट-इंपोर्ट के व्यापार में कार्यरत हैं, उन्हें लाभ होगा। मल्टीनेशनल कंपनियों से जुड़े लोग कार्यक्षेत्र में अनुकूलता महसूस करेंगे एवं विदेश में बसे हुए मित्रों व रिश्तेदारों से लाभ होगा। तुला राशि के जातक इस महीने में कैरियर संबंधी निर्णय बड़ी आत्मविश्वास से ले लेंगे। परिवार में कोई धार्मिक अनुष्ठान आयोजित होगा एवं शुभ मांगलिक कार्य होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परिवार में कोई बुजुर्ग सदस्य लंबे समय से बीमार हों तो उनके स्वास्थ्य में तेजी से सुधार आवेगा। पारिवारिक जीवन सामान्य रहेगा।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए अक्टूबर का महीना सुखद रहने की संभावना है। स्वास्थ्य के प्रति आपको सजग रहने की आवश्यकता है। विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता अर्जित कर सकते हैं। परिवार में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा। परिवार का माहौल सुखद रहेगा। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा। आर्थिक रूप से छोटी-मोटी परेशानी आ सकती हैं।

धनु

धनु राशि के जातकों के लिए आर्थिक दृष्टि से अक्टूबर महीना अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए अक्टूबर माह कुछ कष्टदायक रहेगा। मन भ्रमित रहेगा। एकाग्रता का अभाव रहेगा। चोट लगने की संभावना रहेगी। इसके प्रति सजग रहें। जीवनसाथी से पूर्ण सहयोग एवं प्रेम मिलेगा। पारिवारिक दृष्टि से धनु राशि के जातकों के लिए अक्टूबर माह अत्यंत अनुकूल रहेगा। परिवार में सामाजिक माहौल रहेगा, सभी सदस्य में मधुर भाव रहेगा। छोटे भाई-बहन सहयोग करेंगे एवं चारों और प्रसन्नता का माहौल रहेगा।

मकर

मकर राशि के लिए अक्टूबर माह अत्यंत अनुकूल रहने वाला है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। विचारों में जड़ता रहेगी। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। परिवार में सामंजस्य बढ़ेगा, सहकार बढ़ेगा। आर्थिक लाभ होगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से पाचन संस्थान से संबंधित एवं चर्म रोग परेशान करेंगे। माह के मध्य में कार्य क्षेत्र से संबंधित कोई परेशानी उत्पन्न हो सकती है। आर्थिक दृष्टि से यह महीना मिश्रित, वाला रहेगा। आकस्मिक खर्च भी आएंगे एवं लाभ भी होगा।

कुम्भ

कुंभ राशि के जातक चाहे वह व्यापारी हो या नौकरी पेशा दोनों ही के लिए अक्टूबर माह बहुत सुखद रहेगा। व्यापार व्यवसाय में बढ़ोत्तरी की पूर्ण संभावना है एवं नौकरीपेशा लोगों को राजकीय क्षेत्र में एवं प्रमोशन में अनुकूलता रहेगी, जो जातक विदेश से संबंधित कार्य क्षेत्र में है, उन्हें भी सफलता मिलेगी। पारिवारिक पृष्ठभूमि मधुर रहेगी। माह के दूसरे सप्ताह में सर्दी, कफ से संबंधित बीमारियां परेशान कर सकती हैं। डिप्रेशन की स्थिति बन सकती है एवं मन बिना कारण दुखी रह सकता है। अपने आपको सृजनात्मक कार्यों में लगाएं, संगीत सुनें एवं नकारात्मक विचारों से बचें।

मीन

अक्टूबर महीना मीन राशि के जातकों के लिए विशेष सजगता की मांग करता है। आर्थिक नुकसान होने के अवसर आ सकते हैं। परिवार एवं कुटुंब में बिना बात के विवाद उत्पन्न हो सकते हैं। बिना कारण सलाह देने और लेने से बचें। ज्यादा से ज्यादा समय आध्यात्मिक कार्य में व्यतीत करें एवं अपने कार्य क्षेत्र पर सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए अपने कार्य को निष्ठा से करें। कार्य क्षेत्र की दृष्टि से जो जातक नौकरी पेशा हैं, उनके स्थानांतरण की संभावनाएं भी है, जो लंबे समय से ट्रांसफर के लिए प्रयासरत हैं, उन्हें सफलता मिल सकती है। इस महीने पैतृक संपत्ति संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। इस माह में नेत्र से संबंधित एवं पाचन संस्थान से संबंधित कष्ट आने के योग बनते हैं, खानपान में ध्यान रखें।

पूजन सामग्री भी शास्त्रोक्त पूजन का ही अंग है। शास्त्रोक्त पूजन तभी पूर्ण होती है, जब उसमें शास्त्र सम्मत समस्त पूजन सामग्री का उपयोग हो। इसके लिये ''ऋषिमुनि क्रिएशन्स'' लेकर आया है, आपके लिये दीपावली पूजन सामग्री का लक्ष्मी पूजन किट जिसमें आप पाऐंगे सभी 44 पूजन सामग्री एक साथ एक ही बाक्स में।

शास्त्रोक्त पूजन के लिये जरूरी है

शास्त्र सम्मत पूजन सामग्री

दीपावली पर्व पर माता महालक्ष्मी का शास्त्रोक्त पूजन करना हम सभी की कामना होती है। इसके लिये सबसे बड़ी चुनौती होती है, तो पूजन सामग्री की उपलब्धता। इसके लिए ''ऋषिमुनि क्रिएशन्स'' ने पूजन सामग्रियों का एक विशेष बॉक्स तैयार किया है। इसमें लक्ष्मी पूजा की शास्त्रोक्त 44 वस्तुएँ हैं और पूजन विधि तथा आरती पुस्तिका भी है। सारी सामग्री हानिकारक रंगों से परे हर्बल, गुणवत्तायुक्त तथा प्रामाणिक है। कुल मिलाकर यह एक ऐसा बॉक्स है जिसे लेकर आप सपरिवार बस पूजन के लिए बैठ जाइए। विश्वास कीजिए आपको किसी अन्य चीज के लिए उठने की जरूरत न पड़ेगी। इसमें वह सब कुछ संकलितत किया गया है जिसकी आपको आवश्यकता है। आप चाहें तो अत्यंत आकर्षक पैकिंग वाले इस बॉक्स को अपने मित्रों को भी दीपावली उपहार के रूप में दे सकते हैं। ताकि आपके साथ वे भी शास्त्रोक्त दीपावली पर्व मना सकें।

अत्यंत कठिनाई से संग्रहित शुद्ध पूजन सामग्री

ऋषिमुनि प्रकाशन के सहायक प्रकल्प ''ऋषिमुनि किएशन्स'' ने पाठकों की सुविधा के लिए अत्यंत परिश्रम से दीपावली पूजन के लिये शुद्ध पूजन सामग्री संग्रहीत कर दीपावली पूजन किट तैयार किया है। इससे बनेगी आपकी दीपावली पूर्ण शास्त्रोक्त इस किट में समाहित हैं, सभी 44 सामग्री। इन में शामिल हैं अबीर, बादाम, बताशा, सुपारी, झाड़ू, कपूर, इलायची, घी, मिट्टी दीपक, लोंग, धना, रूई, रूई बत्ती, धानी, धूपबत्ती, खारक, गंगाजल, गोमती चक्र, गुलाल, मेहन्दी, शहद, अगरबत्ती, गुड़, जनेऊ, कुमकुम, लक्ष्मीजी पाना, कमल गट्टे, मजीठ लकड़ी, माचिस, पीली सरसों, पेन, इत्र, पूजन पुस्तिका, रंगोली, लाल कपड़ा, अक्षत-चावल, कलावा-मोली, अष्ठगंध चंदन, शुभ-लाभ स्टीकर, मिश्री, हल्दी, खड़ी हल्दी, सिन्दूर, सफेद कपड़ा आदि।

कैसे करें प्राप्त

''ऋषिमुनि किएशन्स'' द्वारा तैयार ''ऋषिमुनि लक्ष्मी पूजन किट'' कार्यालय 90, विद्या नगर उज्जैन 456 010 पर आर्डर कर घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिये फोन नं. 96372 87416 या ईमेल rishimunicreations@gmail.com पर सम्पर्क कर (माहेश्वरी टाईम्स के सदस्यों के लिये विशेष छूट के साथ) मात्र रु. 450 शुल्क के भुगतान द्वारा पूजन किट प्राप्त किया जा सकता है। इसके साथ ही वेबसाईट rishimunicreations.com अथवा ऑनलाईन सेलिंग प्लेटफॉर्म आदि पर भी आर्डर किया जा सकता है। यह सामग्री प्रत्यक्ष कार्यालय से भी प्राप्त की जा सकती है।

शास्त्रोक्त सामग्री से करें लक्ष्मी पूजन

सुरक्षित दीपावली पूजन के लिए

ऋषिमुनि

लक्ष्मी पूजन सामग्री

- 44 शास्त्रोक्त पूजन सामग्री
- पूजन विधि पुस्तिका के साथ
- प्रामाणिक एवं गुणवत्ता युक्त
- आकर्षक गिफ्ट पेकिंग

RISHI MUNI
LAXMI PUJAN KIT
amazon meesho

Rishi Muni Creations
90, Vidya Nagar Ujjain, MP
rishimunicreations@gmail.com
96372 87416

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7,000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 22 Hospitals: 1 million patients treated

Over 75 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant.

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccine in Maharashtra. Over 4,000 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4,500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date - 02 October, 2022

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/smtmagazine/
https://srimaheshwaritimes.com